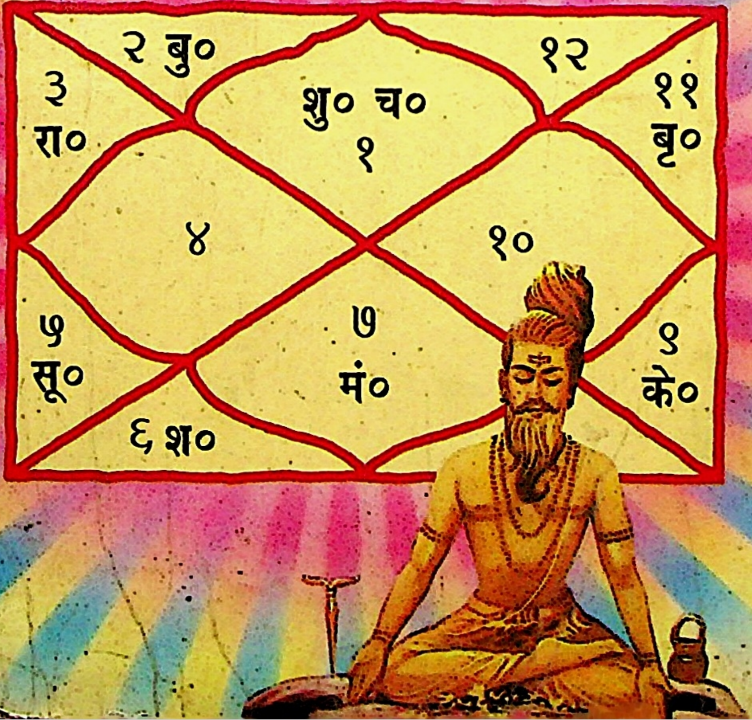
39
अनुपम सीरीज

पं. राम शास्त्री

ज्योतिष शास्त्रानुसार

द्वादश भाव सिन्धु

जन्मकुण्डली के बारह भावों में धनभाव और सुखभाव का विस्तृत वर्णन





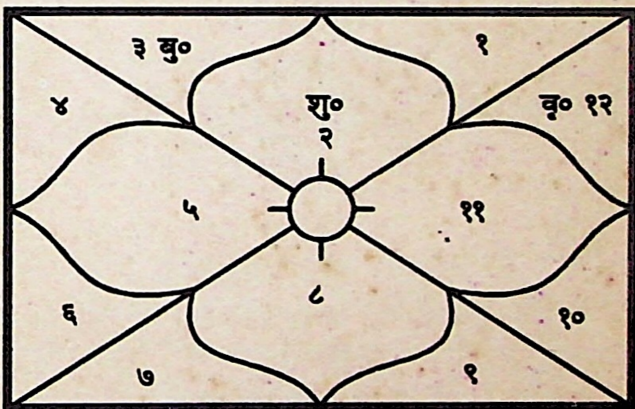
ज्योतिष शास्त्रानुसार

द्वादश भाव सिन्धु

संस्कृत प्राचीन ग्रंथ की मौलिकता से परिपूर्ण हिन्दी व्याख्या

(धनभाव-सुखभाव पर पूर्ण विचार)

पं. राम शास्त्री



जन्म कुंडली के बारहों भावों में
धनभाव और सुखभाव का विस्तृत वर्णन

प्रकाशक :

धीरज पॉकेट बुक्स

पुस्तक : द्वादश भाव सिन्धु

लेखक : पं. राम शास्त्री

प्रकाशक :
धीरज पॉकेट बुक्स
355, गांधी मार्ग, मेरठ - 250 002
दूरभाष—(0121) 521009

लेज़र टाइप सेटिंग :
सरस्वती कम्प्यूटर्स, दूरभाष—(0121) 767159

मुद्रक :
संजय प्रिन्टर्स, मानसरोवर पार्क, दिल्ली।

DWADASH BHAV SINDHU
By Pt. Ram Shastri

मूल्य : चालीस रुपये मात्र (Rs. 40/-)

दो शब्द...

मानव सदा से ही स्वभावतः जिज्ञासु प्राणी रहा है। वह अपने भविष्य के प्रति उत्सुक रहते हुए ग्रह, नक्षत्र, ब्रह्माण्ड, तारा, पिण्ड आदि का ज्ञान व अनुसंधान करने की दिशा में प्रयासरत् रहा हैं। प्राचीन विद्वानों व आचार्यों ने इस विषय में उसकी जिज्ञासा को शान्त करने का जो प्रयास किया उन सबका व्यावहारिक नामकरण 'ज्योतिष शास्त्र' किया गया।

"ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम् ज्योति शास्त्रम्" अर्थात् सूर्यादि ग्रहों की गति व प्रभाव आदि के क्रम बृहद अध्ययन को ज्योतिष शास्त्र की संज्ञा प्रदान की गयी है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की संख्या नौ है—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु व केंतु। राहु व केतु को धारण ग्रह माना गया है; पर वे मानव जीवन के शुभाशुभ फल विचार पर अन्य ग्रहों जैसी प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं।

उपर्युक्त नौं ग्रहों में से चन्द्र, राहु व केतु को छोड़कर सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। मनुष्य का जन्म किसी न किसी ग्रह की प्रबल दशा में होता है। उस ग्रह के प्रभाव से मनुष्य आयु पर्यन्त प्रभावित होता रहता है। इसी ग्रह दशा के अनुसार जातक की जन्मकुंडली बनायी जाती है। जन्म कुंडली में बारह खाने होते हैं। ये ही जन्मकुंडली के द्वादश भाव कहलाते हैं। किस भाव का जीवन के किस अवस्था में कैसा प्रभाव रहता है, यही द्वादश भाव विचार या जन्मकुंडली विचार कहलाता है।

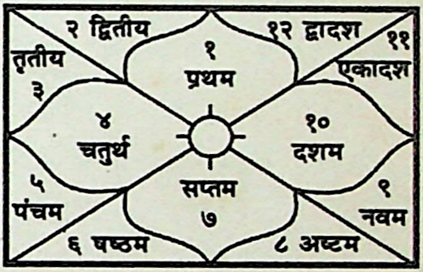
प्रस्तुत ग्रंथ "ज्योतिष शास्त्रानुसार द्वादश भाव सिन्धु" में बारहों राशियों के फलविचार के साथ कब, कौन-सा समय किसके लिए धन लाभ और सुखकारी होगा इस बात की विस्तृत् जानकारी जन्मकुंडली नक्शों के अनुसार दी गयी है। ग्रंथ की प्राचीन मौलिकता को यथावत् रखते हुए संस्कृत श्लोकों तथा जन्म कुंडली नक्शों को ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया गया है तथा उसकी हिन्दी व्याख्या सरल, सहज और बोधगम्य रूप में इस तरह प्रस्तुत की गयी है कि ज्योतिष शास्त्र में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति सरलता से समझता चला जाएगा। अपनी राशि के अनुसार इस पुस्तक में अपने भाग्य और भविष्य को जानकर हर व्यक्ति लाभान्वित होगा, ऐसा विश्वास है।

—सम्पादक

विषय-सूची

१ जन्मकुंडली क्या है ?

जन्मकुंडली आकाश का नक्शा है। जिस समय किसी बालक का जन्म होता है उस समय आकाश पर जो-जो ग्रह जहां-जहां जिस स्थिति में होते हैं, उन्हें हम यहां बैठे-बैठे एक कागज पर लिखकर नक्शा-सा तैयार कर लेते हैं, उसे ही जन्म कुंडली कहते हैं।



जन्म कुंडली के १२ खाने होते हैं। जहां एक लिखा है यह कुंडली का प्रथम खाना है। खाना कहिए, भाव कहिए, घर कहिए या स्थान कहिए एक ही बात हैं।

प्रथम भाव को ही लग्न कहते हैं। वे जन्म कुंडली अर्थात् आकाश का नक्शा बनाना होता है तो उसे इसी प्रथम लग्न से ही शुरू किया जाता है। लग्न पूर्वीय क्षितिज है। सप्तम भाव पश्चिम क्षितिज है। दशम भाव हमारे ऊपर, हमारे सिर पर जो आकाश का भाग है—वह है। चतुर्थ भाग हमारे बिल्कुल नीचे—पृथ्वी के नीचे जो आकाश का भाग है—वह है।

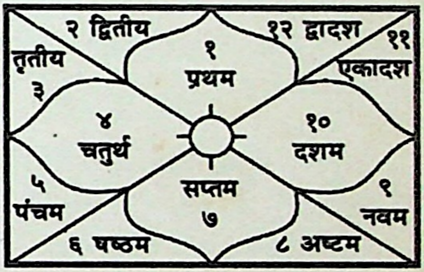
ऊपर जो अंक दिए गए हैं, वे कुंडली का स्थान प्रदर्शित करते हैं। यथा-जहां एक का अंक है वह प्रथम भाव, जहां तीन का अंक है वह तृतीय भाव, जहां पांच का अंक है वह पंचम भाव, जहां आठ का अंक है वह अष्टम भाव और बारह का अंक है वह द्वादश भाव है।

प्रत्येक कुंडली में इसी क्रमानुसार बारह ही भाव होते हैं। परंतु हर कुंडली में अंक ऊपर दी गई कुंडली के अनुसार नहीं होते। भावों की कुल संख्या बारह है और राशियां भी बारह ही हैं।

जब जन्मकुंडली बनाई जाती है तो उसका आरम्भ प्रथम भाव लग्न से ही होता है और भावों का क्रम प्रत्येक कुंडली का ऊपर दी गयी कुंडली के अनुसार ही होता है, परंतु अंक राशि के अनुसार ही भरे जाते हैं। जैसे किसी का जन्म यदि मेष लग्न में हुआ हो तो मेष प्रथम राशि होने से लग्न में एक का अंक लिखा

१ जन्मकुंडली क्या है ?

जन्मकुंडली आकाश का नक्शा है। जिस समय किसी बालक का जन्म होता है उस समय आकाश पर जो-जो ग्रह जहां-जहां जिस स्थिति में होते हैं, उन्हें हम यहां बैठे-बैठे एक कागज पर लिखकर नक्शा-सा तैयार कर लेते हैं, उसे ही जन्म कुंडली कहते हैं।



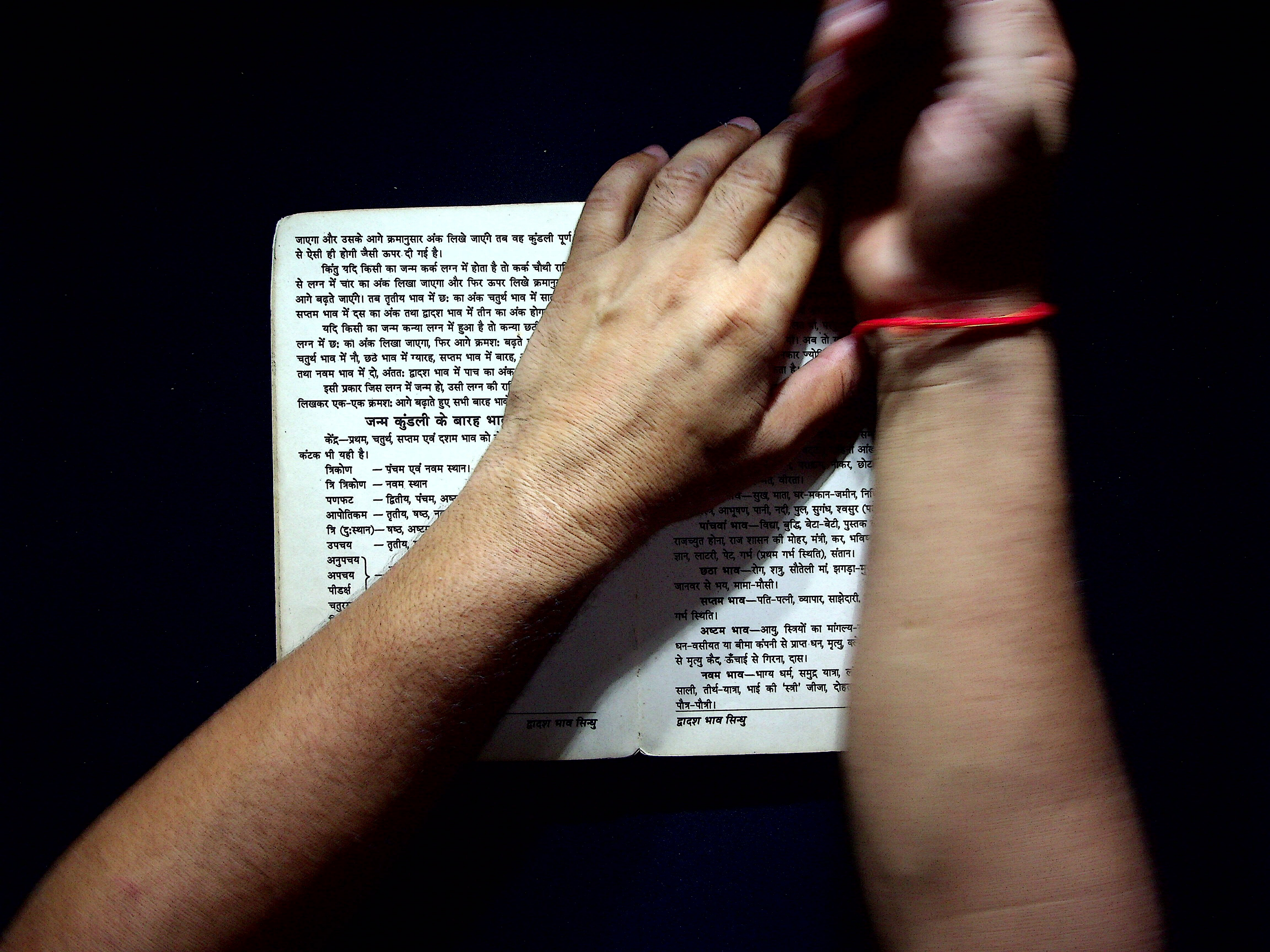
जन्म कुंडली के १२ खाने होते हैं। जहां एक लिखा है यह कुंडली का प्रथम खाना है। खाना कहिए, भाव कहिए, घर कहिए या स्थान कहिए एक ही बात हैं।

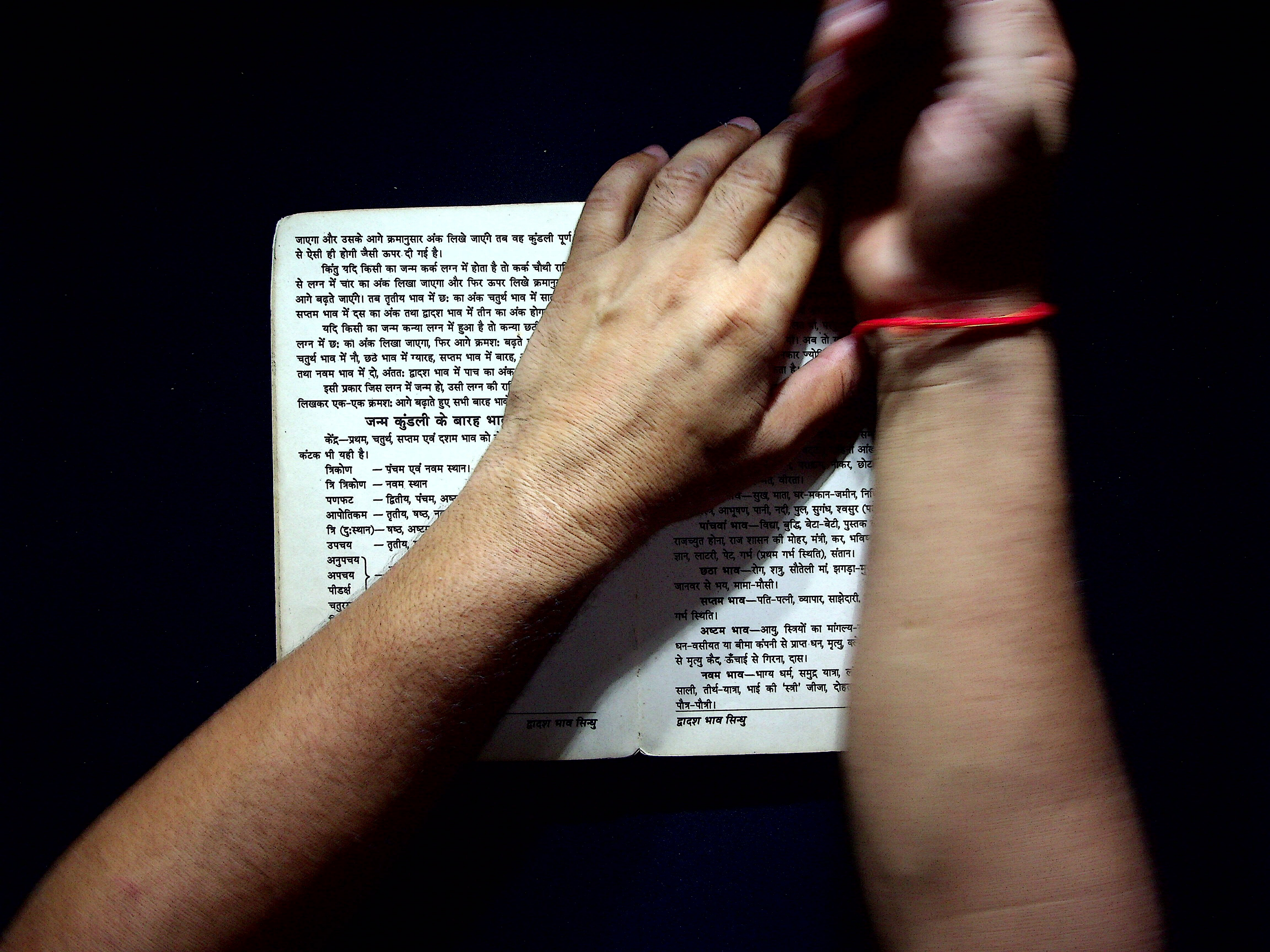
प्रथम भाव को ही लग्न कहते हैं। वे जन्म कुंडली अर्थात् आकाश का नक्शा बनाना होता है तो उसे इसी प्रथम लग्न से ही शुरू किया जाता है। लग्न पूर्वीय क्षितिज है। सप्तम भाव पश्चिम क्षितिज है। दशम भाव हमारे ऊपर, हमारे सिर पर जो आकाश का भाग है—वह है। चतुर्थ भाग हमारे बिल्कुल नीचे—पृथ्वी के नीचे जो आकाश का भाग है—वह है।

ऊपर जो अंक दिए गए हैं, वे कुंडली का स्थान प्रदर्शित करते हैं। यथा-जहां एक का अंक है वह प्रथम भाव, जहां तीन का अंक है वह तृतीय भाव, जहां पांच का अंक है वह पंचम भाव, जहां आठ का अंक है वह अष्टम भाव और बारह का अंक है वह द्वादश भाव है।

प्रत्येक कुंडली में इसी क्रमानुसार बारह ही भाव होते हैं। परंतु हर कुंडली में अंक ऊपर दी गई कुंडली के अनुसार नहीं होते। भावों की कुल संख्या बारह है और राशियां भी बारह ही हैं।

जब जन्मकुंडली बनाई जाती है तो उसका आरम्भ प्रथम भाव लग्न से ही होता है और भावों का क्रम प्रत्येक कुंडली का ऊपर दी गयी कुंडली के अनुसार ही होता है, परंतु अंक राशि के अनुसार ही भरे जाते हैं। जैसे किसी का जन्म यदि मेष लग्न में हुआ हो तो मेष प्रथम राशि होने से लग्न में एक का अंक लिखा


जाएगा और उसके आगे क्रमानुसार अंक लिखे जाएंगे तब वह कुंडली पूर्ण
से ऐसी ही होगी जैसी ऊपर दी गई है।
किंतु यदि किसी का जन्म कर्क लग्न में होता है तो कर्क चौथी
से लग्न में चार का अंक लिखा जाएगा और फिर ऊपर लिखे
आगे बढ़ते जाएंगे। तब तृतीय भाव में छः का अंक चतुर्थ भाव में
सप्तम भाव में दस का अंक तथा द्वादश भाव में तीन का अंक
यदि किसी का जन्म कन्या लग्न में हुआ है तो कन्या
लग्न में छः का अंक लिखा जाएगा, फिर आगे क्रमशः बढ़ते
चतुर्थ भाव में नौ, छठे भाव में ग्यारह, सप्तम भाव में बारह,
तथा नवम भाव में दो, अंततः द्वादश भाव में पाच का
इसी प्रकार जिस लग्न में जन्म हो, उसी लग्न की
लिखकर एक-एक क्रमशः आगे बढ़ाते हुए सभी बारह
जन्म कुंडली के बारह
केंद्र—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव को
कंटक भी यही है।
त्रिकोण — पंचम एवं नवम स्थान।
त्रि त्रिकोण — नवम स्थान
पणफट — द्वितीय, पंचम,
आपोतिकम — तृतीय, षष्ठ,
त्रि (दुःस्थान)— षष्ठ,
उपचय — तृतीय,
अनुपचय
अपचय
पीडर्क्ष
द्वादश भाव सिन्धु
—सुख, माता, घर-मकान-जमीन,
आभूषण, पानी, नदी, पुल, सुगंध, श्वसुर
पांचवां भाव—विद्या, बुद्धि, बेटा-बेटी, पुस्तक
राजच्युत होना, राज शासन की मोहर, मंत्री, कर,
ज्ञान, लाटरी, पेट, गर्भ (प्रथम गर्भ स्थिति), संतान।
छठा भाव—रोग, शत्रु, सौतेली मां,
जानवर से भय, मामा-मौसी।
सप्तम भाव—पति-पत्नी, व्यापार, साझेदारी,
गर्भ स्थिति।
अष्टम भाव—आयु, स्त्रियों का मांगल्य-
धन-वसीयत या बीमा कंपनी से प्राप्त धन, मृत्यु,
से मृत्यु कैद, ऊँचाई से गिरना, दास।
नवम भाव—भाग्य धर्म, समुद्र यात्रा,
साली, तीर्थ-यात्रा, भाई की 'स्त्री' जीजा,
पौत्र-पौत्री।
द्वादश भाव सिन्धु


जाएगा और उसके आगे क्रमानुसार अंक लिखे जाएंगे तब वह कुंडली
से ऐसी ही होगी जैसी ऊपर दी गई है।
किंतु यदि किसी का जन्म कर्क लग्न में होता है तो कर्क चौथी
से लग्न में चार का अंक लिखा जाएगा और फिर ऊपर लिखे
आगे बढ़ते जाएंगे। तब तृतीय भाव में छः का अंक चतुर्थ भाव में
सप्तम भाव में दस का अंक तथा द्वादश भाव में तीन का अंक
यदि किसी का जन्म कन्या लग्न में हुआ है तो कन्या
लग्न में छः का अंक लिखा जाएगा, फिर आगे क्रमशः
चतुर्थ भाव में नौ, छठे भाव में ग्यारह, सप्तम भाव में बारह,
तथा नवम भाव में दो, अंततः द्वादश भाव में पाच का
इसी प्रकार जिस लग्न में जन्म हो, उसी लग्न की
लिखकर एक-एक क्रमशः आगे बढ़ाते हुए सभी बारह
जन्म कुंडली के बारह
केंद्र—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव को
कंटक भी यही है।
त्रिकोण — पंचम एवं नवम स्थान।
त्रि त्रिकोण — नवम स्थान
पणफट — द्वितीय, पंचम,
आपोतिकम — तृतीय, षष्ठ,
त्रि (दुःस्थान)— षष्ठ,
उपचय — तृतीय,
अनुपचय
अपचय
पीडर्क्ष
द्वादश भाव सिन्धु
भाव—सुख, माता, घर-मकान-जमीन,
आभूषण, पानी, नदी, पुल, सुगंध, श्वसुर
पांचवां भाव—विद्या, बुद्धि, बेटा-बेटी, पुस्तक
राजच्युत होना, राज शासन की मोहर, मंत्री, कर,
ज्ञान, लाटरी, पेट, गर्भ (प्रथम गर्भ स्थिति), संतान।
छठा भाव—रोग, शत्रु, सौतेली मां,
जानवर से भय, मामा-मौसी।
सप्तम भाव—पति-पत्नी, व्यापार, साझेदारी,
गर्भ स्थिति।
अष्टम भाव—आयु, स्त्रियों का मांगल्य-
धन-वसीयत या बीमा कंपनी से प्राप्त धन, मृत्यु,
से मृत्यु कैद, ऊँचाई से गिरना, दास।
नवम भाव—भाग्य धर्म, समुद्र यात्रा,
साली, तीर्थ-यात्रा, भाई की 'स्त्री' जीजा,
पौत्र-पौत्री।
द्वादश भाव सिन्धु

जाएगा और उसके आगे क्रमानुसार

से ऐसी ही होगी जैसी ऊपर दी

किंतु यदि किसी का

से लग्न में चार का अंक

आगे बढ़ते जाएंगे। तब

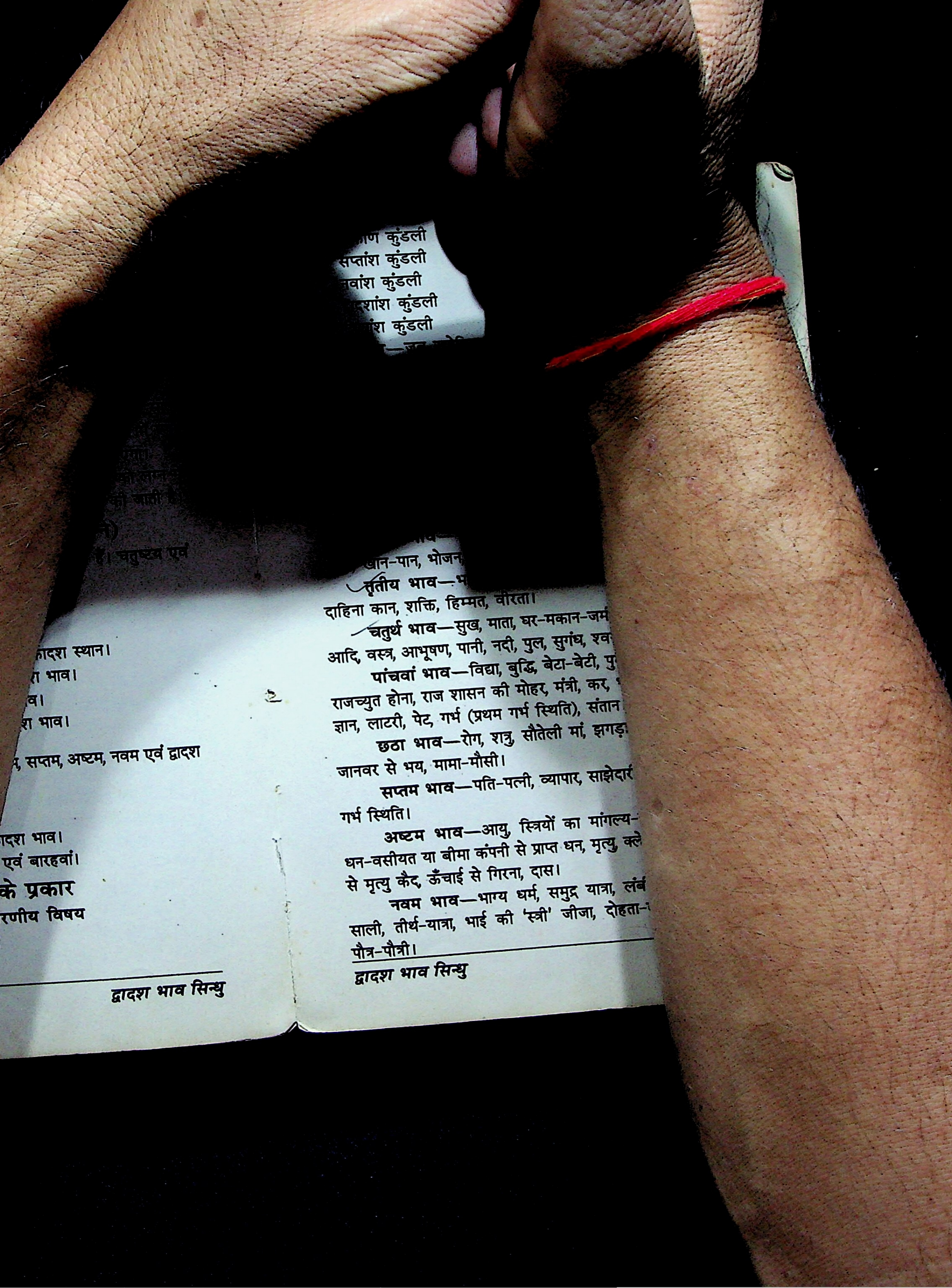
सप्तम भाव में दस का

यदि किसी

लग्न में छः का

चतुर्थ भाव में

तथा नवम


सप्तांश कुंडली
दाहिना कान, शक्ति, हिम्मत, वीरता।
चतुर्थ भाव—सुख, माता, घर-मकान-जमी
आदि, वस्त्र, आभूषण, पानी, नदी, पुल, सुगंध,
पांचवां भाव—विद्या, बुद्धि, बेटा-बेटी,
राजच्युत होना, राज शासन की मोहर, मंत्री, कर,
ज्ञान, लाटरी, पेट, गर्भ (प्रथम गर्भ स्थिति), संतान
छठा भाव—रोग, शत्रु, सौतेली मां, झगड़
जानवर से भय, मामा-मौसी।
सप्तम भाव—पति-पत्नी, व्यापार, साझेदार
गर्भ स्थिति।
अष्टम भाव—आयु, स्त्रियों का मांगल्य
धन-वसीयत या बीमा कंपनी से प्राप्त धन, मृत्यु,
से मृत्यु कैद, ऊँचाई से गिरना, दास।
नवम भाव—भाग्य धर्म, समुद्र यात्रा,
साली, तीर्थ-यात्रा, भाई की 'स्त्री' जीजा, दोहता
पौत्र-पौत्री।
द्वादश भाव सिन्धु
द्वादश स्थान।
सप्तम, अष्टम, नवम एवं द्वादश
एवं बारहवां।
के प्रकार
द्वादश भाव सिन्धु

जाएगा और उसके आगे क्रमानुसार अंक लिखे जाएंगे तब वह कुंडली पूर्ण रूप से ऐसी ही होगी जैसी ऊपर दी गई है।

किंतु यदि किसी का जन्म कर्क लग्न में होता है तो कर्क चौथी राशि होने से लग्न में चार का अंक लिखा जाएगा और फिर ऊपर लिखे क्रमानुसार अंक आगे बढ़ते जाएंगे। तब तृतीय भाव में छः का अंक चतुर्थ भाव में सात का अंक सप्तम भाव में दस का अंक तथा द्वादश भाव में तीन का अंक होगा।

यदि किसी का जन्म कन्या लग्न में हुआ है तो कन्या छठी राशि होने से लग्न में छः का अंक लिखा जाएगा, फिर आगे क्रमशः बढ़ते हुए भाव में सात, चतुर्थ भाव में नौ, छठे भाव में ग्यारह, सप्तम भाव में बारह, अष्टम भाव में एक तथा नवम भाव में दो, अंततः द्वादश भाव में पाच का अंक लिखा जाएगा।

इसी प्रकार जिस लग्न में जन्म हो, उसी लग्न की राशि के अंक को लग्न में लिखकर एक-एक क्रमशः आगे बढ़ाते हुए सभी बारह भावों की पूर्ति की जाती है।

जन्म कुंडली के बारह भाव (खाने)

केंद्र—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव को केंद्र कहते हैं। चतुष्टय एवं कंटक भी यही है।

त्रिकोण — पंचम एवं नवम स्थान।
त्रि त्रिकोण — नवम स्थान
पणफट — द्वितीय, पंचम, अष्टम एवं एकादश स्थान।
आपोतिकम — तृतीय, षष्ठ, नवम् तथा द्वादश भाव।
त्रि (दुःस्थान)— षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव।
उपचय — तृतीय, षष्ठ, दशम, एकादश भाव।
अनुपचय, अपचय, पीडर्क्ष — प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम एवं द्वादश भाव
चतुरस्त्र — चतुर्थ एवं अष्टम।
त्रिष्टाय — तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव।
लीन — तृतीय, षष्ठ, आठवां एवं बारहवां।

जन्म कुंडली के प्रकार

कुंडली के प्रकार	विचारणीय विषय
लग्न कुंडली	शरीर
होरा कुंडली	

द्रेष्काण कुंडली	भ्रातृ-सुख
सप्तांश कुंडली	संतान
नवांश कुंडली	स्त्री-सुख
द्वादशांश कुंडली	माता-पिता के सुख
त्रिशांश कुंडली	कामनाएं (विशेष कष्ट की बातें)

विशेष—जब ज्योतिष शास्त्रों का निर्माण हुआ तब उक्त विभिन्न प्रकार से विचार करने की परिपाटी प्रचलित थी, परंतु आजकल व्यावहारिक रूप में यह परिपाटी प्रायः समाप्त ही हो गयी। अब तो यह पुस्तकों में सुरक्षित सुंदर वाक्य मात्र रह गए हैं। यदि कोई जानकार ज्योतिषी चाहे, तो आज की आवश्यकता के अनुसार इससे लाभ उठा सकता है।

किस भाव से क्या देखें?

प्रथम भाव—शरीर, रत्न, शरीर का रंग, ज्ञान, स्वभाव, सुख-दुःख बलाबल, स्वास्थ्य, दादी, नाना।

द्वितीय भाव—धन-धान्य, सेना-चांदी आदि सम्पत्ति, कुटुंब, वाणी, विद्या, चेहरा, खान-पान, भोजन, पत्रिका (चिट्ठी) दाहिनी आंख, रत्न।

तृतीय भाव—भाई-बहन, पराक्रम, नौकर, छोटा भाई, छोटी-मोटी यात्रा, दाहिना कान, शक्ति, हिम्मत, वीरता।

चतुर्थ भाव—सुख, माता, घर-मकान-जमीन, निधि, खेती बाड़ी, कार-मोटर आदि, वस्त्र, आभूषण, पानी, नदी, पुल, सुगंध, श्वसुर (पत्नी का पिता), गायें, भैंसे।

पांचवां भाव—विद्या, बुद्धि, बेटा-बेटी, पुस्तक लेखनादि, आत्मा, मंत्र-यंत्र, राजच्युत होना, राज शासन की मोहर, मंत्री, कर, भविष्य, ज्ञान, श्रुति, स्मृति शास्त्र ज्ञान, लाटरी, पेट, गर्भ (प्रथम गर्भ स्थिति), संतान।

छठा भाव—रोग, शत्रु, सौतेली मां, झगड़ा-मुकद्मा, ऋण, पानी से भय, जानवर से भय, मामा-मौसी।

सप्तम भाव—पति-पत्नी, व्यापार, साझेदारी. यात्रा. लाटरी, दूसरी बार की गर्भ स्थिति।

अष्टम भाव—आयु, स्त्रियों का मांगल्य-सौभाग्य, मरे हुए व्यक्ति का धन-वसीयत या बीमा कंपनी से प्राप्त धन, मृत्यु, क्लेश, छिद्र, अपवाद, विघ्न, जहर से मृत्यु कैद, ऊँचाई से गिरना, दास।

नवम भाव—भाग्य धर्म, समुद्र यात्रा, लंबी यात्रा, गुरु-आचार्य, साला-साली, तीर्थ-यात्रा, भाई की 'स्त्री' जीजा, दोहता-दोहती (लड़की की संतान), पौत्र-पौत्री।

दशम भाव—पिता, राज्य, हुकूमत, पद प्राप्ति, पदोन्नति, कर्म, व्यापार, ansfer in Service & Promotion आज्ञा प्रवास दूसरे स्थान में रहना, पूर्व जन्म, ास (पति/पत्नी की मां)।

ग्यारहवां भाव—आय, लाभ, वृद्धि प्राप्ति, प्रशंसा, बड़ा भाई, पुत्र-वधू, बायां ान, बायां बाजू, व्यापार से लाभ-हानि, दामाद, पुत्र-वधू (बेटे की पत्नी)।

बारहवां भाव—व्यय, खर्च, दुःख, खुफिया, पुलिस, दरिद्रता, पाप, नुकसान, ात्रुता, कैद, शयन सुख, वाम नेत्र, पैर, गुप्त शत्रु, निंदक।

केंद्रेश-त्रिकोणेश योग फल

(१) लग्नेश-चतुर्थेश संबंध से — सुखी जीवन
(२) लग्नेश-पंचमेश संबंध से — विद्वान-बुद्धिमान
(३) पंचमेश-दशमेश संबंध से — राजकार्यों में कुशल
(४) चतुर्थेश-पंचमेश संबंध से — बुद्धि के प्रयोग से सुखी
(५) पंचमेश-सप्तमेश संबंध से — बुद्धिमती पत्नी से सद्गृहस्थ
(६) चतुर्थेश-नवमेश संबंध से — भाग्योदय से सुखी
(७) सप्तमेश-नवमेश संबंध से — भाग्यशाली पत्नी की प्राप्ति से सद्गृहस्था
(८) लग्नेश-नवमेश संबंध से — भाग्यवान से सद्गृहस्थ
(९) दशमेश-लग्नेश संबंध से — शरीर सुख-राज सुख
(१०) नवमेश-दशमेश संबंध से — भाग्य सुख एवं राज्य सुख

बारह भावों के कारक ग्रह

प्रथम भाव—सूर्य
द्वितीय भाव—गुरु
तृतीय भाव—मंगल
चतुर्थ भाव—चंद्र एवं बुध
पंचम भाव—गुरु
षष्ठ भाव—शनि-मंगल
सप्तम भाव—शुक्र
अष्टम भाव—शनि
नवम भाव—सूर्य एवं गुरु
दशम भाव—सूर्य, बुध, गुरु (मतांतर से शनि)
एकादश भाव—गुरु
द्वादश भाव—शनि

वस्तुओं के स्थिर कारक

सूर्य—राजत्व, रक्त वस्त्र, राज्य, माणिक्य, वन पर्वत, क्षेत्र, पिता आदि।

चंद्र—माता, मन, पुष्टि गंध, रस, ईख, गेहूँ, क्षार, पृथ्वी, चांदी, ब्राह्मण, कपास।

मंगल—सत्व (हिम्मत), मकान, भूमि, व्रण, अग्नि, रोग, चोरी, शील, भाई, राज्य, शत्रु।

बुध—ज्योतिष, गणित, डॉक्टरी, बीमा एजेंसी, बुद्धि, शिल्प विद्या, हास्य, नृत्य, लक्ष्मी, गाना, लेखन।

गुरु—अपना कार्य, यज्ञ इत्यादि कर्म, धर्म, ब्राह्मण, देवता, पुत्र, मित्र, सोना पालकी।

शुक्र—पत्नी, अन्य स्त्री, काम शास्त्र, सुकुमारता, सुंदरता, यौवन, ऐश्वर्य, आभूषण, काव्य, नृत्यगान, सिनेमा, सिनेमा टी॰वी॰।

शनि—दुःख, शूल (Pain) रोग, मृत्यु, यात्रा, आयु, सर्व राज्य, दास-दासी, नीलम, भैंस, घोड़ा, ऊंट, हाथी, शिल्प, बाल (केश), तेल, शस्त्र, वैराग्य।

राहु—प्रयाण (यात्रा या मृत्यु) समय, सर्प, रात्रि, सट्टा, खोई हुई वस्तु छिपा धन।

केतु—व्रण, चर्म रोग, अति शूल, दुःख, मूर्ख।

कौन ग्रह किस का अधिष्ठाता?

सूर्य—आत्मा का एवं पित्त का

चंद्र—मन का एवं वात कफ का

मंगल—सत्व (हिम्मत का) एवं पित्त का

बुध—पापी (वाक् शक्ति का) एवं वात-पित्त, कफ का

गुरु—ज्ञान का, सुख का एवं कफ का

शुक्र—काम का एवं वात तथा कफ का

शनि—दुःख का एवं वायु का

ग्रहों के अधिकार क्षेत्र

सूर्य—हड्डी-शिर प्रदेश

चंद्र—रक्त-मुख के आस पास

मंगल—मज्जा-मुख के आसपास

बुध—त्वचा-नाभि के निकट स्थल पर

गुरु—चर्बी-नासा नाक के मध्य

शुक्र—वीर्य-नेत्रों तथा पैर पर

शनि—स्नायु-पेट पर

राहु-केतु—पेट पर

ग्रहों का प्रभाव दिखाने का विशेष समय

सूर्य—२२ से २४ वर्ष	चंद्र—२४ से २५ वर्ष
मंगल—२८ से ३२ वर्ष	बुध—३२ से ३२ वर्ष
गुरु—१६-२२-४०वें वर्ष	शुक्र—२५ से २८ वर्ष
शनि—३६ से ३२ वर्ष	राहु—४२ से ४८ वर्ष

केतु—४८ से ५४ वर्ष की आयु में अपना विशेष प्रभाव दिखाते हैं।

ग्रहों से परिवारजनों का विचार

माता का—दिन में जन्म हो तो शुक्र से, रात्रि में जन्म हो तो चंद्र से।

पिता का—दिन में जन्म हो तो सूर्य से, रात्रि में जन्म हो तो शनि से।

बड़े भाई का—गुरु से, छोटे भाई का मंगल से।

पति/पत्नी—शुक्र से, संतान का गुरु से तथा गोद हुए बेटे का बुध से विचार करना चाहिए।

ग्रहों की संज्ञा तथा शुभाशुभ

सूर्य-मंगल-गु	पुरुष ग्रह हैं
चंद्र एवं शुक्र	स्त्री ग्रह हैं
बुध	पुरुष-नपुंसक
शनि	स्त्री-नपुंसक

परंतु जब इन्हें केवल दो भागों में विभक्त करते हैं, तब

सूर्य-मंगल-गुरु	पुरुष ग्रह
चंद्र-बुध-शुक्र-शनि	स्त्री ग्रह

जब पीड़ा कारक ग्रह की दशा होती है, तब उसके विशेष अधिकार वाले अंग में पीड़ा की संभावना रहती है।

शुभत्व-पापत्व

बुध-गुरु-शुक्र	शुभ ग्रह हैं।
सूर्य	क्रूर है।
मंगल-शनि-राहु-केतु	पाप ग्रह हैं।
चंद्रमा	क्षीण हो तो पाप (अशुभ), बली हो तो शुभ।

चंद बल शुदि एक से दस तक बचपन-क्रमशः शुभ। शुदि दस से बदि पांच तक जवानी-शुभ। बदि पांच से अमावस तक बुढ़ापा-क्षीण।

इस प्रारम्भिक जानकारी के बाद आइए द्वादश भाव सिन्धु पर पूरी तरह विचार करें।

२ धनभावः (धन भाव)

अथ धनभावविचारः।। (धनभाव का विचार)

तत्रधनभवनात्किं किं चिन्तनीयम्।।

वित्तं नेत्रं मुखं विद्या वाक्कुटुम्बाशनानि च।।
द्वितीयस्थानजन्यानि क्रमाज्जयोतिर्विदोविदुः।। १।।

धनभाव योग से सम्बन्धित चिंतन

व्याख्या—धनभाव में क्या-क्या भाव विचारणीय है। इसका उल्लेख करते हैं—धन, नयन अर्थात्, आंख, मुख, विद्या, वचन और परिवार तथा खाद्य पदार्थ अर्थात् भोजन से सम्बन्धित पदार्थों को विषय क्रमानुसार दूसरे भाव में विद्वान लोगों द्वारा विचारणीय है।

अथान्यच्चाह ढुण्ढिराजः।।

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्च रत्नादिकोशोऽपि चं संग्रहश्च।।
एतत्समस्तं परिचिंतनीयं धनाऽभिधाने भवने सुधीभिः।। २।।

इसके बाद विद्वान ढुण्ढिराज का यह भी कथन है—

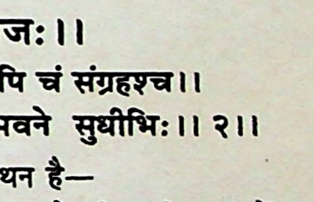
व्याख्या—धनभाव से स्वर्ण का प्रारम्भ समय से ही सभी वस्तुओं का क्रय-विंक्रय करना तथा रत्नों और कोष को एकत्रित करना सभी वस्तुओं का धनभाव योग में विद्वान लोगों के लिए विचारणीय है।

अथ धनवृद्धियोगः उक्तं च सारावल्याम्।।

धनभं स्वामिसत्खेटैर्युग्द्दष्टं धनवृद्धिदम्।।

धनवृद्धि योग के बारे में सार रूप से कथन है

धनवृद्धि योगः।

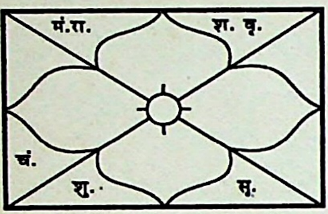


व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव स्थित अपने स्वामी शुभग्रह से युक्त होने वाले हैं, तो ऐसे प्राणी को निरंतर धन की प्राप्ति तथा वृद्धि होती रहती है। अर्थात् ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला मनुष्य निरंतर धनलाभ को प्राप्त करता है।

अथ धननाशयोगः।।

क्षीणेन्दुपापयुरादष्टं विना स्वंर्क्षे धनापहम्।।३।।

धन नाश योगः।



धनहानि होने से सम्बन्धित योग

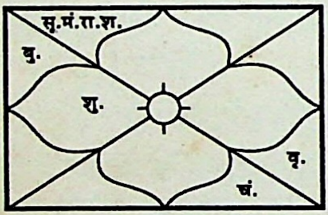
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में चन्द्रमा अपनी कला से क्षीण हो तथा पापग्रहों के सम्पर्क में हो और धन भाव युक्त दिखाई पड़े अपनी अर्थात् स्वयं की राशि से हीन पापग्रह स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को धन की हानि होती रहती है।

अथ धननाशयोगद्वयम्।।

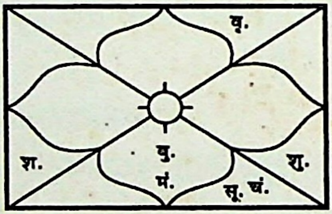
रवितनयभौमरवयः कुटुम्बसंस्था विलोकनाच्चापि।।
कुर्वन्ति धनविनाशं क्षीणेन्दुनिरीक्षिता विशेषेण।।४।।

धनहानि से सम्बन्धित दो योग

धन नाश योगः।



धन नाश योगः।

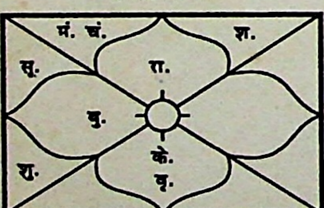


व्याख्या— जिस प्राणी के जन्म के समय में मंगल, शनि और सूर्य ग्रह धनभाव में स्थित हो, तो वह प्राणी धनहानि को प्राप्त करता है और यदि चन्द्रमा कलाहीन हो तथा सूर्य शनि और मंगल ग्रह धनभाव के सम्पर्क में हों, तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाले प्राणी को हानि होती रहती है।

अथ दरिद्रयोगः।।

भौमेन्द्रधनसंस्थौ वाक्दोषदरिद्रताकरौ कथितौ।।

दरिद्रयोगः।



निर्धनता का योग

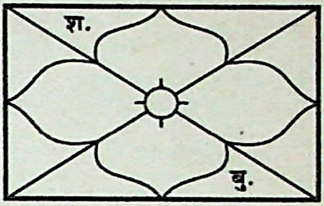
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में मंगल, चन्द्रमा ग्रह धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति वाणी विकार से युक्त होता है अर्थात् तुतलाकर बोलता है तथा धन से रहित दरिद्रता का भागीदार होता है।

अथ महार्थवान् योगः।।

मंदस्तु धनस्थाने महार्थयुक्तं बुधेक्षितः कुरुते।।५।।

बहुत अधिक धनवान होने का योग

महार्थवान् योगः।



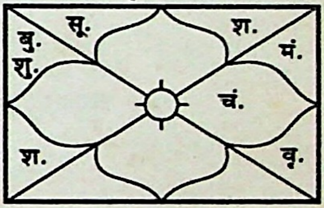
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शनि (ग्रह) धनभाव में स्थित होता है और उसको बुद्ध (ग्रह) देखता हुआ दिखाई देता है और दूसरे ग्रह किसी और स्थान पर बैठे हुए दिखाई देते हैं, तो वह मनुष्य बहुत धनवान और बहु मूल्यवान रत्नों का स्वामी होता है।

अथ धनहीन योगः।

रविरपि विधनं जनयति यमेक्षितोऽन्यैर्न संदृष्टः।।

धनहीन का योग

धनहीन योगः।



व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में सूर्य (ग्रह) धनभाव में बैठा हुआ दिखाई देता है और उसको शनि (ग्रह) देख रहा हो और कोई शुभग्रह देख नहीं रहे हों, तो वह मनुष्य धनवान नहीं होता अर्थात् वह धनहीन होता है।

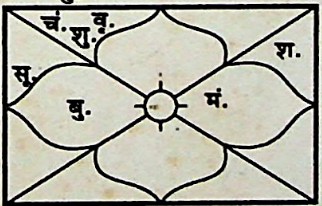
अथ वहुप्रकारेण धनलाभयोगः।।

सौम्याः कुटुम्बराशौ वहुप्रकारं धनं दद्यात्।।६।।

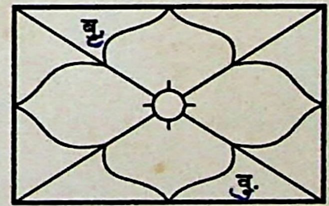
बहुत प्रकार से धन प्राप्ति का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शुभ ग्रह धनभाव में बैठे हुए दिखाई देते हैं तो उस मनुष्य को अनेक प्रकारों से धन की प्राप्ति होती है।

वहुप्रकारधनलाभ योगः।



निर्धन योगः।



अथ निर्धनयोगः।।

बुधदृष्टस्त्रिदशगुरुः कुटुम्बराशौ च निस्वतां कुरुते।।

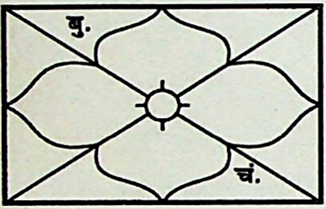
निर्धनता का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में बृहस्पति (ग्रह) बैठा हुआ हो और बुद्ध फौरन दिखाई पड़े तो उस मनुष्य को वे निर्धन बना देते हैं अर्थात् वह मनुष्य निर्धन होता है।

अथ सर्वधनहन्तायोगः।।

सोमतनयोऽपि शशिना निरीक्षितो हन्ति सर्वधनम्।।७।।

सर्वधनहन्ता योगः।



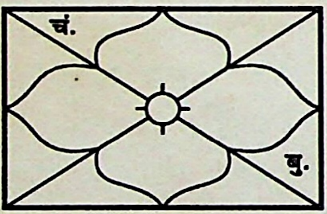
समस्त धन के नाश का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में बुद्ध धनभाव में स्थित हो तथा चन्द्रमा (ग्रह) उसके सम्पर्क में हो या बुद्ध ग्रह को देखता हुआ दिखाई दे, तो इस योग से उस मनुष्य को विभिन्न तरह से धनहानि होती रहती है।

अथ पूर्वार्जितार्थनाशं अन्यधनस्य निरोधमाह।

चंद्रोपि धनस्थाने क्षीणोबुधवीक्षितः सदा कुरुते।।
पूर्वार्जितार्थनाशं निरोधमपि चान्यवित्तस्य।।८।।

धननिरोध योगः।



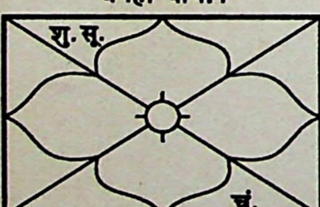
पूर्व काल में अर्जित (कमाये) हुए धन का नाश तथा अन्य धन का लाभ मिलने में बाधा

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय क्षीण चन्द्रमा (ग्रह) धनभाव में स्थित हो अथवा धनभाव के सम्पर्क में हो या चन्द्रमा निस्तेज होना दिखाई पड़े उस प्राणी के लिए पहले से कमाये हुए धन का नाश होता है और भविष्य में धन संयोग में बाधा डालता है।

अथ धनहा योगः।।

शुक्रः कुटुंबराशौ सूर्य्येन्दुनिरीक्षितो न धनदाता।।

धनहा योगः।



धन हानि योग

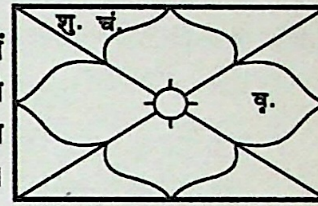
व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में शुक्र (ग्रह) धनभाव में स्थित हो और सूर्य, चन्द्रमा ये दोनों ग्रह भी इनके सम्पर्क में हों अथवा युक्त हो तो वह प्राणी धनवान् नहीं होता, अपितु, दरिद्र होता है। इन ग्रहों का योग उस प्राणी को दरिद्रता से युक्त

बनाने में सहयोग देता है।

अथ धनदायोगः।।

सौम्यगृहे शुभदृष्टः सएव धनदः सदा ज्ञेयः।।९।।

धनदा योगः।



धन प्रदान करने वाला योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शुभ ग्रहों की राशि में धनभाव में शुक्रग्रह स्थित हो और शुभग्रह उसके सम्पर्क में हो, तो उन ग्रहों का योग उस मनुष्य को सदैव धनलाभ कराते रहते हैं।

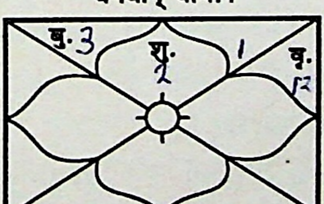
अथ धनवान् योगचतुष्टयम्।।

विक्तादयोराशयः पतियुता वित्ताधिको जायते।
लाभस्थौ धनलाभपौ निजसुहृत्तुंगादिकौ चेत्तया।।
तद्वल्लाभधनाधिपौ तनुगतावन्योन्यमिष्टग्रहौ।
लग्नेशे धनलाभराशिपयुते लग्ने बहुद्रव्यवान्।।१०।।

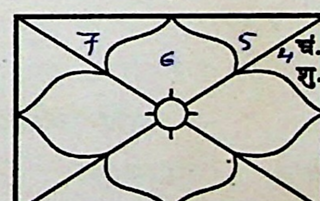
धनवान् होने के चार योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की वेला में, पहला, दूसरा तथा ११ वां भाव अपने स्वामी से युक्त हो, तो वह व्यक्ति बड़ा धनी होता है, यह पहला योग है। अथवा दूसरे तथा ग्यारहवें भाव के स्वामी दोनों ग्यारहवें भाव में अपनी राशि में या मित्र की राशि में या अपने उच्च में स्थित हो, तो भी ऐसा व्यक्ति अत्यन्त

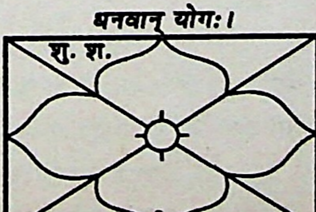
धनवान् योगः।



धनवान् योगः।



धनवान् योगः।



धनवान् योगः।



धनवान होता है, यह दूसरा योग है। इसी प्रकार ११वें तथा दूसरे भाव के स्वामी परस्पर भिन्न होकर लग्न में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक धनी होता है। यह तीसरा योग है। या पहले, दूसरे व ११वें भावों के स्वामी तीनों लग्न में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त धनवान् होता है।

या पहले, दूसरे, ११वें भावों के स्वामी अपने मित्र या अपनी राशि में या अपने उच्च में स्थित हों, तो भी ऐसा व्यक्ति बड़ा धनवान् होता है।

अथ धनप्राप्तकालमाह।।

धनोपयातः प्रथमोऽथ दर्शी ग्रहोद्दितीयोधनपस्तृतीयः।।
तत्पाकभुक्तौ धनलाभमेति क्रमेण तत्कारकवर्गमूलात्।।११।।

धन प्राप्त होने के समय का वर्णन

व्याख्या—धन प्रदान करने वाले समय को कहते हैं अथवा उनका कहने का आशय है कि जो ग्रह मनुष्य के धनभाव में बैठा होता है, वह पहला होता है और धनभाव के सम्पर्क में आने वाला ग्रह दूसरा कारक है और जो ग्रह धनभाव का स्वामी होता है अर्थात् उसका स्वामी होता है वह तीसरा कारक है। इस प्रकार ये तीनों ग्रह अपनी दशांतर दशा में धन कारक ग्रह के समान धन प्राप्त कराने में समर्थ होते है।

अथ निधिमान्योगः।।

धनस्थे यदि लग्नेशे निधिमानबलंसपुते।।

ऐश्वर्य युक्त होने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में लग्नेश शक्ति से युक्त धनभाव में स्थित हो, तो वह प्राणी अथवा मनुष्य (धन का स्वामी) होता है अर्थात् धनवान होता है। ऐसा ग्रह योग होने पर वह मनुष्य धनवान होता है।

अथ निधिनाशयोगः।।

दुर्बले पापसंयुक्ते बंचनादिधनं हरेत्।।१२।।

ऐश्वर्य नाशक योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में लग्नेश शक्ति रहित होकर अशुभ ग्रहों से युक्त होकर धनभाव में स्थित हो या (पाप ग्रहों से धनभाव) में स्थित हो, तो ऐसे प्राणी का धन या तो चोर छीन लेते हैं या चोरी कर लेते हैं अथवा अनेक विपत्तियां उस पर आती हैं, जिससे उसका धन समाप्त हो जाता है। आशय यह है कि ऐसे ग्रहों के योग होने पर उस प्राणी का धन अनुचित तरीके से समाप्त होने लगता है।

अथ धननाशयोगः।।

धनस्थितः पापदृशासतेतः सपत्ननीचार्ककराभितप्तः।।
तत्पाकभुक्तौ धननाशमाहुः सगोचरे दुष्टबलान्वितोवा।।१३।।

धन नष्ट होने का योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में जो ग्रह स्थित हो उसे अन्य पापग्रह अथवा अशुभग्रह भी देख रहे हैं या सम्पर्क में हो और दुश्मन के योग में और अधम राशि में सूर्य की किरणों की तरह धीरे-धीरे अस्त हो, तो वह ग्रह अपनी दशोतर दशा में धन हानि का योग करता है। क्यों न वह ग्रह गोचर के अनुसार दुष्ट बल से युक्त हो।

अथ मरणान्तधनवान् योगः।।

कुटुंबभावे बहुरवेटयुक्ते धनप्रदव्योमचरे बलाढये।।
स्वतुंगमित्रस्वगृहोपगे वा धनं समेत्यामरणांतमाहुः।।१४।।

मृत्यु के समय तक धनवान होने का योग

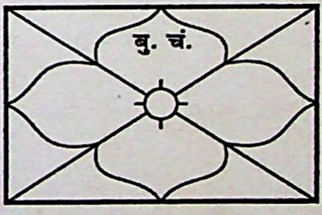
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में विभिन्न ग्रह स्थित हों और धन को प्रदान करने वाला ग्रह शक्ति युक्त हो, स्वयं के उच्च में (सहयोगी पक्ष) में या मित्र क्षेत्र में अथवा स्वयं ही उस स्थान में स्थित हो, तो वह मनुष्य आजीवन धन प्राप्त करता रहता है।

अथ भ्रातृपक्षीयधनलाभयोगः।।

वित्ताधीशे सोदरेशेन युक्ते लग्नस्थे च भ्रातृवित्तं समेति।।

भाई के पक्ष से धनलाभ योग

भ्रातृपक्षीयधनलाभ योगः।



व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी तीसरे भाव के स्वामी से युक्त हो और लग्न में स्थित हो तो वह मनुष्य भाई के पक्ष से धन से युक्त होता है। अर्थात् भाई के धन से धनवान होता है।

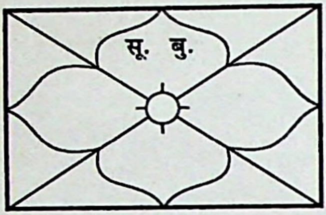
अथ मात्रादिपक्षीयधनलाभयोगः।।

मातृस्थानस्वामिना मातृवित्तं यद्भावेशेनान्वितेतद्धनंस्यात्।।१५।।

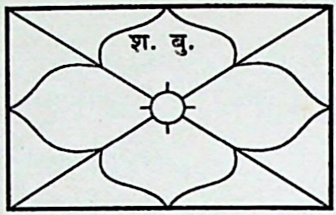
मातृ पक्ष के धन लाभ योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में चतुर्थेश और धनेश दोनों

मातृपक्षीयधनलाभः।।



मातुलक्षीयधनलाभः।।

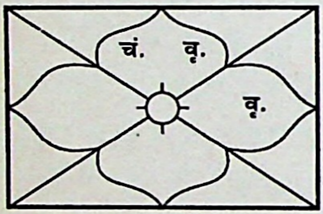


जन्मलग्न में स्थित हों, तो ऐसी स्थिति में वह मनुष्य अपनी माता से संबंधित धन को प्राप्त करता है, ठीक ऐसे ही धनेश जिस भाव के स्वामी से युक्त लग्न में स्थित हो, तो ऐसी स्थिति में भी वह मनुष्य उसी पुरुष के सम्बन्धी धनलाभ को प्राप्त करता है।

अथ यत्नतोधनलाभयोगः।।

वित्ताधीशे लग्नेय लग्नाथे वित्तस्थाने यत्नतोवित्तमेति।।

श्यालपक्षीयधन लाभः।



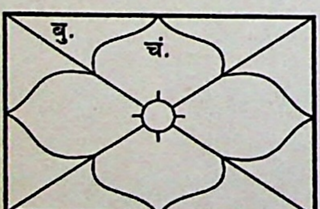
प्रयत्न करने पर धन प्राप्त होने का योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी लग्नभाव में स्थित हो और जन्म लग्न का स्वामी भी धनभाव के साथ स्थित हो, तो ऐसी स्थिति में उस प्राणी को विभिन्न प्रकार से प्रयत्न करने पर धन की प्राप्ति होती रहती है। कहने का आशय है कि इस स्थिति में ग्रहों से युक्त प्राणी धनलाभ प्राप्त करता है।

अथ धनलाभकारणमाह।।

यद्भावस्थौलग्नवित्तेश्वरौ चेत्तन्मूलात्तु द्रव्यलाभं नराणाम्।।१६।।

यत्नतोधनलाभयोगः।।



धन प्राप्ति के कारणों का वर्णन

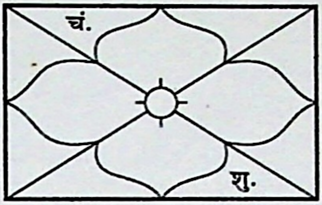
व्याख्या—जिस भाव में लग्न के स्वामी और धनभाव के स्वामी स्थित हो, तो ऐसी स्थिति में ऐसे भाव जनित पदार्थों से युक्त अथवा ऐसे भाव सम्बन्धी मनुष्यों से युक्त ऐसे मनुष्य को सदैव धन प्राप्ति होती रहती है ऐसा कथन है।

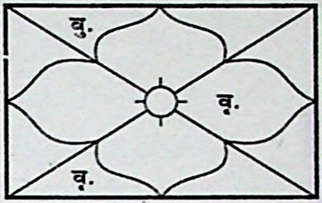
अथ धनलाभयोगद्वयम्।।

चंद्रः कुटुम्बभवने शुक्रेण निरीक्षितः प्रदाच।।
सौम्ये शुभसंदृष्टे स एव धनवान्सदाज्ञेयः।।

धन प्राप्त कराने के दो योग

धनवान् योगः। *धनवान् योगः।*





व्याख्या—प्रथम योगानुसार अथवा पहले योग में जिस मनुष्य के जन्म के समय में चन्द्रमा (ग्रह) धनभाव के योग में स्थित हो और शुक्र उसके सम्पर्क में हो, तो ऐसे मनुष्य को धन प्रदान करता है और यदि दूसरे योग में बुद्ध (ग्रह) उस प्राणी के धनभाव में स्थित हो और वह शुभ ग्रहों के सम्पर्क में हों तो ऐसी स्थिति में वह प्राणी धन प्राप्त करता रहता है।

अथ धनवृद्धिकालयोगः।।

वित्ताधीशोयत्र भावस्थितःस्यात्तस्मिन्कालेद्रव्यवृद्धिर्विशेषात्।।१७।।

तद्भावे च द्रव्यलाभं करोति

धन बढ़ने के समय का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी, किसी और भाव में स्थित हों तो ऐसी स्थिति में उस दशांतरदशा में उसी भाव से उत्पन्न संबन्धी पदार्थों से युक्त मनुष्य के भाग्य में वृद्धि, धन प्राप्ति का विशेष योग होता है और यदि वही धनेश शक्तिहीन और अधम राशिगत क्षीण होकर शत्रुक्षेत्र में स्थित हो तो उन भावजनित पदार्थों से युक्त विशेषता से धन क्षति भी होती है।

अथ सर्वदिग्तोपिधनलाभयोगः।।

वक्रेसौ चेद्दिक्षु सर्वार्थसिद्धिः।।१८।।

सभी दिशाओं से अर्थात् चारो तरफ से धन प्राप्ति योग

व्याख्या—पहले कहे गए योगकारक ग्रह जिस भाव में टेढ़ी गति में स्थित हो तो ऐसी स्थिति में उस मनुष्य को चारों तरफ से या दिशाओं से धन प्राप्ति होती है ऐसे योग से स्थित मनुष्य जिस काम में भी हाथ डालता है, उसे उसमें ही धन लाभ की प्राप्ति होती है।

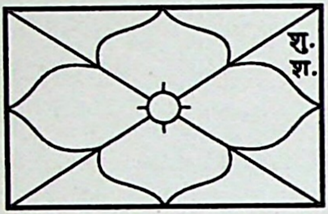
अथ धनख्यातियोगः।।

वित्तेशे लाभसंयुक्ते लाभेशे धनलाभगे।।

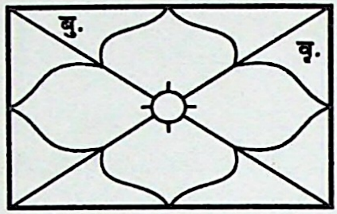
तावुभौ केंद्रगौवापि धनवान् ख्यातिवान् भवेत्।।१९।।

धन प्रसिद्धि योग

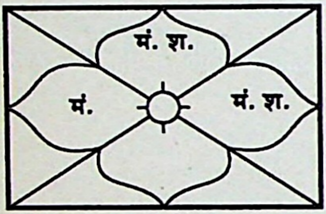
धनख्याति योगः।



धनख्याति योगः।



धनख्याति योगः।।



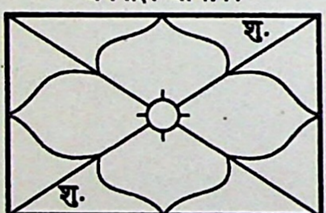
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी ग्यारहवें भाव में स्थित हो, लाभेश दूसरे अथवा एकादश (ग्यारहवें) में स्थित हो। एक योग अथवा द्वितीय और ग्यारहवें भाव के स्वामी १/४/७/१० केन्द्र शक्ति युक्त स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य धन प्राप्ति के साथ प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

अथ धननाशयोगः।।

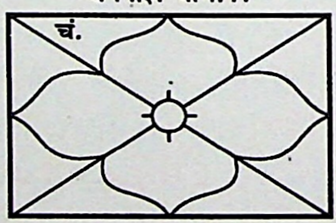
धनेशे व्ययषष्ठस्थे व्ययेशे वित्तगेऽथवा।।
लाभेशे रिपुरंध्रस्थे व्यये वा धननाशनम्।।२०।।

धन नष्ट होने का योग

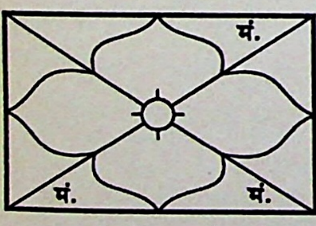
धननाश योगः।।



धननाश योगः।।



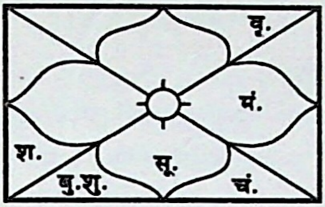
धननाश योगः।।



व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का अधिष्ठाता या स्वामी बारहवें अथवा छटे में स्थित हो एको योगःअथवा बारहवें घर का स्वामी धनभाव में स्थित हो, तो द्वितीय योग। या ग्यारहवें भाग का स्वामी १२ वें में स्थित हो तो ऐसी स्थिति में उक्त योग कारक ग्रह स्वयं दशांतरदशा में मनुष्य का धन नष्ट कराते हैं। अर्थात् इस प्रकार की स्थिति होने पर धनहानि होती है।

व्ययभावगते जीवे वित्तेशे बलवर्जिते।।
शुभैरनीक्षिते लग्ने वित्तनाशं वदेद्बुधः।।२१।।

धननाश योगः।।



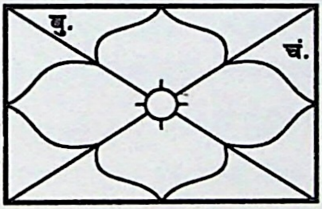
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में खर्चे के भाव में वृहस्पति (ग्रह) स्थित हो और दूसरे भाव का स्वामी निस्तेज हो और साथ में शुभग्रह लग्न को न देखते हुए नजर आए तो ऐसी स्थिति में दशाओं के अंतर की स्थिति में ऐसे मनुष्य को धनहानि होती है।

अथ निध्यादिधनलाभयोगः।।

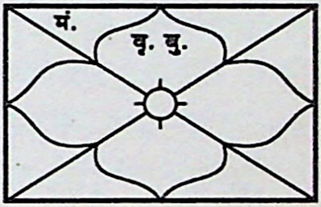
लग्नेशे धनराशिस्थे धनेशे लाभराशिगे।।
लाभेशें वा विलग्नस्थे निध्यादिधनमाप्नुयात्।।२२।।

निधि धन लाभ योग

निधिलाभ योगः।



निधिलाभ योगः।



व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में जन्म-लग्न का स्वामी धनभाव में स्थित हो और धनभाव का स्वामी लाभ स्थान में स्थित हो वह पहला योग है अथवा लाभ स्थान का स्वामी जन्मलग्न में स्थित हो, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त करने वाला मनुष्य कोष के धन की प्राप्ति करता है।

अथ कोटीश्वरयोगः।।

लग्नाय धनभाग्येशाः परमोच्चांशसंयुताः।।
वैशेषिकांशगे वापि तदा कोटीश्वरोभवेत्।।२३।।

करोड़पति धन का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में जन्म लग्न और नवें भाव के स्वामी सबसे ऊंचे भाव में स्थित हो यह पहला योग है। अथवा इस प्रकार से कहे गए योग फल बैशेषिकांशा में स्थित हों, तो ऐसा मनुष्य करोड़ों का स्वामी होता है।

अथ ऋणग्रस्तयोगः।।

दिनेश्वरकरच्छन्ने धनेशे नीचराशिगे।।
पापषष्ठयंशसंयुक्ते ऋणग्रस्तो भवेन्नरः।। २४।।

कर्ज से युक्त होने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी स्वयं की अधम राशि में स्थित हो और सूर्य के समान अस्त हो, तथा पापषष्ठ यंशा में स्थित हो, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त मनुष्य सदैव कर्जदार बना रहता है। अर्थात् ऐसा मनुष्य हमेशा दूसरे का ऋणी रहता है।

अथ निशांधयोगः।।

शुक्रेन्दुनायकाधीशैरेकस्थैस्तु निशाधकः।।

रात्रि में नहीं दिखने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शुक्र चन्द्रमा और सातवें भाव का स्वामी ये तीनों एकत्रित हो जाये तो ऐसी स्थिति में ऐसा मनुष्य रात के समय में न देखने वाला होता है अर्थात् ऐसा मनुष्य रतौंधी रोग से ग्रस्त होता है।

अथ मध्यलोचनयोगः।।

सूर्यशुक्तविलग्नेशैरदृश्यैर्मध्यलोचनः ।। २५।।

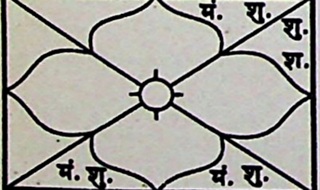
मध्य नेत्र योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में सूर्य, शुक्र और जन्म लग्न का स्वामी दिखाई न देने वाले भाग में स्थित हों, तो ऐसा मनुष्य अर्थात् ऐसे ग्रहों के योग होने पर ऐसा मनुष्य मध्य लोचन नामक रोग से ग्रस्त होता है।

अथ नेत्रहीनयोगः।।

लग्नेश्वरेण सहिते यदि वित्तनाथे। दुःस्थेक्षिनाशनमथा—

नेत्रहीन योगः।



आंखों से विहिन होने का योग

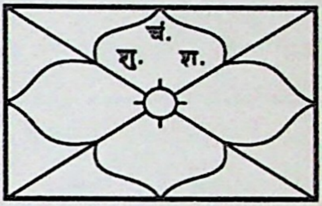
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में जन्म लग्न के स्वामी से युक्त दूसरे भाव का स्वामी छटें, आठवें, बारहवें में स्थित हो, ऐसी स्थिति को प्राप्त करने वाला मनुष्य अंधा होता है, अर्थात् आंखों से हीन होता है।

अथ रात्र्यन्ध योगः।।

स्फुजिदिन्दुयुक्ते।। नेत्रेश्वरे तनुगते यदिनैशिकोन्धः।
स्वोच्चे सुहृद्ग्रहगते न तथा विधं नरः।।२६।।

रात्रि का अन्धा होने का योग

राज्यन्ध योगः।



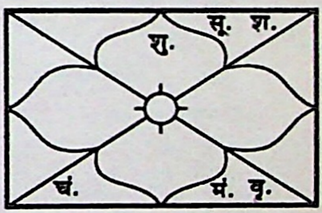
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे घर का स्वामी शुक्र, चन्द्रमा से युक्त जन्मलग्न में स्थित हो, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त हुआ मनुष्य रात में न देखने वाला अर्थात् रतौंधी रोग से युक्त होता है और अगर ऊपर कहे गए योग कारक ग्रह स्वयं के ऊंचे और मित्र के क्षेत्र में स्थित हो तो पहले कहे गए कथनानुसार फल देने वाले नहीं होते अर्थात् रोग रहित होते हैं। दूसरे प्रकार की स्थिति होने पर निरोगता प्रदान करते हैं।

अथ नेत्रहीनयोगः।।

विलग्नवित्तास्ततपः सुतेशा रिपुव्ययच्छिद्रगृहोपयातः।।
विलग्न संबन्धकरः सितश्चेद्विलोचनाभावमुपैतिजातः।।२७।।

नेत्ररहित होने का योग

नेत्रहीन योगः।



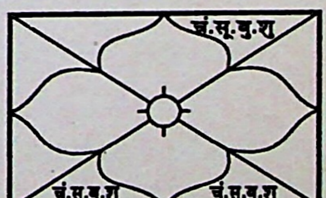
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में जन्म लग्न और दूसरे, सातवे, नवें, पांचवें इन भावों के स्वामी अर्थात् इनके गुरु छठे आठवें और बारहवें भावों में स्थित हो, तो शुक्र लग्न के सम्पर्क में हो तो, वह मनुष्य अंधा होता है।

अथ जात्यन्धयोगः।।

शुक्रार्क लग्नपतिभिः सहिते धनेशे,
जात्यंधको भवति रंध्रव्रणान्त्यगेऽपि।।

जन्म से अंधा होने का योग

जात्यंध योगः।

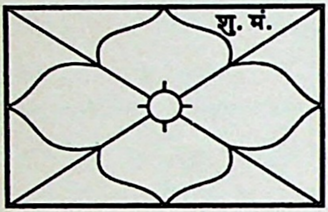


व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में सूर्य, शुक्रलग्ननाथ और धनभाव के स्वामी षष्ट्म, अष्टम और द्वादश स्थान में स्थित हो, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त मनुष्य पैदा होते ही आंखों से हीन होता है अर्थात् जन्म से अंधा होता है।

अथ वामनेत्रहीनयोगः।।

रिष्फे महीसुतगते नयनं हि वामम्।

वामनेत्रहीन योगः।



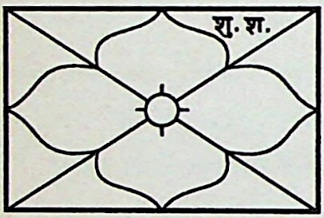
बायीं आंख से हीन होने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में द्वादश भाव में मंगल ग्रह दूसरे भाव के स्वामी से युक्त स्थित हो, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त मनुष्य इस प्रकार से ग्रहों की स्थिति में बांये आंख से अंधा होता है। अर्थात् बांयी आंख खराब होती है।

अथ दक्षिणनेत्रहीनयोगः।।

नाशं तदा व्रजति सूर्यसुते तदन्यत्।।२८।।

दक्षिणनेत्रहीन योगः।



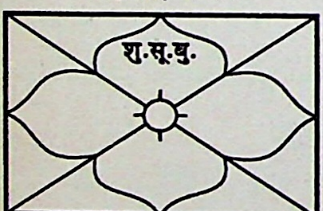
दाहिने आंख से हीन होने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शनि ग्रह से युक्त दूसरे भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो, तो ऐसी ग्रहस्थिति को प्राप्त मनुष्य दाहिने आंख से हीन होता है अर्थात् ऐसे मनुष्य की दाहिनी आंख खराब होती है।

अथ नयनप्रमादयोगः।।

सितः सुतारीशयुतो विलग्ने नरेशकोपान्नयनप्रभादः।।

नेनप्रमाद योगः।



राजा के क्रोध से आंखों का विकार

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शुक्र पांचवें और छठें भाव के स्वामी से युक्त जन्म लग्न में स्थित हो, तो ऐसे मनुष्य को स्वयं की दशांतर दशाओं की स्थिति में राजा के क्रोध से आंखों का विकार होता है। अर्थात् राजा क्रोधित होकर आंखें फोड़ने की सजा देता है।

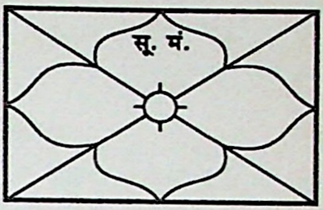
अथ कर्णरोगयोगः।।

धनेशभौमो यदि लग्नयातौ कर्णस्य रोगं कथयंति तज्ज्ञाः।।२९।।

कान के रोग का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी और मंगल ग्रह जन्मलग्न में स्थित हों, तो ऐसे ग्रह स्थिति को प्राप्त मनुष्य को कानों

कर्णरोग योगः।



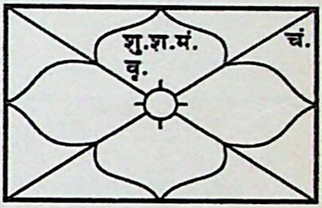
का रोग होता है। इस प्रकार का कथन ज्योतिषियों का है—कि कानों के रोगों से ग्रस्त होने का योग इन अवस्थाओं में होता है।

अथ नेत्ररोगयोगः।।

शन्यारयोगे गुलिकेन युक्ते नेत्रेश्वरे तत्र तु रोगनेत्रः।।

आंखों के रोग ग्रस्त होने का योग

नेत्ररोग योगः।



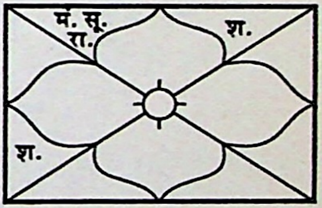
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शनि ग्रह मंगल गुलिक ग्रह से युक्त होकर दूसरे भाव के स्वामी से युक्त स्थित हो, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति को प्राप्त मनुष्य अपनी दशांत दिशा नयन विकारों से युक्त होता है आशय है कि ऐसी स्थिति में मनुष्य आंखों का रोगी होता है।

अथशेषनेत्रयोगः।।

नेत्रे यदा पापवहुत्वयोगे यमेन दृष्टे सति शेषनेत्रः।। ३०।।

एक आंख से रहित अथवा छोटे आंखों से युक्त योग

शेषनेत्र योगः।



व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव में बहुत से पाप ग्रह बैठे हुए दिखाई दें अथवा स्थित हों और शनि ग्रह भी उसके सम्पर्क में हो तो ऐसे ग्रहों की स्थिति को प्राप्त मनुष्य एक आंख से रहित अर्थात् एक आंख के विकार युक्त अथवा छोटी आंख वाला होता है।

अथ शुभदृष्टियोगः।।

नेत्रेश्वरे शुभयुते शुभदृष्टियुतेऽथवा।।
शुभांशकस्थिते वापि शुभदृक्सनरोभवेत्।।३१।।

सुन्दर-आँखों वाला योग (अर्थात् सुन्दर नेत्र युक्त योग)

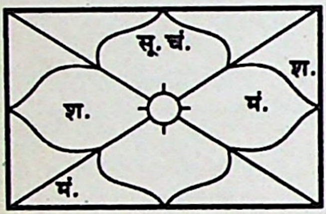
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी शुभग्रहों से युक्त हो पहला योग है और दूसरे योंग में शुभग्रहों के सम्पर्क में हो अथवा

धनभाव का स्वामी शुभग्रहों के शुभ-नवांशा में स्थित हो, तो ऐसी दशा को प्राप्त मनुष्य सुन्दर दृष्टि वाला होता है।

अथ नेत्रनाशयोगः।।

चंद्रार्क संयुक्तहरौ विलग्ने शन्यारदृष्टेऽक्षिविनाशमाहुः।।

नेत्रनाश योगः।



आंखों के नष्ट होने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में चन्द्रमा और सूर्य ग्रह सिंह राशि से युक्त जन्म लग्न में स्थित हे और शनि ग्रह मंगल ग्रह से दिखाई पड़े तो ऐसी ग्रह दशाओं को प्राप्त मनुष्य आंखों की हीनता अर्थात् नेत्रक्षति को प्राप्त होता है।

अथ बुद्बुदाक्षयोगः।।

शुभाऽशुभैर्बुद्बुदलोचनःस्याच्छुभैर्न दोषःसहितेक्षणाभ्याम्।। ३२।।

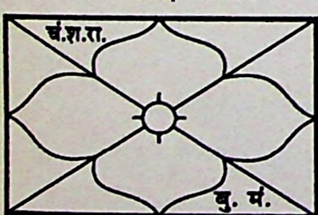
आंख फड़कने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में पहले कहे गए योगानुसार पापग्रह और शुभग्रह दोनों सम्पर्क में हों, तो ऐसी ग्रह दशा को प्राप्त मनुष्य के आंखों में जब विकार (अर्थात् आंखों से पानी गिरना यह रोग) होता है और जिस प्राणी के पहले कहे योग को केवल शुभग्रह ही देखते हुए नजर आए, तो ऐसे मनुष्य आंखों के विकारों से रहित होते हैं।

अथ निमीलिताक्षियोगः।।

निमीलिताक्षस्तु धने सपापे धनेश्वेरशौभनदृष्टियुक्ते।।
लग्नाधिपे पापरवगेन युक्ते बलान्विते कारकरवेचरेन्द्रे।। ३३।।

निमिलिताक्षि योगः।



निमिलित आंखों का योग

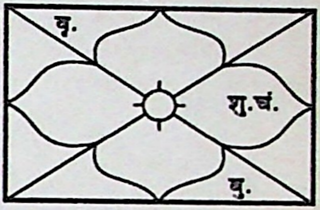
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में पाप ग्रहों से युक्त धनभाव का स्वामी स्थित हो और शुभ ग्रहों जैसे दिखाई पड़े उसके सम्पर्क में हों तथा जन्मलग्न का स्वामी पापग्रहों से युक्त हो और धनभाव का कारक ग्रह शक्तिमान हो तो ऐसी ग्रह दशा को प्राप्त मनुष्य निमीलित आंखों वाला होता है। अर्थात् सूरजमुखी आंखों से युक्त होता है, जो पूरी तरह से नहीं खुलती हैं।

अथ विशालदृष्टियोगः।।

नेत्रे शुभे तद्भवनेश्वरोवा शुभान्विते कारकरवेचरेन्द्रे।।
लग्नेश्वरेणापि युतेऽथ दृष्टे विशालदृष्टिःसनरोविशेषात्।।३४।।

विशाल दृष्टि वाला योग

विशालदृष्टि योगः।



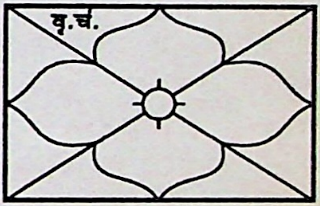
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में शुभग्रह स्थिति हों, अर्थात् धनभाव का स्वामी शुभग्रहों से युक्त हो इसके साथ ही धनभाव का कारक ग्रह शुभग्रहों से युक्त हो और जन्मलग्न के स्वामी भी स्थित हो या उसके सम्पर्क में हो तो ऐसी ग्रह दशा को प्राप्त मनुष्य खासतौर पर या बड़ी-बड़ी आँखों वाला होता है तथा स्पष्ट नजर वाला होता है।

अथ सुमुखयोगः।।

जातोसौ सुमुखः शुभे धनगते तुङ्गादिवर्गान्विते।

सुंदरमुख योग सुन्दर मुख होना

सुमुख योगः।



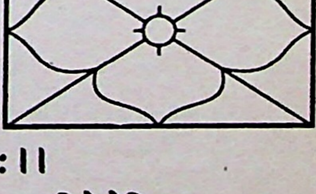
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में उच्च वर्ग में शुभग्रहों का स्थित होना दिखाई दे तो ऐसी ग्रह दशा को प्राप्त मनुष्य सुन्दर मुख वाला होता है। अर्थात् सुन्दर दिखाई देने वाले मुख से युक्त होता है।

अथ वाक्सिद्धियोगः।।

तद्भावे चदि सौम्यवर्गसहिते वाक्सिद्धिमेति ध्रुवम्।।

वाक् सिद्धि का योग

वाक्सिद्धि योगः।



व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में शुभग्रहों की राशिवर्ग में शुभग्रह स्थित हों, तो ऐसे ग्रहदशा को प्राप्त मनुष्य का वचन सत्य होता है अर्थात् ऐसा मनुष्य अपनी वाणी से जो कुछ भी शुभ या अशुभ कहता है वह सत्य सिद्ध होता है।

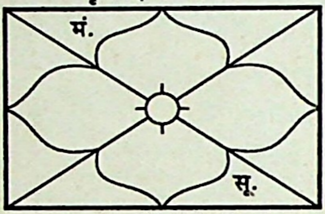
अथ घृतेनदग्धयोगः।।

आज्यस्पर्शमुपैति वित्तगृहगे भौमे दिनेशेक्षिता।

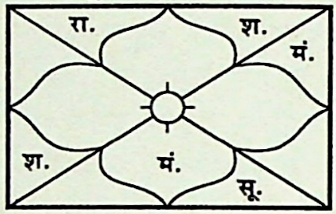
घी से जलने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव में मंगल ग्रह बैठा हो या स्थित हो तो ऐसी दशा को प्राप्त मनुष्य घी से जल सकता है।

घृतेनदग्ध योगः।



कोद्रवान्नभोक्ता योगः।



अथ कोद्रवान्नभोक्ता योगः।।

जातः कोद्रवमुख्यभुक् धनगते राहौ च पापेक्षिते।। ३५।।

कोदो के अन्न को खाने वाला योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव में राहू ग्रह स्थित हो और पापग्रह जैसा दिखाई पड़े तो ऐसी दशा को प्राप्त व्यक्ति कोदों अर्थात् अनाज में कोदों के अन्न को खाने वाला होता है।

अथ घृतनाग्निभययोगः।।

लग्नाऽर्थाऽष्टमस्थेर्के भौमे वाऽन्यतरेक्षिते।।
आज्यस्पर्शोऽग्निभीतिर्वा संभवंति मसूरिका।। ३६।।

घृतनाग्निभय योगः।



घृत स्पर्श से अग्नि के भय का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में जन्मलग्न में अथवा अष्टमदशा में या आठवें भाव में दूसरे स्थान में सूर्य स्थित हो और मंगल ग्रह उसके सम्पर्क में हो तो ऐसी दशा में व्यक्ति को घी के स्पर्श छूने से आग लगने का भय होता है या ऊपर कहे भाव में स्थित सूर्य को शनि देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को मसूरि का रोग होता है।

अथ दुर्मुखयोगः।।

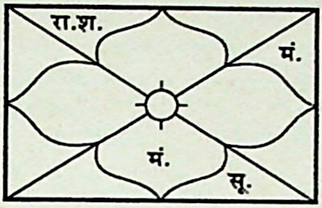
पापैर्युते मुखस्थाने दुर्मुखः पापवीक्षिते।।

सौंदर्यतारहित योग

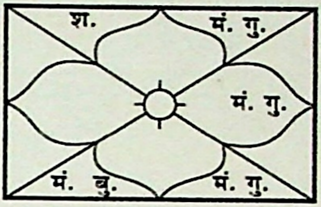
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव में कोई अन्य पापग्रह स्थित हों तथा अन्य पापग्रह सम्पर्क में हो अर्थात् दूसरा कोई पापग्रह उसे देख

रहा हो तो ऐसी ग्रह दशा को प्राप्त मनुष्य कुरुप और अनाकर्षक मुख वाला होता है अर्थात् सौंदर्य रहित होता है।

दुर्मुख योगः।



क्रोधानन योगः।



अथ क्रोधाननयोगः।।

क्रोधाननोनरः पापी तदीशे गुलिकान्विते।।३७।।

क्रोध से युक्त मुखं मुद्रा का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव में पापग्रह स्थित हो और दूसरे भाव का स्वामी पापग्रह हों तथा वह गुलिक ग्रह के सम्पर्क में हो, तो ऐसी ग्रहदशा को प्राप्त करने वाला मनुष्य निरंतर क्रोधित रहता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति के मुख पर हमेशा क्रोध झलकता रहता है।

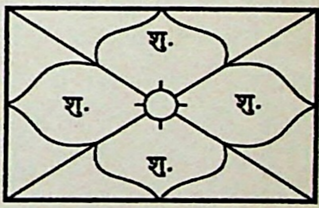
अथ प्रफुल्लमुखयोगः।।

प्रफुल्लवदनः श्रीमान्केन्द्रे मुखपतौ यदा।।
स्वोच्चेस्वमित्रवर्गस्थे सुमुखः शुभवीक्षिते।।३८।।

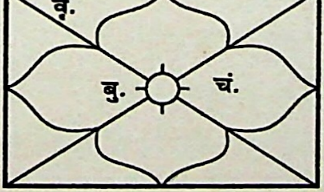
प्रसन्न मुख योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी केन्द्र में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रथम योगानुसार प्रसन्न मुख वाला होता है।

प्रफुल्लमुख योगः।



सुमुख योगः।



सुन्दर मुख योग

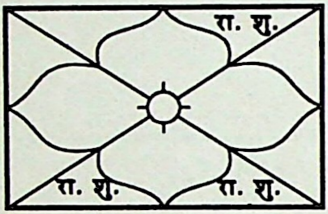
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी केन्द्र में १/४/७/१० स्थित हो और ऊँचे मित्र क्षेत्र अपने क्षेत्र में स्थित हो तथा शुभग्रहों के सम्पर्क में ही ऐसी स्थिति को प्राप्त करने वाला व्यक्ति सुन्दर मुख वाला होता है अर्थात् सुन्दर होता है।

अथ दन्तरोगयोगद्वयम्।।

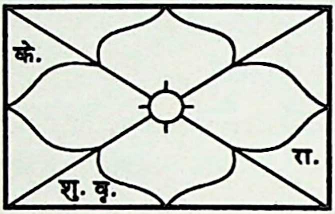
वाग्भावेशे राहुयुक्ते च दुःस्थे राह्वाक्रांतस्थाननाथान्विते च।।
पाके भुक्तौ तस्य दंतामयः स्यात्-

दांतों के रोगों में दो योग

दन्तरोग योगः।



दन्तरोग योगः।



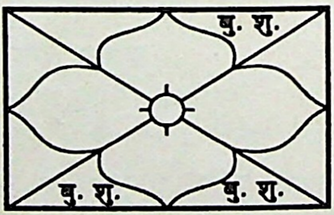
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी राहु से युक्त हो तथा छठें, आठवे और बारहवें भाव में स्थित हो, तब इस प्रकार के योग कारक ग्रहों की दशांतर दशा में और पहले योग में दंत रोग होता है अथवा दूसरे योग में जिस स्थान में राहु बैठा हो उस भाव के स्वामी के संपर्क में स्थित हो तो ऐसे योग कारक ग्रह की दशांतर दशा को प्राप्त प्राणी को दांतों का रोग लगता है।

अथ जिह्वारोगयोगः।।

जिह्वारोगं तारकासूनुभुक्तौ।। ३९।।

जीभ से संबंधित रोग का योग

जिह्वारोग योगः।

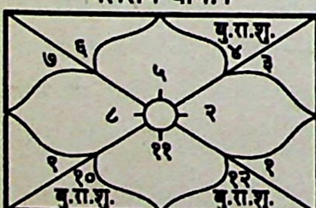


व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी बुद्ध से युक्त छठे, आठवें और बारहवें भाव में स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को बुध ग्रह की दशांतरदशा में जीभ का रोग होता है, अर्थात् ऐसा व्यक्ति जीभ के रोगों से युक्त या पीड़ित होता हैं।

अथ गलरोगयोगः।।

राहुद्वितीयग्रहपौसहजेशयुक्तौजातः समेति गलरोगमतीवकष्टम्।।

गलरोग योगः।



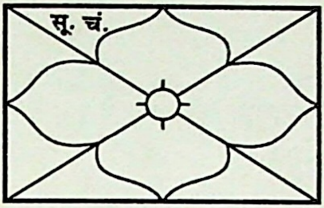
गले से सम्बन्धित रोगों का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे और तीसरे भाव के स्वामी राहु से युक्त छठे, आठवे और बारहवें भाव में स्थित हो, तो व्यक्ति स्वयं की दशांतरदशा में गला रोग से पीड़ित होता है।

अथदरिद्रयोगः।।

दारिद्रदौ रविशशी धनराशियातौ।

दरिद्र योगः।



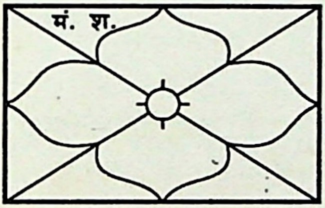
दरिद्रता का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में सूर्य और चन्द्रमा धनभाव में स्थित होते हैं, उस मनुष्य को अपनी दशांतरदशा में दरिद्रतता प्राप्त कराते हैं। अर्थात् ऐसी ग्रह स्थिति को प्राप्त करने वाला व्यक्ति निश्चय ही दरिद्र होता है।

अथ सकलरोगयोगः।।

भौमार्कजौ सकलरोगकरौ भवेताम्।।४०।।

सकलरोग योगः।



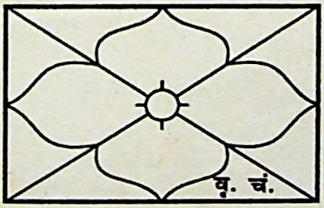
समस्त रोगों का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में मंगल और शनि ग्रह दूसरे भाव में स्थित हों तो ऐसे व्यक्ति को उसके स्वयं के दशांतरदशा के अनुसार अनेक प्रकार के रोग होते हैं, अर्थात् वह अनेक रोगों से ग्रस्त होता है।

अथ मूकयोगः।।

वाग्भावेशे गुरुयुते नाशस्थे मूकतामियात्।।
दोषकृन्न सर्वत्र स्वोच्चस्वर्क्षगतोग्रहः।।४१।।

मूक योगः।



गूंगा होने का योग

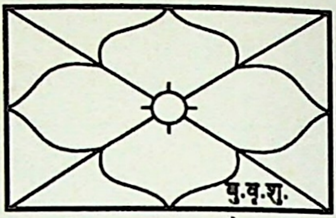
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय मे दूसरे भाव का स्वामी वृहस्पति से युक्त आठवें भाव में स्थित होता है, तो ऐसी योगावस्था को प्राप्त व्यक्ति गूंगा होता हैं। समस्त योगों में उच्च उच्चयोग कारक ग्रह स्वयं के उच्च में अर्थात् अपने क्षेत्र में स्थित हो, तो इन दोषों से मुक्त होते हैं, अर्थात् ऐसी ग्रहों की स्थिति होने पर व्यक्ति गूंगा होने के दोष से मुक्त हो जाता है। अर्थात् गूंगा नहीं होता।

अथ विद्याहीनयोगः।।

वागीशबुधजीवेषु निर्विद्यो नाशगेषु च।।

ज्ञान से रहित होने का योग

विद्याहीन योगः।



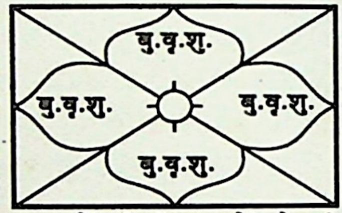
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी बुद्ध और वृहस्पति ग्रह से युक्त आठवें स्थान में स्थित हो, तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला व्यक्ति विद्याधन से वंचित होता है और यदि छठे, बारहवें स्थान में भी दूसरे भाव का स्वामी बुध और वृहस्पति ग्रह से युक्त हो, तो भी विद्याहीन व्यक्ति कहलाता है।

अथ विद्यावान् योगः।।

त्रिकोणकेन्द्रगे वाऽपि स्वर्क्षोच्चे विद्ययान्वितः।।४२।।

विद्या से युक्त होने का योग

विद्यावान् योगः।



व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में नवें, पांचवें और १/४/७/१० केन्द्र स्थानों में दूसरे भाव का स्वामी बुध, वृहस्पति ग्रह के साथ स्थित हो, तो ऐसे ग्रह दशा को प्राप्त करने वाला व्यक्ति विद्यावान कहलाता हैं और साथ ही यदि ये सभी योग कारक ग्रह अपने उच्च अथवा स्वक्षेत्र में स्थित होकर ६/८/१२ में भी स्थित हों, तो भी विद्या अर्जित कराते हैं।

अथ मल्लयुद्धे पराजययोगः।।

द्वितीये दुर्बले सौम्ये द्वंद्वयुद्धहतो भवेत्।।

कुश्ती लड़ने में पराजय का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव में शक्तिहीन शुभग्रह स्थित हों, तो वह व्यक्ति कुश्ती लड़ने अर्थात् द्वंद्वयुद्ध में पराजित होता है।

अथ वातव्याधियोगः।।

जीवार्थेशौ दुर्बलौ वा पवनव्याधिमान्नरः।।४३।।

वातरोग से पीड़ित होने का योग

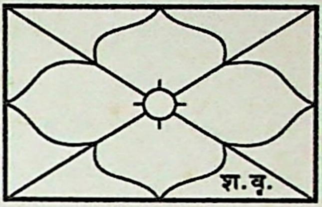
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी और वृहस्पति ग्रह दोनों शक्तिहीन होने की स्थिति में आ जाएं, तो ऐसी दशा को प्राप्त मनुष्य वातरोग से ग्रस्त और दुखी होता है।

अथ मूकयोगः।।

वाक्स्थानपे देवपुरोहितेन युक्ते यदा नाशगते तु मूकः।।

मूक होने का योग

मूक योगः।।



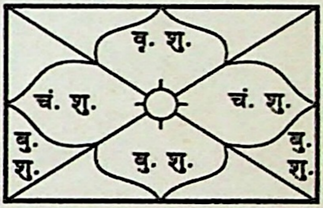
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी वृहस्पति आठवें भाव में स्थित हो, तो ऐसी ग्रहदशा को प्राप्त करने वाला मनुष्य मूक होता है यदि छठे, आठवें और बारहवें में स्थित हो, तो भी मूक ही होता है, अर्थात् ऐसा व्यक्ति निश्चय ही गूंगा होता है।

अथ शुभवाणीयोगः।।

वाक्स्थानपेसौम्ययुते त्रिकोणे केन्द्रस्थिते वा शुभदेच वाग्मी।।४४।।

श्रेष्ठ वाणी बोलने का योग

शुभवाणी योगः।



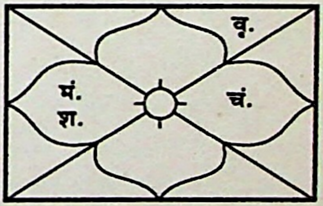
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी शुभ ग्रहों से युक्त नवें, पांचवें अथवा १/४/१०/७ बीच के स्थानों में स्थित हो, तो ऐसी दशा को प्राप्त प्राणी या व्यक्ति श्रेष्ठ वचन बोलने वाला होता है, अर्थात् वह सोच-समझकर उत्तम वचन ही कहता है।

अथ वाणीचतुरयोगः।।

वागीशस्थांशके सौम्ये स्वोच्चे वा शुभवीक्षिते।।
पारावतांशके वापि वाग्मी पटुतरो भवेत्।।४५।।

वचनों में चतुराई होने का योग

वाणीचतुर योगः।

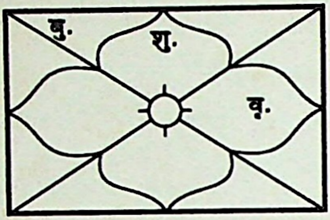


व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी स्वयं के ऊपर के नवें अंश में या शुभग्रह में स्थित हो तथा शुभग्रह के सम्पर्क में हो या पारावतांश में स्थित हो तो भी ऐसा व्यक्ति वाणी बोलने में चतुर होता है अर्थात् वाक्पटु होता है।

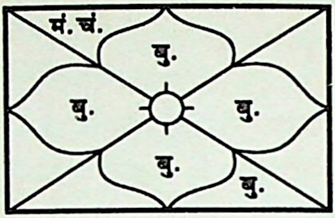
अथ गणितशास्त्रविद्योगः।।

कंटके कोणगे जीवे शुक्रः स्वोच्चंगते यदि।।
धनस्थानेन्दुपुत्रे वा गणितज्ञोभवेन्नर।।४६।।
ज्योतिषज्ञो भवेद्बालो धनस्थे धरणीसुतः।।
ससोमे बुधंसंदृष्टे केन्द्रे वा चन्द्रनन्दने।।४७।।

गणितज्ञ योगः।



ज्योतिषज्ञ योगः।



गणित शास्त्र को जानने वाला योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में कंटक १/४/७/१० कोण ५/९ स्थानों में वृहस्पति ग्रह स्थित हो तथा शुक्र उच्च राशि में स्थित हो तथा धनभाव में बुद्ध ग्रह स्थिति हो, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त मनुष्य गणित शास्त्र का ज्ञाता होता है। यह प्रथम योग में है और यदि धनभाव में मंगल ग्रह स्थित हो, तो चन्द्रमा और बुद्ध भी सम्पर्क या केन्द्र में हो, तो ऐसा व्यक्ति ज्योतिषशास्त्र को जानने वाला होता है।

अथ ज्योतिर्विदाम्वरयोगः।।

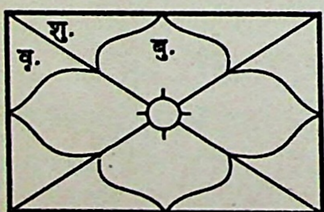
केन्द्रे बुधे द्रव्यपतौ बलाढये भृगुर्धने भ्रातृगते च सौम्ये।।
स्वोच्चे धने दानवपूजितोवा ज्योतिर्विदां श्रेष्ठतरोऽपिजातः।।४८।।

ज्योतिर्विदों में श्रेष्ठता का योग

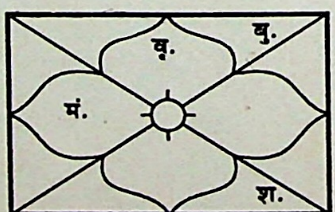
व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में केन्द्र में १/४/७/१० में बुद्ध ग्रह स्थित हो और धनभाव का स्वामी शक्तिमान हो तथा धनभाव में शुक्र ग्रह स्थित हो तृतीय भाव में शुभ ग्रह स्थित हो एको योगः या धनभाव में उच्चराशिगत शुक्र स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति ज्योतिष विद्या को जानने वालों में श्रेष्ठ होता है।

घनेश्वरो बुधः स्वोच्चे देहे देवेन्द्रवंदिते।।
शनावष्टमभावस्थे गणितज्ञोनरोभवेत्।।४९।।

ज्योतिर्विदांवर योगः।



गणितज्ञ योगः।



व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म काल में धनभाव का स्वामी एवं बुध अपने

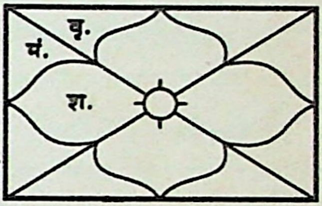
उच्च भाव में स्थित हो तथा जन्म लग्न में वृहस्पति स्थित हो और शनिश्चर आठवें भाव में स्थित हों, तो वह प्राणी गणित शास्त्र का ज्ञाता होता है।

अथ न्यायशास्त्रविद्योगः।।

वाग्भावपे रवौ भौमे गुरुशुक्रनिरीक्षिते।।
पारावतांशके वापि तर्कशास्त्रविदांवरः।।५०।।

न्यायशास्त्र जानने का योग

न्यायशास्त्रविद्योगः।

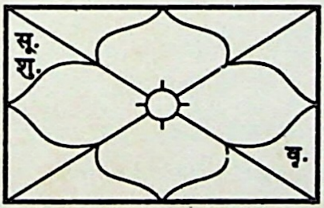


व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी मंगल ग्रह वृहस्पति ग्रह शुक्र ग्रह के सम्पर्क में हो, तो ऐसी स्थिति को प्राप्त करने वाला प्राणी न्यायशास्त्र वेत्ता होता है, अर्थात् न्यायशास्त्र का जानकार होता है। या धनभाव का स्वामी परावतांश में स्थित हो, तो भी ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला प्राणी न्यायशास्त्र को जानने वाला होता है।

अथ शब्दशास्त्रवेत्तायोगः।।

षड्वर्गबलसंयुक्ते गुरौ तद्भवनेश्वरे।।
दिनेशभृगुसंदृष्टे शाब्दिकोयं भवेन्नरः।।५१।।

व्याकरणशास्त्र योगः।



शब्द शास्त्र जानने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में वृहस्पति ग्रह और धनभाव का स्वामी छहों वर्गों से तथा शक्ति से युक्त हों, तो सूर्य, शुक्र ग्रह जैसे दीखते हों, तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला मनुष्य व्याकरण शास्त्र का जानकार होता है।

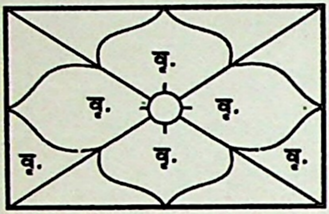
अथ वेदांतवेत्ता योगः।।

सुरेंद्रपूज्यो यदिकेंद्रकोणे वेदांतविज्ञो मनुजोनितांतम्।।
शुक्रेण सौम्येन यदाप्रहृष्टः पारावतांशे रविसूनुयुक्ते।।५२।।

वेदांत को जानने वाला योग अर्थात् वेदांत विद्वान योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में वृहस्पति ग्रह १/४/७/१० त्रिकोण ४/९ स्थानों में स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य सदैव वेदांत तत्व का ज्ञाता होता है यह पहला योग है तथा दूसरा योग होने पर यदि शनिग्रह परावतांश में स्थित

वेदांतवेत्ता योगः।

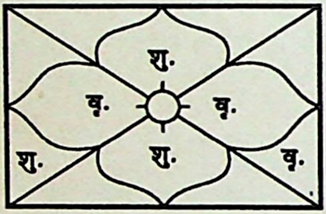


हो उसे बुध व शुक्र देखते हो, तो भी ऐसा व्यक्ति वेदांत का जानकार होता है।

अथ षट्शास्त्रवेत्ता योगः।।

षट्शास्त्रपरिशीलः स्यात्केन्द्रे पूज्यौ सुराऽसुरौ।।
गोपुरांद्यशके सौम्ये वागीशस्थांशपान्वितः।।५३।।

षटशास्त्रवेत्ता योगः।



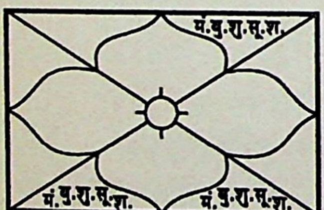
छः शास्त्रों का ज्ञानी होने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में बीच में १/४/७/१० वृहस्पति ग्रह स्थित हो तथा शुक्र भी स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति छहो शास्त्रों का ज्ञाता होता है, अर्थात् छहों शास्त्रों का ज्ञानी होता है और जिस ग्रह के साथ बुद्ध स्थित हो तो दूसरे भाव में स्थित नवां अंशनाथ तथा गोपुर इत्यादि अंशों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति छहों शास्त्रों का जानकार होता है।

अथ भावांकसंख्या तुल्यस्त्रीनाशयोगः।।

जायाकुटुंबगृहया सितपापयुक्तौ,
दुःस्थौ च तत्समकलत्रहरौ भवेताम्।।

स्त्रीणांनाश योगः।



भावांक संख्या के समान स्त्रियों का नाश करने वाला योग

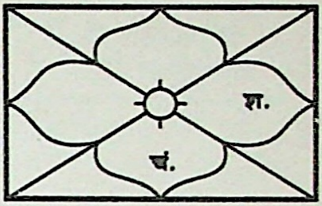
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे और सातवें भाव के स्वामी तथा शुक्र ग्रह पापग्रहों से युक्त छठे, आठवें, बारहवें भाव में स्थित हो ऐसे पापग्रहों के समान संख्या का होना स्त्रियों का नाश करने वाला होता है।

अथैकस्त्रीवान् योगः।।

वित्ताधिपःस्मरपतिः सबलौभवेताम्,
तुंगादिगे यदि समेति कलत्रमेकम्।।५४।।

एक स्त्री से युक्त होने का योग

एकस्त्रीवान् योगः।।

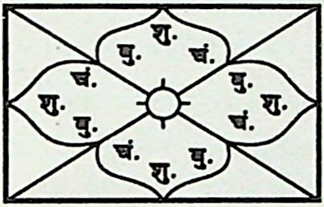


व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे और सातवें भाव के स्वामी शक्ति से युक्त होकर अपने ऊंचे स्वयं के क्षेत्र तथा मूल त्रिकोण में स्थित हो, तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त प्राणी की एक स्त्री होती है।

अथ रौप्यपात्रे भोजनयोगः।।

भुक्तिस्थानपती सितेंदुसहितेलग्नादिकेन्द्रस्थिते रौप्यंपात्रमुपौति

रौप्यपात्रे भोजन योगः।



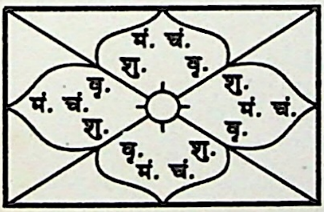
रौप्यपात्र में अर्थात् बर्तन में भोजन करने का योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय दूसरे भाव का स्वामी शुक्र और चन्द्रमा ग्रह से युक्त बीच के स्थानों में १/४/७/१० में स्थित हो, तो ऐसा प्राणी रोप्य पात्र में भोजन करता है।

अथ कांचनपात्रे भोजनयोगः।।

कांचनमयं जीवेन्दुशुक्रान्विते।

कांचनपात्रे भोजन योगः।



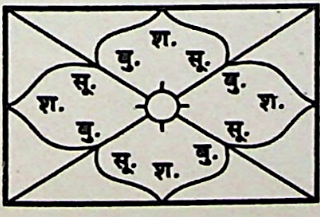
स्वर्णपात्र (बर्तन) में भोजन करने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी चन्द्रमा, वृहस्पति और शुक्र ग्रह से युक्त बीच में १/४/७/१० स्थानों में स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य सोने के बर्तनों में भोजन करता है।

अथ लोहपात्रे भोजनयोगः।।

भुक्तिस्थानपदेहपौ शनियुते लोहादिपात्रं वदेत्।

लोहपात्रे भोजन योगः।



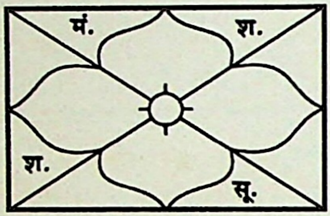
लोहे के बर्तन में भोजन करने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी और लग्न नाथ शनि ग्रह से युक्त बीच के स्थानों में १/४/७/१० वें भाव में स्थित हों, तो इस प्रकार की ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला मनुष्य लोहे के बर्तनों में भोजन करता है।

अथ कदन्नभोक्तायोगः।।

भौमेपापनिरीक्षिते धनगते जातः कदन्नादिभुक।।।।५५।।

कदन्नभोक्ता योगः।



कदान्न भोजन करने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में मंगल ग्रह धनभाव में स्थित हो तथा पापग्रह जैसे दिखाई पड़े तो ऐसी ग्रहस्थिति को प्राप्त करने वाला मनुष्य कदान्न को खाने वाला होता है।

अथ बह्वाशनीयोग:।।

बह्वाशन्नो द्रव्यपतौ सपापे दावाग्निदंडायुधकाल भागे।।
नीचांशके पापनिरीक्षितेच शुभैर्नदोषः सहितेक्षितेवा।।५६।।

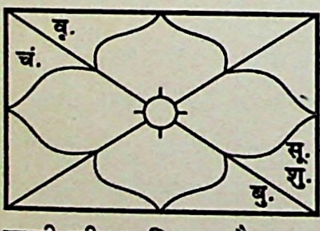
अधिक भोजन करने का योग अर्थात् अधिक अन्न खाने वाला

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त छठवें अंश में दावाग्नि तथा दंडायुध समय भाग में नीचे के नवां अंश में स्थित हो तथा पापग्रह भी उसके सम्पर्क में हो, तो ऐसा योग होने पर वह प्राणी अधिक भोजन करने वाला होता है और यदि इस प्रकार से कहे गए योग कारक ग्रहों को शुभग्रह भी अपने सम्पर्क रखते हों या युक्त हों तो ऐसे व्यक्ति का पहला योगानुसार फल नहीं प्राप्त होता है। अर्थात् अधिक खाने वाला नहीं होता है।

अथ मुखभोक्तायोगः।।

भुक्तिस्थाने शुभयुते तदीशे शुभसंयुते।।
शुभग्रहेण संदृष्टे सुखभुकः सनरोभवेत्।।५७।।

सुखभुक् योगः।



सुखपूर्वक शुभ पदार्थों का भोगने का योग

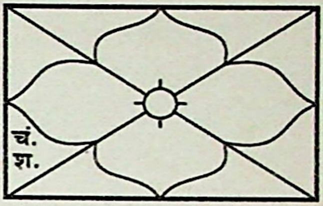
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में शुभग्रह स्थित हों और दूसरे भाव का स्वामी शुभग्रह से युक्त हों तथा शुभग्रह उसके सम्पर्क में भी हों तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त मनुष्य शुभ पदार्थों का सुखपूर्वक भोग करता है अर्थात् शुभ पदार्थों से युक्त सुखी जीवन बिताता है।

अथ परान्नभोक्तयोगः।।

परान्नभुक् तदीशेपि नीचशत्रुसमन्विते।।

दूसरे के अन्न को खाने का योग

परान्नभुक् योगः।



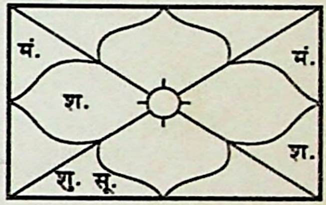
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी अधम राशियों के अंतर्गत शत्रुओं से युक्त स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे के अन्न का सदा सेवन करता है अर्थात् ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला मनुष्य दूसरे व्यक्ति अन्न को निरंतर खाने वाला होता है। उसका दूसरे के अन्न से ही गुजारा होता है।

अथ दूषितान्नभोक्तायोगः।।

पापग्रहेणसंदृष्टस्तद्दूपणपरायणः।।५८।।

अपवित्र अन्न को खाने का योग

दूषितान्न भोक्ता योगः।



व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी अधम राशि में स्थित होता है और पापग्रहों के सम्पर्क में हो, तो इन ग्रहों की स्थिति को प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपवित्र अन्न को खाता है।

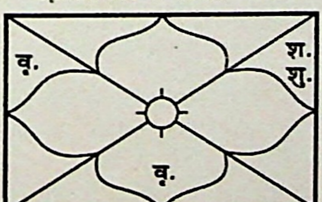
अथ कालोचितान्नभोक्ता योगः।।

कालोचिताशनो भुक्ति लग्ननाथेनवीक्षिते।।

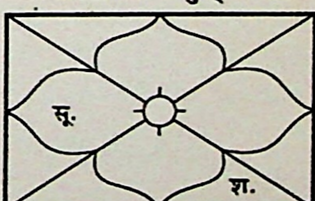
समयानुसार उचित अन्न को खाने का योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी शक्तिमान होकंर श्रेष्ठ राशियों से युक्त हो तथा शुभग्रह भी उनके सम्पर्क में हो तथा लग्नेश से युक्त हो तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला व्यक्ति समयानुसार उचित अनाज खाता है। वह मौसम एवं समय के अनुकूल भोजन करने वाला होता है।

कालोचितान्न भोक्ता योगः।



अकालोचितान्न भुक् योगः।



अथ अकालोचितान्नभोक्तयोगः।।

पापग्रहेण संदृष्टे नीचांशादि गते नतु।।५९।।

समयानुसार अन्न न खाने का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी शक्ति से युक्त हो और अधम राशि या शत्रुक्षेत्र में स्थित हो तथा पापग्रहों के सम्पर्क में हो तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाले मनुष्य को समय पर भोजन की प्राप्ति नहीं होती है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति मौसम व समय के अनुकूल अन्न नहीं खा पाता है।

अथ स्वल्पाशी योगः।।

स्वल्पाशी रुचिकामः स्वाद्भुक्तिनाथे शुभगृहे।।
स्वोच्चे शुभसमंदृष्टे मृद्वंशादिसमन्विते।।६०।।

अल्प रूप में भोजन करने का योग

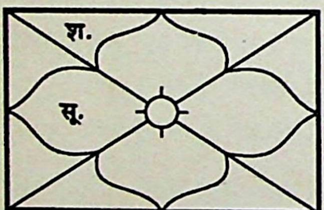
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी सभी शुभग्रह से युक्त हो और श्रेष्ठ राशि में स्थित हो और शुभग्रहों तथा मित्र ग्रहों के भी सम्पर्क में हों तथा मधुर अंशों में स्थित हो, तो ऐसी ग्रहावस्था को प्राप्त करने वाला व्यक्ति कम खाने वाला होता है अर्थ त् स्वल्पाहारी होता है। अर्थात् वह संतुलित भोजन करता है।

अथ श्राद्धान्नभोक्तायोगः।।

भक्तिस्थानाधिपे मंदे तदीशे वार्किसंयुते।।
नीचेर्कसूनुनादृष्टे श्राद्धभुक्सततं नरः।।६१।।

श्राद्धान्न का भोजन करने वाला योग

श्राद्धान्नभोक्ता योगः।



व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में दूसरे भाव का स्वामी शनि ग्रह हो या दूसरे भाव का स्वामी शनि ग्रह से युक्त हो या धनभाव का स्वामी अधम राशि में स्थित हो तथा शनि ग्रह के सम्पर्क में हो तो ऐसा प्राणी श्राद्धान्न को खाता है।

अथ असंख्याश्रितरक्षकयोगः।।

सिंहासनांशे यदि देवपूज्ये शुक्रे यदा गोपुरभागयुक्ते।।
पारावतांशे धनपेबलाढ्ये जातत्वसंख्याश्रितरक्षकःस्यात्।।६२।।

असंख्य प्राणियों को पालने वाला योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में सिंहासन के अंश भाव में वृहस्पति ग्रह स्थित हो और शुक्र ग्रह गोपुरांशा में स्थित हो तथा धनभाव के स्वामी पारावतांश में शक्ति युक्त स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अपने आश्रित असंख्य लोगों का पालन-पोषण करता है। □□□

३ धनभाव स्थित ग्रहों का यवनाचार्य जी द्वारा कथित विशेष फल

तदुक्तं कश्यपजातके।।

स्वोच्चे १ स्वोच्चनवांशे २ शुभवर्गे ३ ऽथनीचगे ४।।
नचांशे ५ कूरपड्वर्गे ६ मित्रभे ७सुहृदंशके ८।।१।।
वर्गोत्तमे९ऽरिभे १०ऽर्यंशे ११स्वर्क्षे १२ द्वादशधाक्रमात्।।
फलं च धनभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम्।।२।।

धनभाव स्थित ग्रहों का यवनाचार्य जी द्वारा
कथित विशेष फल का वर्णन

व्याख्या—धनभाव स्थित ग्रहों के फल बारह प्रकार के होते हैं स्वयं के श्रेष्ठ में पहला स्वयं के श्रेष्ठ भाव के नवां अंश में दूसरा शुभग्रहों के छठे वर्ग में तीसरा अपनी अधम राशि में चौथा तथा स्वयं के अधम भाव के नवां अंश में पांचवा पाप ग्रहों के छठे वर्गों में छठा स्वयं के मित्र की राशि में सातवां अपने मित्र के नवां अंश में आठवां ।। १।। अपने वर्गो में श्रेष्ठ नवें अंश में नवां शत्रु की राशि में दसवां शत्रु के नवें अंश में ग्यारहवां अपनी राशि में बारहवां यह बारह प्रकार से युक्त धनभाव से सम्बन्धित फल यवनाचार्य जी का कथन है।

अथ धनभावस्थद्वादशधासूर्यफलम्।।

वित्तं नृपेतिमानोत्थं १ नृपसेवा समुद्भवम् २।।
सुलोकदक्षं ३ पापोत्थं ४ स्थूलजं ५ चौर्यसंभवम् ६।।३।।
३कामात्७लोभात्८परस्त्रीतः९स्वल्पं १० चाधमसेवनात् ११।।
भृत्यजं १२ धनभावस्थे भास्करे लभते नरः।।४।।

धनभावस्थ सूर्य का बारह प्रकार से युक्त धन लाभ योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य धनभाव में स्वयं के श्रेष्ठ भाव में स्थित हो, तो वह प्राणी राजा द्वारा सम्मानित धन की प्राप्ति करता है। दूसरे

भाव में यदि सूर्य ग्रह स्वयं के श्रेष्ठ नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को राजा की सेवा द्वारा धन की प्राप्ति होती है तथा तीसरे भाव में यदि सूर्य शुभग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति संसार में अपनी चालाकी से धन को प्राप्त करता है। चौथे भाव में यदि सूर्य अधम राशि में स्थित हो, तो प्राणी या ऐसा व्यक्ति पाप कर्म करके धन कमाता है। पांचवें भाव में यदि सूर्य अधम के नवें अंश में स्थित हो तो, ऐसे व्यक्ति को मूर्खता के माध्यम से धन की प्राप्ति होती है। छठीं अवस्था में यदि सूर्य पापग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति चोरी द्वारा धन कमाता है (६)।। ३।। सातवीं अवस्था में यदि सूर्य मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कामुक प्रवृक्ति से धन कमाता है और यदि सूर्य मित्र के नवें अंश में या ग्रह में स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को लोभ द्वारा धनप्राप्ति होती है। (९) यदि सूर्य वर्गों में श्रेष्ठ तथा नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पराई स्त्रियों के माध्यम से धन कमाने वाला होता है। (१०) यदि सूर्य शत्रु की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कम धन कमाने वाला होता है। (११) यदि सूर्य शत्रु के नवें ग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अधम अर्थात् नीच कर्म करके धन कमाता है। (१२) यदि सूर्य धनभाव में अपनी ही सिंह राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नौकरों द्वारा कार्य करवाता है और धन कमाता है। इस प्रकार धनभाव में स्थित सूर्य की १२ प्रकार की स्थिति के अनुसार धन प्राप्ति का योग बारह प्रकार का कहा गया है।

अथधनभावस्थित द्वादशधा चन्द्रफलम्।।

रक्तमुक्ते १ हेमरूप्ये २ स्वर्णे ३ धर्मेतरव्ययम् ४।।
व्ययहींनं ५ पापभवं ६ सूतजं ७ कृषिसंभवम् ८।।५।।
सुहृद्दुर्जनजं। ९ चौर्यसंभवं १० हीनकर्मजम् ११।।
पूर्वजोपार्जितं १२ चंद्रे धनभावगते धनम्।।६।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा के बारह प्रकार के फल

व्याख्या—(१) जिस मनुष्य के जन्म के समय में चन्द्रमा ग्रह धनभाव में स्वयं के श्रेष्ठ भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति रत्नों द्वारा धन कमाता है जैसे मूंगा और मोती। (२) यदि चन्द्रमा ग्रह अपने श्रेष्ठ और नवें ग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सोने चांदी का व्यापार करके धन कमाता है। (३) यदि चन्द्रमा शुभग्रहों के वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सोने अर्थात् स्वर्ण व्यापार से युक्त धन का भागीदार होता है अर्थात् सोने से धन कमाता है। (४) यदि चन्द्रमा अधम राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धर्मेत्म कार्यों में धन प्रयुक्त करके धन कमाता है। अर्थात् व्यापार करके धन कमाने वाला होता है। (५) और यदि चन्द्रमा स्वयं के

अधम और नवें ग्रह में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति कम व्यय करने से धन कमाता है। (६) और यदि चन्द्रमा पापग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पापकर्मों द्वारा धन कमाता है। (७) यदि चन्द्रमा मित्र की राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति अनेक धातु जैसे पारा आदि का व्यापार करके धन कमाता है। (८) यदि चन्द्रमा मित्र के नवें अंश में अर्थात् नवें ग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति खेती द्वारा अर्थात् धरती में अनाज उगाकर धन कमाता है। (९) यदि चन्द्रमा स्वयं के वर्गों में श्रेष्ठ नवें ग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति मित्रों द्वारा तथा खल लोगों अर्थात् गलत लोगों तथा मित्रों के माध्यम से धन कमाता है। (१०) यदि चन्द्रमा शत्रु की राशि में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति चोरों के माध्यम से धन कमाता है। (११) यदि चन्द्रमा शत्रुओं के नवें ग्रह में स्थित हो, तो वह व्यक्ति नीच कार्यों द्वारा धन कमाता है। (१२) यदि चन्द्रमा धनभाव में स्वयं की कर्क राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति दूसरे द्वारा पहले एकत्रित किए गए धन की प्राप्ति करता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को पहले से इकट्ठा हुआ धन मिलता है। इस प्रकार धनभाव में स्थित चन्द्रमा बारह प्रकार से धनलाभ योग में सहयोग देता है।

अथ धनभावस्थित द्वादशधा भौमफलम्।।

युद्धजं १ काष्ठजं २ कृप्यं ३ सुजनोत्थं ४ कुमार्गजस् ५।।
ऋणं ६ त्याजितदेशर्णं ७ मित्रवंच संभवम् ८।।७।।

धनभाव में स्थित बारह प्रकार से भौम फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मंगल ग्रह श्रेष्ठ भाव में स्थित हो, तो वह व्यक्ति लड़ाई-युद्ध, बहस करके या मुकदमों से सम्बन्धित कार्यों को करके धन कमाता है। (१) यदि मंगल ग्रह श्रेष्ठता के नवें ग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति लकड़ी का व्यापार करके धन कमाता है। (२) और यदि मंगल ग्रह शुभग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो वह व्यक्ति कृषि के माध्यम से धन कमाता है। (३) यदि मंगल ग्रह अपने अधम राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने कुल में उच्च लोगों द्वारा कमाये हुए धन का भागीदार बनाता है अर्थात् धन को प्राप्त करता है। (४) और मंगल ग्रह अधम के नवें ग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कुमार्ग अर्थात् बुरे रास्ते से कमाये हुए धन को प्राप्त करता है। (५) और यदि मंगल ग्रह पापग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो वह व्यक्ति कर्ज करके धन कमाता है। (६) यदि मंगल ग्रह मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति देश छोड़कर चले जाने पर देश के कर्ज से धन कमाता है। (७) और यदि मंगल ग्रह मित्रों के नवें ग्रह में स्थित हो तो वह व्यक्ति मित्रों को धोखा देकर धन कमाता है।

वंधुवंचनसंभूतं ९ गुरुदेवादिमोक्षजम् १०।।
नैस्वं ११ स्वजनविद्वेषाद् १२ भौमे धनगते क्रमात्।।८।।

व्याख्या—यदि मंग्रल ग्रह अपने वर्ग में श्रेष्ठ नवें अंश में अर्थात् ग्रह में स्थित हो, तो वह व्यक्ति भाइयों को धोखा देकर धन कमाता है। (८) और यदि मंगल ग्रह शत्रु की राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति गुरु और देवताओं के माध्यम से धन कमाता है। (९) और यदि मंगल ग्रह शत्रु के नवें अंश में स्थित हो, तो वह व्यक्ति धन की कमी करके अर्थात् थोड़ा धन कमाता है। (१०) और यदि मंगल ग्रह धनभाव में अपनी राशि मेष, वृश्चिक में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने मित्रों से शत्रुता करके धन कमाता है। इस प्रकार यदि मंगल ग्रह धनभाव में स्थित हो, तो इन बारह प्रकारों से धन प्राप्ति करता रहता है।

अथ धनभावस्थितद्वादशधाबुध फलम्।।

भूधनं १ सस्यपशुजं २ वहुपापसमुद्भवम् ३।।
निकृष्टतासमुद्भूतं ४ दैन्यार्जितं ५ रिपूद्भवम् ६।।९।।
वंचनोत्थं७वाजिभवं ८ कृषिजं ९ कृषिकारकम् १०।।
शत्रुसेवाभवं स्वल्पं ११ श्रेष्ठसोकाहुधे धने।।१०।।

धनभाव में स्थित बुद्ध ग्रह बारह प्रकार से धन लाभ का योग कराता है

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में बुध ग्रह अपने उच्च में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धरती अर्थात् भूमि धन लाभ प्राप्त करता है। (१) यदि बुध ग्रह स्वयं श्रेष्ठ के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अनाज और पशुओं के माध्यम से धन कमाता है। (२) यदि बुध ग्रह शुभग्रहों के बीच में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पापकर्मों के द्वारा अर्थात् पापकर्म करके धन कमाता है। (३) यदि बुध ग्रह अधम राशि में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति निकृष्ट अर्थात् नीच कार्य के माध्यम से धन प्राप्त करता है। (४) और यदि बुध अधम के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दीनता के माध्यम से धन कमाता है। (५) यदि बुध ग्रह पापग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं द्वारा कमाये हुए धन को प्राप्त करता है। (६) और यदि बुध ग्रह मित्र की राशि में स्थित हा, तो ऐसा व्यक्ति धोखा देकर कमाये गए धन को प्राप्त करता है। अर्थात् दूसरों को ठगकर धन कमाता है। (७) और यदि बुध ग्रह मित्र के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति घोड़ों के माध्यम से धन कमाता है। (८) यदि बुध ग्रह स्वयं के वर्गों में उत्तम नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति खेती करके धन कमाता है। (९) यदि बुध ग्रह शत्रु की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति खेती कृषि कार्य करने वालों अर्थात् किसानों

के माध्यम से धन कमाता है। (१०) यदि बुध ग्रह शत्रु के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं की सेवा करके धन कमाता है। (११) यदि धनभाव में बुध स्वयं की कन्या, मिथुन राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति महान् पुरुषों अर्थात् सत्य के रास्ते पर चलने वाले पुरुषों के माध्यम से धन कमाता है। इस प्रकार धनभाव में स्थित बुधग्रह का बारह प्रकार से फलयोग का कथन है।

अथ धनभावस्थितद्वादशधा गुरुफलम्।।

विंत्तं न्यायार्जितं १ विप्रसाधुदत्तं २ क्षितीशजम् ३।।
परदारसमुद्भूत ४ मंत्यजोत्थं ५ च काष्टजम् ६।।११।।
गजाश्ववस्त्रसंभूतं ७ कृषिजं ८ स्वजनार्पितम ९।।
रिपुदास्या १० दरिद्राप्तं ११ निधिजं १२ धनगे गुरौ।।१२।।

धनभाव में स्थित बारह प्रकार से बृहस्पति ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में बृहस्पति ग्रह धनभाव में स्वयं के श्रेष्ठ राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति न्याय के माध्यम से धन कमाता है। अर्थात् न्याय करके धन कमाता है। (१) यदि बृहस्पति ग्रह श्रेष्ठ के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति ब्राह्मणों और साधुओं के द्वारा दिए गए धन को प्राप्त करता है। (२) यदि बृहस्पति शुभग्रहों के वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा के माध्यम से धन कमाता है। (३) यदि बृहस्पति ग्रह अधमराशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पराई स्त्रियों के माध्यम से धन कमाता है। (४) यदि वृहस्पति ग्रह अधम के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अत्यजो के माध्यम से धन कमाता है। (५) यदि वृहस्पति ग्रह पापग्रहों के छः वर्गों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति लकड़ी के व्यापार आदि के द्वारा धन कमाता है। (६) यदि वृहस्पति ग्रह मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति हाथी, घोड़े और कपड़ों-वस्त्रों आदि के माध्यम से धन कमाता है। (७) यदि वृहस्पति ग्रह अपने मित्र के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कृषि से पैदा किए हुए अन्न द्वारा धन कमाता है। (८) यदि वृहस्पति ग्रह स्वयं के वर्गों में उत्तम नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने कुटुम्बियों द्वारा दिए गए धन को प्राप्त करता है। (९) यदि वृहस्पति ग्रह शत्रु की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं और नौकर, नौकरानियों अर्थात् दास, दासियों के माध्यम से धन कमाता है। (१०) यदि वृहस्पति ग्रह शत्रु के नवें अंश में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धनता के माध्यम से धन प्राप्त करता है। (११) यदि वृहस्पति ग्रह धनभाव में स्वयं के धनमीन राशियों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कोष से सम्बन्धित धन को प्राप्त करता है। इस प्रकार धनभाव में स्थित बारह प्रकार से

वृहस्पति ग्रह धनलाभ कराता रहता है। अर्थात् इस प्रकार से बारह स्थितियों में वृहस्पति ग्रह धनलाभ का कारण होता है।

अथ धनभावस्थितद्वादशधाभृगुफलम्।।

वित्तमक्षीणवहुलं १ पूर्वजातं २ 'क्षितीशजम् ३।।
कार्पणयजं ४ द्यूतलब्धं ५ परदेशाऽतिसंगजम् ६।।१३।।
नृपजं ७ नृपपुत्रोत्थं ८ रागजं ९ वरकर्मजम् १०।।
दैन्यजं ११ पुत्रजनितं १२ शुक्रे धनगते क्रमात्।।१४।।

धनभाव में स्थित बारह प्रकार से शुक्र ग्रह का धन प्राप्ति योग कथन

व्याख्या—(१) जिस प्राणी के जन्म के समय में शुक्र ग्रह धनभाव में स्वयं के उच्च भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कभी नष्ट न होने वाले धन को प्राप्त करता है अर्थात् अक्षीण धनवान् होता है। (२) यदि शुक्र ग्रह श्रेष्ठ के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पूर्व में एकत्रित धन प्राप्त करता है। (३) और यदि शुक्र ग्रह शुभग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा के द्वारा धन की प्राप्ति करता है अर्थात् राजा द्वारा धन कमाता है। (४) यदि शुक्र ग्रह अधम राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कंजूसी करके धन कमाता है। (५) यदि शुक्र ग्रह अधम के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति जुए के माध्यम से अर्थात् जुआ खेलकर धन कमाता है। (६) यदि शुक्र ग्रह पापग्रहों के छः वर्गों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति परदेश जाकर धन कमाता है। (७) यदि शुक्र ग्रह मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा के माध्यम से धन कमाता है। (८) यदि शुक्र ग्रह मित्र के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा के पुत्र द्वारा धन कमाता है। (९) यदि शुक्र वर्गों में उत्तम नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राग के माध्यम से धन कमाता है। (१०) और यदि शुक्र ग्रह शत्रु की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति उत्तम कार्यों के माध्यम से धन कमाता है। (११) यदि शुक्र ग्रह शत्रु के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दीनता से धन कमाता है। (१२) यदि शुक्र ग्रह धनभाव में स्वयं की राशि वृष और तुला में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पुत्रों द्वारा कमाये गए धन का लाभ प्राप्त करता है। इस तरह से यह बारह प्रकार से शुक्र ग्रह धनभाव में स्थित होकर धन की प्राप्ति कराता रहता है।

अथ धनभावस्थितद्वादशधाशनिफलम्।।

वित्तं कुकर्मजातं १ च कष्टजं २ व्यसनोद्भवम् ३।।
दुःखनिर्घृणताक्लेश ४ मंत्यजोत्थं ५ च पापजम् ६।।१५।।

अस्थिस्वं ७ मृन्मयं ८ चैव जलजं ९ पाकर्मजम् १०।।
दास्यजं ११ परमोषात्थं १२ शनौ धनगते क्रमात्।।१६।।

धनभाव में स्थित शनि ग्रह का बारह प्रकार से धनलाभ योग कथन

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में शनि ग्रह धनभाव में स्वयं के श्रेष्ठ भाव में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति बुरे कर्मों को करके धन कमाता है। (१) और यदि शनि ग्रह अपने श्रेष्ठ के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट प्राप्त करके धन कमाता है। (२) और यदि शनिग्रह शुभग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति व्यसनों के माध्यम से धन कमाता है। (३) यदि शनिग्रह अधम राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दुख और अधिक क्लेश, कलह और बेशर्मी से धन कमाता है। (४) यदि शनिग्रह अधम के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अंत्यजो के माध्यम से धन कमाता है। (५) यदि शनि पापग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पाप से उत्पन्न धन कमाता है। अर्थात् पापकर्मों द्वारा उत्पन्न पैदा हुए धन को भोगता है। (६) यदि शनि ग्रह मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति हड्डियों के व्यापार आदि से धन कमाता है। (७) यदि शनि ग्रह मित्र के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति मिट्टी के माध्यम से धन कमाता है। (८) यदि शनि ग्रह स्वयं के वर्गों में उत्तम नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा प्राणी जल के माध्यम से पैदा धन को भोगता है। (९) यदि शनि ग्रह शत्रु की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति बुरे कर्मों को करके धन कमाता है। (१०) यदि शनि ग्रह शत्रु के नवें अंश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नौकरों अर्थात् भृत्यों के द्वारा कमाये गए धन को भोगता है। (११) यदि शनि ग्रह स्वयं की मकर या कुंभ राशि में धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे के साथ तर्क करके धन कमाता है। इस प्रकार धनभाव में स्थित शनि ग्रह का बारह प्रकार से क्रमानुसार फल का कथन है।

अथोच्चराशिगतधनभावस्थितरव्यादिग्रहफलम्।।

सहस्त्रनाथोदिनपः प्रदिष्टोलक्षाधिपोरात्रिकरः सदैव।।
शताधिपोभूतनयः करोति कोटीश्वरः सोमसुतोनरोवै।।१७।।
खर्वाधिनाथः सुरराजमंत्री शुक्रोत्थशंकुः शनिरल्पतुल्यः।।
स्वतुंगगाः स्युर्यदि सर्वएते त्वथान्तराले त्वनुपाततः स्यात्।।१८।।

उच्च राशि के अन्तर्गत धनभाव स्थित सूर्य आदि ग्रहों का फल

व्याख्या—जिस मनुष्य के धनभाव में उच्च राशि के अन्तर्गत सूर्य ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति हजारों का स्वामी होता है। यदि चन्द्रमा उत्तम राशि में स्थित

हो, तो ऐसा व्यक्ति लखपति कहलाता है। अर्थात् लाखों की सम्पत्ति का मालिक होता है। यदि मंगल ग्रह उच्च राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सैकड़ों का स्वामी होता है और बुध श्रेष्ठ राशि के अन्तर्गत स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति करोड़पति होता है। यदि वृहस्पति ग्रह धनभाव में उच्च भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति खरबों का स्वामी होता है। शुक्र ग्रह उच्च राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पदमों का स्वामी होता है। अंर्थात् पदमों धन कमाता है। यदि शनि ग्रह उच्च राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सैकड़ों का स्वामी होता है। गणित से कल्पना करके धन का लाभ कहना चाहिए। और यदि उच्च नीच के अन्तरालवर्ती राशियों में स्थित हो, तो उस प्राणी को त्रैराशिक कहना चाहिये। सूर्य ग्रह अपने उच्च भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपार धन कमाता है। यदि अधम राशि में स्थित हो, तो शून्य को प्राप्त होता है। यदि अंतराल राशिवर्ती सूर्य हो, तो ऐसा व्यक्ति कितना धन पायेगा यहां त्रये राशिक गणित की कल्पना करनी चाहिए।

❑❑❑

४ धनभाव में स्थित राशिफल का वर्णन

अथ धनभाव स्थित राशि फलान्याह।।

अथ धनभावस्थितमेषराशिफलम्।।

मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्योधनं सुपुणयैर्विविधं प्रभूतम्।।
चतुष्पदाढयोबहुबांधवाढयः प्रयच्छतिः प्रीतिपरः सदैव।।१९।।

धनभाव में स्थित मेष राशि का फल है

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मेषराशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ पुण्यों से युक्त नानाविधियों द्वारा अधिक धन को प्राप्त करता है। तथा चार पैरों वाले (हाथी घोड़े) आदि सम्पत्ति से युक्त अधिक कुटुम्बों, भाइयों से युक्त निरंतर प्रेमपूर्वक जीवन बिताता है। अर्थात् ऐसी ग्रह अवस्था को प्राप्त करने वाला प्राणी सदा सभी सुखों से युक्त रहता है।

अथ धनभावस्थितवृषराशिफलम्।।

वृषे धनस्थे कुरुते मनुष्यं कृषिप्रयत्नेन धनं सदैव।।
नरोयशस्वी च चतुष्पदाढ्ंय सुवर्णरौप्यं मणिमौक्तिकोलम्।।२०।।

धनभाव में स्थित वृष राशि का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में वृषराशि धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य खेती के कार्यों को उचित ढंग से करता है और धन कमाता है तथा ऐसा व्यक्ति हमेशा या निरंतर शुभ यशो से युक्त चारों पैरों वाले (जानवरों) की संपत्ति से युक्त स्वर्ण, रुपये मणि, मुक्ता आदि धन से सम्पन्न होता है।

अथ धनभावस्थितमिथुनराशिफलम्।।

तृतीयराशौ धनगे मनुष्योधनं भवेत्स्त्रीजनतश्च नित्यम्।।
रौप्यं तथा कांचनजंप्रभूतं हयाधिकं सुष्ठुभिःलोकसख्यम्।।२१।।

धनभाव में स्थित मिथुन राशि के फल का कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मिथुन राशि स्थित

हो, तो ऐसा व्यक्ति स्त्री धन से युक्त तथा स्वर्ण और रुपयों से उत्पन्न विशेष धन को प्राप्त करता है तथा घोड़ों की सम्पत्ति से युक्त होता है और सच्चे लोगों से मित्रता उसे अच्छी लगती है।

अथ धनभावस्थितकर्कराशिफलम्।।

चतुर्थराशौ धनगे मनुष्योधनं भवेद्वृक्षजमेवनित्यम्।।
जलोद्भवंयद्यदनिष्टभोज्यं नयार्जितं प्रीतिकरं सुतानाम्।।२२।।

धनभाव में स्थित कर्क राशि का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में कर्क राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पेड़ों से उत्पन्न जल से उत्पन्न धन का स्वामी होता है तथा हानिकारक भोजन करने वाला नीति संग्रही और पुत्रों से प्रेम करने वाला होता है।

अथ धनभावस्थितसिंहराशिफलम्।।

सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यं धनं सदारण्यजनोत्थमाप्तम्।।
सर्वोपकारकरणं प्रभूतं स्वविक्रमोपार्जितमेव नित्यम्।।२३।।

धनभाव में स्थित सिंह राशि के फल का कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सिंह राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति जंगल की सम्पत्ति का स्वामी अर्थात् जंगल में उत्पन्न वस्तुओं से पैदा होने वाले धन का स्वामी परोपकारी तथा अपनी शक्ति के द्वारा अधिक धन कमाता है।

अथ धनभावस्थितकन्याराशिफलम्।।

कन्योदये वित्तगते मनुष्योधनं लभेद्भूमिपतेः सकाशात्।।
हिरणयमुक्तामणिरत्नजातं गजाश्वनानाविधवित्तजं चा।।२४।।

धनभाव में स्थित कन्या राशि के फल का कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में कन्या राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा के माध्यम से धन कमाता है तथा स्वर्ण, मोती, मणि तथा रत्नजात धनवाला तथा हाथियों के सम्पत्ति से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थिततुलाराशि· फलम्।।

तुले धनस्थे वहुपुणयजातं धनं भवेत्पुत्रजनैरुपेतम्।।
व्यापारकार्ये पुरुषः प्रवीणं कुले प्रधानं गुरुमानलब्धम्।।२५।।

धन में स्थित तुला राशि के फल का कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में तुला राशि स्थित

हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा पुण्यवान पुत्रों के द्वारा कमाये गए धन को प्राप्त करता है तथा व्यापार कार्य में चालाक तथा अपने परिवार में अग्रणीय होता है तथा सम्मिलित होता है।

अथ धनभावस्थितवृश्चिकराशिफलम्।।

अलौ धनस्थे वहुपुण्यजातं धनं मनुष्योलभते प्रभूतम्।।
पाषाणजं मृन्मयजं तथापि सस्योद्भवं कामकलाप्रवीणम्।। २६।।

धनभाव में स्थित वृश्चिक राशि के फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में वृश्चिक राशि धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पुण्यों से उत्पन्न धन का स्वामी पत्थर के व्यापार से धन कमाता है या मिट्टी के कारोबार से धन कमाता है अथवा अन्न के व्यापार से धन प्राप्त करता है तथा कामकला में चालाक रहता है।

अथ धनभावस्थितधनराशिफलम्।।

धनुर्धरे वित्तगते मनुष्योधनं लभेद्वाहनजं सदैव।।
चतुष्पदाढ्यं प्रकट प्रभावं रसोद्भवं युद्धभवं धनाढयम्।। २७।।

धनभाव में स्थित धन राशि का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में धन राशि हो, तो ऐसा व्यक्ति वाहनों के द्वारा धन लाभ प्राप्त करता है तथा चौपायों की संम्पत्ति से युक्त अपने प्रभावों से संसार में प्रिय रसों से युक्त युद्ध के माध्यम से धन कमाने वाला होता है।

अथ धनभावस्थित मकरराशिफलम्।।

मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रंपचैर्विविधैः समेतम्।।
सेवासमुत्थं च सदा नृपाणां कृषिक्रियाभिश्च रुजप्रसंगात्।। २८।।

धनभाव में स्थित मकर राशि का फल

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में मकर राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार से चार सौ बीसी या धोखेबाजी के माध्यम से धनवान बनता है। निरंतर राजा की सेवा करके धन प्राप्त करता है तथा खेती के माध्यम से धन कमाता है और रोगों से सम्बन्धित बातों द्वारा धन कमाता है।

अथ धनभावस्थितकुंभराशिफलम्।।

घटे धनस्थे लभते मनुष्योधनं प्रभूतं फलपुष्पजातम्।।
जनोद्भवं साधुजनस्य भोग्यं महाजनोत्थं च परोपकारैः।। २९।।

धनभाव में स्थित कुंभ राशि का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में कुंभ लग्न स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति फूलों और फलों से उत्पन्न धन कमाता है तथा ऐसा व्यक्ति प्राणियों साधुजनों की भोजन सेवा के द्वारा धन लाभ प्राप्त करता है तथा महान् पुरुषों से युक्त होकर परोपकार कार्य से भी धन कमाता है।

अथ धनभावस्थित मीनराशिफलम्।।

मीने धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतैर्नियमोपवासैः।।
विद्याप्रभावान्निधिसंगमाच्च मातापितृभ्यांसमुपार्जितंच।।३०।।

धनभाव में मीन राशि का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मीन राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति स-नियम और व्रत अर्थात् उपवास के माध्यम से धन कमाता है तथा विद्याज्ञान से अर्जित धन को प्राप्त करता है। कोष के माध्यम से माता और पिता द्वारा पैदा किए गए धन को भोगता है।

❑❑❑

५ धनभाव स्थित धन स्वामी लग्नों के भाव में स्थित फल

तदुक्तंवृद्धयवनः।

अथ धनभावपतिर्लग्नस्थफलम्।।

धनपतिर्लग्नगतः कृपणंव्यवसायिनंसुकर्माणाम्।।
धनिनं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगयुक्तम्।।३१।।

धनभाव स्थित धन स्वामी लग्नों के भाव में स्थित फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का गुरु या स्वामी जन्म लग्न में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कंजूस, व्यापार आदि करने वाला, उत्तम कर्यों को करता है और धनवान सेठ अर्थात् साहूकार के नाम से युक्त होकर संसार में अनेक प्रकार के सुख भोगों को भोगता है।

अथ धनभावपतिधनभावस्थफलम्।।

धनपोधनभावस्थो धनवन्तं धर्मकर्मनिरतं च।।
लाभाधिकं सुलोभं कुरुते पुरुषं सदादक्षम्।।३२।।

धनभाव के स्वामी भाव में स्थित फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धर्म, कर्म में प्रयत्नशील रहता है और अधिक धनप्राप्ति करके धनवान् होता है। ऐसा व्यक्ति लोभ के द्वारा चालाकी से निरंतर धन कमाता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति लोभी, चालाक और धनवान होता है।

अथ धनभावपतिसहजभावस्थफलम्।।

सहजगते तु धनेशे व्यवसायी कलिकरकलाहीनः।।
चौरश्चंचलचित्तोभवति नरो विनयरहितश्च।।३३।।

धनभाव के स्वामी सहज भाव में स्थित फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी तीसरे भाव

में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति व्यापार करने वाला, घर में क्लेश करने वाला तथा कलाओं से रहित होता है। ऐसा व्यक्ति चंचल मन वाला चोर और विनम्र होता है।

अथ धनभावपतिचतुर्थभावस्थफलम्।।

तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभपरः सदादयायुक्तः।।
दीर्घायुः क्रुरखगे नरं स्वल्पायुर्मरणकं विनिर्देश्यम्।। ३४।।

धनभाव के स्वामी चौथे भाव में स्थित हो, तो फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी शुभग्रह से युक्त हो तथा चौथे भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पिता के हित में प्रयत्नशील तथा निरंतर दयावान तथा दीर्घायु होता है यदि धन का स्वामी चौथे भाव में पापग्रह से युक्त हो, तो ऐसा व्यक्ति अल्पायु होता है।

अथ धनभावपतिपंचमभावस्थफलम्।।

कमलाविमलासितनयनं कर्मणि कष्टे रतं प्रसिद्धम्।।
कृपणं दुःखनिधानं तनयगतो धनपतिः कुरुते।। ३५।।

धनभाव के स्वामी का पंचम भाव में स्थित फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव के स्वामी पांचवे भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति लक्ष्मी से युक्त तथा सफेद आंखों वाला होता है तथा परिश्रमी कार्यों के करने में प्रयत्नशील और यशस्वी होता है और यदि धन का स्वामी पापग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपार दुःखों से युक्त और कंजूस होता है।

अथ धनभावपतिरिपुभावस्थफलम्।।

षष्ठगते द्रविणपतौ धनसंग्रहतत्परं रिपुघ्नं च।।
भूस्वामिनं च खचरे धनवर्जित पुरुषम्।। ३६।।

धनभाव के स्वामी का शत्रु के भाव में स्थित होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी छठे भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धन एकत्रित करता है तथा शत्रुओं को पराजित करके भूमि का स्वामी होता है। और यदि धन का स्वामी पापग्रह से युक्त हो, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन होता है।

अथ धनभावपतिसप्तमभावस्थफलम्।।

धनपे सप्तमगृहगे श्रेष्ठचिंताविलासभोगी च।।
धनसंग्रहणी भार्य्या क्रूरखचरे भवति वन्ध्या।। ३७।।

धन के स्वामी का सातवें भाव में स्थित होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी सातवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति उत्तम कार्यों के चिन्तन में प्रयत्नशील भोगी होता है और ऐसे व्यक्ति की पत्नी धन एकत्रित करने वाली होती है। और यदि धन के स्वामी पापग्रह से युक्त हो, तो ऐसे व्यक्ति की स्त्री को कोई सन्तान नहीं होती।

अथ धनभावपतिरष्टमभावस्थफलम्।।

धनपे चाष्टमभवने दुष्टजनश्चात्मघातकः पुरुषः।।
उत्पन्नभोगविलासी परहिंसा भवति दैवपरः।।३८।।

धनभाव के स्वामी का आठवें भाव में स्थित होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी आठवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दुष्ट स्वभाव का स्वघाती अर्थात् अपने जमीर का हनन करने वाला होता है अर्थात् आत्मा का पतन करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति को अचानक भोग-विलास की कामना होती है और दूसरे को कष्ट पहुंचाने वाला होता है।

अथ धनभावपतिर्नवमभावस्थफलम्।।

धनपे धर्मगृहगे सौम्येदानप्रसिद्धभाग्भवति।।
क्रूरे दरिद्रभिक्षुकविडंबवृत्तिस्तथा मनुजः।।३९।।

धनभाव के स्वामी का नवें भाव में स्थित होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी नवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध दानी होता है। और यदि धन का स्वामी पापग्रह से युक्त हो, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन भिखारी और पाखंडी होता है। अर्थात् दूसरे व्यक्तियों को बहकाकर पैसा कमाता है।

अथ धनभावपतिर्दशमभावस्थफलम्।।

दशमगृहस्थे धनपे नरेंद्रमान्योभवेन्नृपाल्लक्ष्मीः।।
सौम्यग्रहे च मातुः पितुश्च परिपालकपुरुषः।।४०।।

धनभाव के स्वामी का दशवें भाव में स्थिति होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी दशवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा द्वारा सम्मानित और पुरस्कार रूप में धन प्राप्त करता है और फिर धन का स्वामी शुभग्रह से युक्त होकर दशवें

भाव में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति माता-पिता का प्रतिपालन करता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति मां-बाप की सेवा करता है और उनका भरण-पोषण करता है।

अथ धनभावपतिरेकादशभावस्थफलम्।।

एकादशगे स्वपतौ व्यवहारपरः श्रियः पतिः ख्यातः।।
लोकाढ्यं प्रतिपालननिरतं कुरुते नरं जातम्।।४१।।

धनभाव के स्वामी को ग्यारहवें भाव में स्थित होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी ग्यारहवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति संसार में ख्याति प्राप्त करता है। धनवान और सत्पुरुषों की संगति से युक्त अथवा जनसमूह से युक्त होता है तथा जनसमूह का पालन भी करता है।

अथ धनभावपतिद्वादशभावस्थफलम्।।

द्वादशगेद्रव्यपताव टकपाली विदेशऋद्धिश्च।।
दुष्कर्मा भिःक्षुकश्च क्रूरे सौम्ये च सद्ग्रामी।।४२।।

धनभाव के स्वामी का बारहवें भाव में स्थित होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव का स्वामी बारहवें स्थान में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरे देश में जाकर त्रद्धियों को प्राप्त करता है। अष्टकपाली होता है। नीच कार्य करता है और भिखारी होता है और यदि धन का स्वामी शुभग्रह में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति उत्तम गांवों का स्वामी सिद्ध होता है।

❑❑❑

६ धनभाव में स्थित ग्रहों का फल

तदुक्तं वृद्धयवनः।

अथ धनभावस्थितसूर्यफलम्।।

द्वितीयसंस्थः कुरुते अहीनं सूर्यप्रसिद्धया रहितं कृतघ्नम्।।
श्रद्धाविहीनं विगतस्वभावं कुमित्रयुक्तं परवंचकं च।।१।।

इसके बाद धनभाव में स्थित ग्रहों का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में दूसरे भाव में सूर्य स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, कुख्यात, दूसरे के उपकार को न मानने वाला श्रद्धा रहित, दुर्जन, असंगति करने वाला तथा ठग होता है।

अथ धनभावस्थितचन्द्रफलम्।।

द्वितीयसंस्थः कुरुते शशाङ्कः कोशान्वितं सर्वसमृद्धियुक्तम्।।
प्रियंवदं ब्राह्मणदेवभक्तं महाप्रभावं बहुसौहृदं च।।२।।

धनभाव में चन्द्रमा (ग्रह) की स्थिति होने पर फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति अधिक धन वाला समस्त समृद्धि अर्थात् सम्पन्नता से युक्त प्रियवादी होता है तथा ऐसा व्यक्ति देवताओं और ब्राह्मणों की सेवा करता और भक्ति करता है। प्रसिद्ध यश वाला तथा अधिक मित्रों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थितभौमफलम्।।

धनस्थिते भूतनयः प्रसूते पित्तानिलाभ्यां सहितं कुरूपम्।।
विहीनशक्तिं मतिवर्जितं च व्ययौरनिष्टैः सहितं कृतघ्नम्।।३।।

धनभाव में स्थित भौम फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में मंगल ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पित्त रोगयुक्त, वात रोग से युक्त है। तथा ऐसा व्यक्ति कुरूप शक्तिहीन

विवेकशून्य बुरे कार्यों में धन खर्च करके धन नाश को प्राप्त होता है। तथा ऐसा व्यक्ति दूसरे के उपकार को नहीं मानता है।

अथ धनभावस्थितवुधफलम्।।

धनस्थितः सजनयच्छशांकः प्रभूतकोशं स्वजनानुरक्तम्।।
प्रिंयवदं ब्राह्मणदेवभक्तं मनस्थितं कीर्तिकरं सदैव।।४।।

धनभाव में स्थित बुधग्रह का फल

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में बुध ग्रह स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य स्वजनों से प्रेम करने वाला धन का स्वामी, प्रिवादी, देवताओं का भक्त और ब्राह्मणों की सेवा करने वाला होता है। तथा निरंतर यश प्राप्त करता है।

अथ द्वितीयभावस्थितगुरुफलम्।।

कोशाश्रितः स्यात्सुरराजमंत्री सुवित्तदाताप्रमुखप्रदश्च।।
नाशाय पापस्य च शत्रुराशे परोपजातस्य च दूषणस्य।।५।।

दूसरे भाव में स्थित वृहस्पति ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धन दान देने में पहला स्थान रखता है अर्थात् पुण्य कार्यों में श्रेष्ठ धन दान देने में आगे गिना जाता है और यदि वृहस्पति ग्रह शत्रु की राशि के अन्तर्गत दूसरे भाव में स्थित हो ऐसा प्राणी परोपजात दूषण का भागीदार होता है। अर्थात् दूसरे से उत्पन्न को दूषित करता है या दूसरी जातियों को दूषित करता है।

अथ धनभावस्थितभृगुफलम्।।

द्वितीयगोभार्गवएव धत्ते धनं विचित्रं सुजनानुरक्तम्।।
सुवर्णमुक्तामणिवस्त्रलाभं विमुक्तरोगं हतपापचेष्टम्।।६।।

धनभाव में स्थित भृगुफल (शुक्र ग्रह की फल स्थिति)

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में शुक्र ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धनवान् व उत्तम पुरुषों का प्रेमी विचित्र, स्वर्ण, मोती तथा मणि और वस्त्रों को प्राप्त करने वाला होता है। तथा ऐसा व्यक्ति निरोगी और धर्म के स्वभाव वाला पापरहित होता है।

अथ द्वितीयभावस्थितशनिफलम्।।

धनस्थितः सूर्यसुतः प्रसूते धनैर्विहीनं वहुशत्रुभाजम्।।
नानाप्रकारैर्व्यसनैः समेतं कृशं विवर्ण गतिवर्जितंच।।७।।

धनभाव में स्थित शनि ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में शनिग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, शत्रुओं से युक्त, व्यसनी, दुर्बल शरीर वाला, कुवर्ण तथा गतिहीन होता है।

अथ धनभावस्थितराहुफलम्।।

धनगते रविचंद्रविमर्दने मुखरतां कलिभावमथोलभेत्।।
धनविनाशकरोहि दद्रिताखलु गदालभते मनुजोऽटनम्।।८।।

धनभाव में स्थित राहु (ग्रह) का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में राहू ग्रह स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति कलह से कड़वी वाक्यों का प्रयोग करके लड़ाई में जीतने वाला होता है। निर्धन, धन को नष्ट करने वाला तथा भ्रमण प्रेमी होता है।

अथ द्वितीयभावस्थितकेतुफलम्।।

धनेकेतुगो यस्य चार्थस्यनाशः कुटुम्बाद्विरोधोनृपादेशचचिंता।।
मुखेरोगदः सत्कृतोनीतिभाषी ततः स्वेगृहेसौम्यगेहेतिसौख्यम्।।९।।

दूसरे भाव में स्थित केतू ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में केतु ग्रह स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति का धन नष्ट हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिवार का विरोधी राजा की तरफ से चिन्तित रहने वाला मुख का रोगी तथा मीठा और आदरसूचक वचन बोलने वाला होता है। यदि यही केतु ग्रह मिथुन राशि, कन्या राशि और मीन राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सुख का भागी होता है। इसी कथन से मिलती-जुलती कथन अन्य विद्वानों की भी है।

अथ धनभावस्थितसदसद्ग्रहयोगफलम्।।

शुभाधनस्थिताः कुर्युः वाग्मिनंप्रियभोजनम्।।
क्रूराः प्रोक्ता विशेषेण कदन्नं वहुभाषणम्।।१०।।

धनभाव में स्थित सद और असद फल का कथन योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में शुभग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रियवादी प्रियभोजन करता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति प्रिय लगने वाली वाणी बोलता है और प्रिय भोजन करता है। और यदि पापग्रह धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति गलत तरीके से आए हुए अन्न को खाता है, ज्यादा बोलता है अर्थात् वाचाल और कठोर वाणी बोलता है।

अथ धनभावस्थितविशेषफलमाह।।

धनस्थानगते जीवे धनी भवति बालकः।।
बुधस्तत्रैव भोगस्यिाच्छुक्रे भूमिपतिर्भवेत्।।११।।
धनस्थाने यदाचंद्रः पंचमस्थो यदारविः।।
तदा धनक्षयं विद्याद्दशवर्षाणि पंच च।।१२।।

धनभाव में स्थित विशेष फल का कथन

विशेष—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धनी होता है। और यदि बुध ग्रह धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति भोग करने वाला होता है और यदि शुक्र ग्रह धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति भूमि का स्वामी होता है और यदि धनभाव में चन्द्रमा ग्रह स्थित हो और पांचवें भाव में सूर्य स्थित हो ऐसा व्यक्ति का पूर्वजों द्वारा कमाया गया धन पांच या दस वर्ष के भीतर नष्ट हो जाता है।

❑❑❑

७ धनभाव में स्थित दो ग्रहों का योग फल

तत्रादौ धनभावस्थितसूर्यचंद्रयोगफलम्।।

धनस्थितस्तीक्ष्णकरः सचन्द्रोनरं प्रसूते विधनं कृतघ्नम्।।
सदा कुशीलं प्रभया विहीनं रोगाभिभूतं जनताविरुद्धम्।।१।।

धनभाव में स्थित दो ग्रहों का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य और चन्द्रमा ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन होता है। किसी का उपकार न मानने वाला। निरंतर दुर्जन कार्यों से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति निरंतर रोगी और निडर होता है। और मनुष्य के उत्तम गुणों से रहित अर्थात् दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

अथ धनभावस्थितसूर्यभौमयोगफलम्।।

धनस्थितस्तीक्ष्णकरः सभौमोनरं दरिद्रं सततं विधत्ते।।
व्यपेत लज्जां कृपया विहींन सदातुरं पापसमन्वितंच।।२।।

धनभाव में स्थित सूर्य भौम फल योग कथन

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य और मंगल ग्रह स्थित हों तो वह व्यक्ति निर्धन, निर्लज्ज, दया से हीन, निर्दयी, निरंतर बैचेन रहता है। और पापकार्यों में निरन्तर लिप्त रहता है।

अथ धनभावस्थितसूर्यबुधयोगफलम्।।

धनस्थितस्तीक्ष्णकरः ससौम्योनरं विधत्ते व्रणदश्वगात्रम्।।
निःस्वंकुशीलं गतभृत्यवर्ग जनाभिभूतं वहुशोकभाजम्।।३।।

धनभाव में स्थित सूर्य और बुध ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य और बुध ग्रह स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति व्रणांकित और जलभई शरीर से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति

निर्धन दुःशील नौकरों से हीन तथा मनुष्यों में मान से रहित तथा अनेक प्रकार से शोकों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थितसूर्यगुरुयोगफलम्।।

धनस्थितस्तीक्ष्णकरः सजीवोनरं विधत्ते विनयेनहीनः।।
आमान्वितं पापरतं कुजिह्वं विदेशसेवाश्रयकष्टभाजम्।।४।।

धनभाव स्थित सूर्य और वृहस्पति ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य ग्रह और वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति विनम्र, कठोर हृदय वाला तथा स्वदेश को छोड़कर दूसरे देश की यात्रा करता है और यात्रा द्वारा कष्ट भोगता है।

अथ धनभावस्थितसूर्यभृगुयोगफलम्।।

धनस्थितस्तीक्ष्णकरः सशुक्रोनरं विधत्ते पुरुषस्वभावम्।।
नीचानुरक्तं वहुशत्रुपक्षं विभीषकं कान्तिविवर्जितं च।।५।।

धनभाव में स्थित सूर्य और शुक्र ग्रह का फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य और शुक्र ग्रह स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य कठोर हृदय वाला अर्थात् निर्दयी दुष्जनों का साथ करता है। शत्रुओं से युक्त। कुरुप अथवा डरावनी शक्ल वाला तथा तेज़हीन होता है।

अथ धनभावस्थितसू०श०योगफलम्।।

धनस्थितस्तीक्ष्णकरः समंदोनरं विधत्ते वहुरोगभाजम्।।
वृथा श्रमं निर्दयमुक्तकोपं विवर्जितं साधुसमागमेन।।६।।

धनभाव में स्थित सूर्य और शनि ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित बिना लाभ का परिश्रम करता है निर्दयी, क्रोध से रहित और सत्पुरुषों की संगति से हीन होता है।

अथ धनभावस्थितचं०मं०योगफलम्।।

धनस्थितःशीतकरः सभौमोनरं विधत्ते जनताविहीनम्।।
विरक्तदारं जठरं कृतघ्नं प्रेष्यं खलं कान्तिविवर्जितं च।।७।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा और मंगल ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा और मंगल

ग्रह स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य स्त्री से रहित पुरुष के प्राकृतिक गुणों से हीन कठोर हृदय वाला कृतघ्नि जुआ खेलने वाला तेजहीन और दुष्ट होता है।

अथ धनभावस्थितचं०बु०योगफलम्।।

तास्त्रपतिःस्वात्मसुतेन युक्तो धनस्थितः संजनयेन्मनुष्यम्।।
प्रभूतवित्तं व्यसनैर्विहीनं सुखाऽधिकं भूमिपतेरभीष्टम्।।८।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा और बुध ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा और बुध ग्रह स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति अधिक सम्पत्ति से युक्त, अव्यसन स्वभाव वाला होता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति में किसी प्रकार की बुरी आदत नहीं होती। राजा को प्यारा होता है। अर्थात् राजा उस व्यक्ति से स्नेह करता है और श्रेष्ठ सुखों का भागीदार होता है।

अथ धनभावस्थितचं०वृ०योगफलम्।।

चंद्रःसजीवो धनभावसंस्थः करोति मंर्त्य च नराधिपं च।।
तेजान्वितं धर्मपर हतारिं प्रभूतमित्रं जनवल्लभं च।।९।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा और वृहस्पति ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा और वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति मनुष्यों में मुखिया धार्मिक कार्यों में प्रयत्नशील शत्रु पर विजय प्राप्त करता है और मित्रों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थितचं०शु०योगफलम्।।

शुक्रेण युक्तः प्रकरोति चंद्रो धनस्थितः शीलयुतं धनाढयम्।।
महीपतिं वा सचिवोऽथ वा स्यात्प्रभूतमित्रं सुतसंयुतंच।।१०।।

धनभाव स्थित चन्द्रमा और शुक्र ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में शुक्र ग्रह से युक्त चन्द्रमा स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धनवान शील से युक्त राजा और राजमंत्री से युक्त तथा अधिक मित्रों और पुत्रों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थितचं०श०योगफलम्।।

धनस्थितःशीतकरः समंदो दरिद्रभाजोधनधर्महीनम्।।
नरं प्रभूतारिजनैर्निरस्तं विवादशीलंहतबन्धुपक्षम्।।११।।

धन भाव में स्थित चन्द्रमा और शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा और शनि

ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति धनहीन, धर्महीन शत्रुओं से परित्यक्त विवाद में शील वाला तथा भाईयों को नष्ट करता है।

अथ धनभावस्थितमं०बु०योगफलम्।।

भौमोधनस्थः शशिपुत्रयुक्तोनरं प्रसूते गतवित्तसूनुः।।
दोषान्वितं व्याधिभिरार्द्रिताङ्गगुणैर्विहीनं हतवन्धुबर्गम्।।१२।।

धनभाव में स्थित मंगल ग्रह और बुध ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मंगल और बुध ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति धनहीन, पुत्रहीन रोगी दोषी तथा बंधु समूह का नाशक होता है।

अथ धनभावस्थितमं०वृ०योगफलम्।।

जीवान्वितोभूतनयो धनस्थोनरं सुवातेन रुजासमेतम्।।
विवेकहीनं कृतकस्वभावं स्वल्पात्मजं वादविनिंदितंच।।१३।।

धनभाव में स्थित मंगल और वृहस्पति ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मंगल ग्रह, वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति वातरोग से पीड़ित, अविवेकी, झूठा, कम पुत्रों से युक्त और बाद में निंदा का पात्र होता है।

अथ धनभावस्थितमं०शु०योगफलम्।।

शुक्रान्वितो भूतनयोधनस्थे नरं प्रसूते बहुयोगयुक्तम्।।
विवेकहीनं जठरस्वभावं संतापदुःखं रिपुवर्गभीतिम्।।१४।।

धनभाव में स्थित मंगल और शुक्र ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मंगल और शुक्र ग्रह स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति रोगी, कठोर हृदयी, संतान का दुखी और शत्रुओं से डरता रहता है।

अथ धनभावस्थितमं० श० योगफलम्।।

सौरान्वितोभूतनयोधनस्थो नरं प्रसूते धनधर्मयुक्तम्।।
प्रकृष्टमुक्तामणिवित्तभाजं स्त्रीसम्मतं तीर्थरतंनिरीहम्।।१५।।

धनभाव में स्थित मंगल और शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मंगल और शनि ग्रह हों तो ऐसा व्यक्ति धनवान्, धार्मिक और मोती मणियों से युक्त अपनी पत्नी के मतानुसार चलने वाला। इच्छाओं से हीन और तीर्थों का भ्रमण करता है।

अथ धनभावस्थित बु० वृ० योगफलम्।।

सौम्यान्वितोदेवगुरुर्धनस्थोनरं प्रसूते बहुवित्तयुक्तम्।।
नरेंद्रमान्यो वहुरत्नयुक्तः प्रभूतभृत्यं सुतनीतियुक्तम्।।१६।।

धनभाव में स्थित बुध और वृहस्पति ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में बुध और वृहस्पति ग्रह स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति धनवान् राजा द्वारा आदरणीय रत्नों से युक्त होता है। नौकरों से युक्त और पुत्रों से युक्त होता है। नीति के मार्ग पर चलता है।

अथ धनभावस्थितबु० शु० योगफलम्।।

सौम्यान्वितोदैत्यगुरुर्धनस्थोनरं प्रसूते गजवाजियुक्तम्।।
प्रभूतकोशं नयधर्मयुक्तं शास्त्रार्थविद्ब्राह्मणदेवभक्तम्।।१७।।

धनभाव में स्थित बुध और शुक्र ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में बुध और शुक्र ग्रह स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति हाथी घोड़ों की सम्पत्ति से युक्त और अधिक धनवान होता है। नीति के धर्म का व्याख्या करने वाला और शास्त्र के मर्म के अर्थ को जानता है। तथा ऐसा व्यक्ति देवताओं की भक्ति करता है और ब्राह्मणों में आस्था रखता है।

अथ धनभावस्थितबु० श० योगफलम्।।

सौम्यान्वितः सूर्यसुतोधनस्थे नरं प्रसूते धनहीनमुग्रम्।।
खलस्वभावं विभवैर्विहीनं कुमित्रसत्संगविगर्हितं च।।१८।।

धनभाव में स्थित बुध और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में बुध और शनि ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, दुष्ट और बैचेन रहने के स्वभाव वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सम्पत्ति और वैभव से हीन और दुष्ट व्यक्तियों की संगति के कारण मनुष्यों द्वारा त्याग दिया जाता है।

अथ धनभावस्थितवृ० शु० योगफलम्।।

जीवान्वितोदैत्यगुरुर्धनस्थो नरं प्रसूते नृपतिप्रधानम्।।
मानार्थशास्त्रैःस्तुतिशौर्ययुक्तं धर्म्माऽग्रणीयं विजयैःसभेतम्।।१९।।

धनभाव में स्थित वृहस्पति और शुक्र ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में वृहस्पति और शुक्र ग्रह स्थित

हो, तो ऐसा व्यक्ति धन और मान से युक्त शास्त्रों द्वारा स्तुतनीय वीरता का आचरण वाला धर्मात्माओं में आगे गिना जाता है। और राजाओं में श्रेष्ठ तथा निरंतर विजयी होता है।

अथ धनभावस्थित वृ० श० योगफलम्।।

जीवान्वितःसूर्यसुतोधनस्थः करोतिमर्त्यन्नृपपीडितांगम्।।
महारुजं सर्वसुखैर्विहीनं निसर्गलुब्धं रिपुवर्गयुक्तम्।।२०।।

धनभाव स्थित वृहस्पति और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में वृहस्पति और शनि ग्रह स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजा द्वारा दण्डनीय राजयोग से युक्त स्वभाव से लालची तथा शत्रुओं के समूह से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति राजयोग से भी युक्त होता है और सभी सुखों से हीन होता है। अर्थात् ऐसी ग्रह अवस्था को प्राप्त करने वाला व्यक्ति इन सभी कारणों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थितशु० श०योगफलम्।।

शुक्रान्वितः सूर्यसुतोधनस्थे नरं प्रसूते धनपुत्रहीनम्।।
सगुह्यरोगाऽभिहतप्रभावं मलीमसं रौद्रमतिं कुचेष्टम्।।२१।।

धनभाव में स्थित शुक्र और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में शुक्र और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति धनहीन, पुत्रहीन अर्थात् निर्धन और बिना पुत्रों का होता है। तथा गुप्तरोगी प्रभावहीन और निम्न रुप रंग वाला क्रोधी स्वभाववाला तथा वह ऐसी इच्छा करता है, जो समाज द्वारा निदंनीय होती है। अर्थात् समाज की नजरों में निंदा के योग्य कार्य करने वाला होता है।

❑❑❑

८ धनभाव में स्थित तीन ग्रहों का योग फल

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं० योगफलम्।।

धनस्थिताः सूर्य्यशशाङ्कभौमा नरं प्रकुर्वंति धनैर्विहीनम्।।
पराभिभूतं विगतप्रभावं नृशंसभावं प्रभुताविहीनम्।।१।।

धनभाव में स्थित तीन ग्रहों के योग फल का वर्णन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव सूर्य, चन्द्रमा और मंगल ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन तथा शत्रुओं से नष्ट हुआ मानवाला प्रभावहीन तथा यश अर्थात् बड़ाई से हीन होता है। और ऐसा व्यक्ति पापी होता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति पापकर्मों को करने वाला होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु० योगफलम्।।

सूर्य्येन्दुसौम्या यदिवित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति विसर्गभीरुम्।।
धियाविहीनं निधनं कुदारं कुकर्मसेवार्जितभूरिदुःखम्।।२।।

धनभाव में स्थित सूर्य चन्द्रमा और
बुध ग्रह का (स्थिति) फल योग का कथन

व्यख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य चन्द्रमा और बुध ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, मूर्ख डरने वाला स्वभाव रखता है। ऐसा व्यक्ति दुष्ट स्त्री से युक्त दुष्ट कार्यों को करने के माध्यम से अनेक दुखों को भोगता रहता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०वृ० योगफलम्।।

सूर्य्येन्दुजीवा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति कुपुत्रभाजम्।।
हिंसाधिकं कामपरं कृतघ्नं सुनिष्ठुरं त्रासकरं गुरुणाम्।।३।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा और वृहस्पति ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य चन्द्रमा और वृहस्पति ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति हिंसक दुष्ट पुत्रों से युक्त कामक्रीड़ा

या कला में प्रयत्नशील और कृतघ्नी कठोर हृदय वाला गुरुओं को भयभीत करता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०शु० योगफलम्।।

सूर्य्येन्दुशुक्रा यदिवित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वतिसुहृद्विरुद्धम्।।
बद्धासनं नातिधनं कुरूपं वृद्धाश्रयं मन्युसमन्वितंच।।४।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अपने मित्रों का शत्रु एक स्थान पर ही बैठता है। निर्धन कुरूप बूढ़ों का सहारा लेता है और मानयुक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०श० योगफलम्।।

सूर्य्येन्दुसौरायदिवित्तसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति कृतघ्नताढयम्।।
विदेशसेवासुरतः श्रमार्तं द्यूतप्रियं निर्गुणमल्पवित्तम्।।५।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा और शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, चन्द्रमा और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति किसी के उपकार को न मानने वाला। तथा दूसरे देश का भ्रमण (यात्रा) करने में रुचि रखता है। अधिक मेहनत करने से उचेट हुए मनवाला होता है। ऐसा व्यक्ति जुआ खेलता है। तथा निर्धन और गुणों से रहित होता है। अर्थात् गुणों की कमी होती है और वह बुरे कार्यों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०बु० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्या यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति धनेन हीनम्।।
दुष्टस्वभावं सुकृशाङ्गयष्टिंनिस्तब्धसेवाकृतभूरिवैरम्।।६।।

धनभाव में स्थित मंगल बुध और सूर्य ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, मंगल और बुध ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, बुरे स्वभाव का, कमजोर शरीर से युक्त, कमजोर कार्य करने वाला तथा अनेक शत्रुओं से घिरा रहता है।

अथ धनभावस्थितम् सू०मं०वृ० योगफलम्।।

सूर्य्यारजीव यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति कृतघ्नपापम्।।
बहुव्ययं सत्ययुतं कुपुत्रं त्रपाविहीनं गतसौहृदं च।।७।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल और वृहस्पति ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, मंगल और वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे के उपकार को न मानने वाला निर्लज्ज और मित्रों से रहित होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०शु० योगफलम्।।

सूर्य्यारशुक्रा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति विवेकहीनम्।।
हतप्रभा भूरिजनैर्निरस्तं कुसेवकं युद्धपरं गतस्वम्।।८।।

धनभाव में स्थित सूर्य मंगल और शुक्र ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, मंगल और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अविवेकी अर्थात् बुद्धिहीन तेज से रहित और दुष्ट नौकरों से युक्त, पुरुषों से परिव्यक्त, निर्धन और युद्धप्रिय होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौरा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति सुनिंदिताङ्गम्।।
गुणार्थहीनं कलहप्रियं च सदातुरं साधुजनैर्निरस्तम्।।९।।

धनंभाव में स्थित सूर्य, मंगल और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, मंगल और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा प्राणी निर्धन, दुर्गुणों से युक्त और कुरुप शरीर से युक्त होता है, ऐसा व्यक्ति लड़ाई-झगड़े से लगाव रखता है और निरंतर बेचैन रहता है तथा अच्छे और श्रेष्ठ पुरुष उससे सम्पर्क नहीं रखते।

अथ धनभावस्थित सू०बु०वृ० योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञजीवा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति वहुक्षताङ्गम्।।
निंदान्वितं दुष्टमतिप्रभावं जनाभिभूतं परतर्ककं च।।१०।।

धनभाव स्थित सूर्य, बुध और वृहस्पति ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, बुध, वृहस्पति ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निंदा का पात्र दुष्ट स्वभाव वाला तथा दुष्ट प्रभाव से युक्त तथा मनुष्यों में सम्मानहीन शत्रुओं से वाद-विवाद करने वाला होता है और ऐसा व्यक्ति शरीर से घावों से युक्त होता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति का शरीर जख्मों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०बु०शु० योगफलम्।।

सूर्यज्ञशुक्रा धनगा यदा स्युर्नरं प्रकुर्वन्ति सदा महोग्रम।।
सिंहात्मकं कामपरं सलोभं द्वंद्वैः समेतं कलहप्रियं च।।११।।

धनभाव में स्थित सूर्य, बुध और शुक्र ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, बुध और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा प्राणी निरंतर उग्रस्वभाव से युक्त लालची कामी, लड़ाई-झगड़े का प्रिय होता है और ऐसा व्यक्ति शेर की आत्मा से युक्त द्वंद्वता से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०बु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञमंदा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति हतस्वपक्षम्।।
दरिद्रमुग्रं गुणवर्जिताङ्गसदाभिभूतं मतिवर्जितं च।।१२।।

सूर्य, बुध और शनि ग्रह का धनभाव में स्थित और फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, बुध और शनि ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने हितकारी पुरुषों का हन्ता अत्यन्त निर्धन गुणों से हीन शरीर वाला निरंतर अभिमान से रहित और बुद्धिहीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०वृ०श० योगफलम्।।

सूर्य्याऽमरेज्याऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति बहुप्रकोपम्।।
रोगाभिभूतं पिशुनस्वभावं पुणयैर्विहीनं नितरां दरिद्रम्।।१३।।

धनभाव में स्थित सूर्य, वृहस्पति, शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, वृहस्पति और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक क्रोधी, अधिक रोगों से युक्त पापकर्मों से युक्त होता है तथा धार्मिक कार्यों से हीन, सदैव निर्धन रहता है।

अथ धनभावस्थित सू०वृ०शु० योगफलम्।।

सूर्य्याऽमरेज्या भृगुजा धनस्था नरं प्रकुंर्वति जडस्वभावम्।।
विद्याविवेकैरहितं गतस्वं पराजितं लोभसमन्वितं च।।१४।।

धनभाव में स्थित सूर्य, वृहस्पति और शुक्र ग्रह की स्थिति और फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, वृहस्पति और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मूर्ख, बुद्धिहीन और विद्याहीन होता है। ऐसा व्यक्ति निर्धन, बहुत लालची होता है और सदा पराजित होता है।

अथ धनभावस्थित सू०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्याऽसुरेज्यार्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति कुधर्मरक्तम्।।
दुष्टस्वभावं विनयेनहीनं श्रमान्वितं दुर्जनचेष्टितं च।।१५।।

धनभाव में स्थित सूर्य, शुक्र और शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, शुक्र और शनि

ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दुष्ट स्वभाव से युक्त विनम्र परिश्रमी होता है और अधम धर्म का प्रेमी तथा दुष्ट लोगों का साथ करता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु० योगफलम्।।

चंद्रारसौम्या यदि वित्तसंस्था धनेनहीनः कटुवाक्यरक्तम्।।
विहीनसंतापमतिप्रकोपं रोगाऽन्वितं बंधुजनैर्विमुक्तम्।।१६।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल और बुध ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, मंगल और बुध ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन कटुवादी, संतापहीन, अत्यन्त क्रोधी, रोगी और सगे-सम्बन्धियों से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०वृ० योगफलम्।।

चंद्रार्कजीवा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति मलिम्लुचं च।।
दीनं विहीनं सुतवित्तदारैस्तृष्णाधिकं भूरिरुजासमेतम्।।१७।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति चोर, दीन, पुत्र और स्त्रीहीन, रोगी तथा तृष्णा से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०शु० योगफलम्।।

चंद्रारशुक्रा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति कफादिरोगैः।।
सपीडिताङ्गं गुरुभक्तिहीनं नयातिगं शास्त्रविहीनकृत्यम्।।१८।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल और शुक्र ग्रह की स्थिति फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, मंगल और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नीतिविहिन शास्त्रों से रहित कर्म को करता है और कफ रोग से युक्त गुरुजनों की भक्ति से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०श० योगफलम्।।

चंद्रारमंदा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुर्वति निसर्गदुष्टम्।।
पानप्रियं द्यूतमतिं विरक्तं स्वबन्धुवर्गेण विवर्जितं च।।१९।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चन्द्रमा मंगल और शनि ग्रह

स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दुष्ट स्वभाव से युक्त शराबी, जुआरी, बुद्धिहीन तथा बान्धवों से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित चं०बु०वृ० योगफलम्।।

चंद्रज्ञजीवा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुर्वंति नराधिपं च।।
महाप्रभावं नयनाभिरामं सौभाग्यविद्याधनधान्यभाजम्।।२०।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध और वृहस्पति ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, बुध और वृहस्पति ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक प्रभाव से युक्त राजा द्वारा सम्मानित खूबसूरत आंखों से युक्त सौभाग्यशाली अधिक विद्वान और धन-धान्य से युक्त होता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति सर्वसम्पदाओं से युक्त और सुखी होता है।

अथ धनभाावस्थित चं०बु०शु० योगफलम्।।

चंद्रज्ञशुक्रा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति धनेन युक्तम्।।
प्रभूतमित्रागम रर्मयुक्तं विद्याधिकं प्रीतियुतं नृपाणाम्।।२१।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध और शुक्र ग्रह का फलयोग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, बुध और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक मित्रों से युक्त वेदों को जानने में प्रयत्नशील धनवान विद्या से युक्त तथा राजाओं का प्रेमी होता है।

अथ धनभावस्थित चं०बु०श० योगफलम्।।

चंद्रज्ञसौरा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुंर्वति हतप्रभावम्।।
बहुव्ययं स्त्रीव्यसनाभिभूतं दानेनयुक्तं जनवंचकं च।।२२।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, बुध और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति प्रभावहीन, अधिक खर्च करने वाला स्त्रियों के व्यसनों से युक्त, दानी और ठग होता है।

अथ धनभावस्थित च०वृ०शु० योगफलम्।।

चंद्रामरेज्याऽसुरपूजिताङ्गा धनस्थिता: सौख्ययुतं मनुष्यम्।।
महीपतिं भूरियशोभिभूतं प्रज्ञाधिकं कुत्सितकर्मयुक्तम्।।२३।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, वृहस्पति

और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राजा के समान यशस्वी, अधिक बुद्धिमान निंदा योग्य कर्म करने वाला सौम्य युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित चं०वृ०श० योगफलम्।।

चंद्राऽमरेज्याऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वंति सुवीतरोपम्।।
व्रतोपवासैर्नियमैः समेतं मनोजरूपंप्रमदामभीष्टम्।।२४।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, वृहस्पति और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में चन्द्रमा, वृहस्पति और शनि ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति क्रोधहीन, नियमों का पालन करने वाला, व्रत और उपवास करने वाला कामदेव के समान सुंदर तथा स्त्रियों की कामना को पूर्ण करता है।

अथ धनभावस्थित चं०शु०श० योगफलम्।।

चंद्राऽसुरेज्यार्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति नयेन हीनम्।।
धनैर्युतं स्त्रीजनकेलिचित्तं गुणान्वितं द्रव्यव्ययं करोति।।२५।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, शुक्र और शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चन्द्रमा, शुक्र और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति धन से युक्त स्त्रियों के क्रीड़ा में प्रेम करने वाला नीतिहीन गुणों से युक्त तथा खर्चीला होता है।

अथ धनभावस्थित मं०बु०वृ० योगफलम्।।

भौमज्ञजीवा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुर्वंति विहीनभावम्।।
निःस्वं सुदुष्टं परदारभक्तं वृथाटनं कामनिपीडतांगम्।।२६।।

धनभाव में स्थित मंगल, बुध और वृहस्पति ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय मंगल, बुध और वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रभावहीन निर्धन, दुष्ट, परस्त्री में आसक्त निरर्थक भ्रमण प्रेमी तथा काम से पीड़ित शरीर से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित मं०बु०शु० योगफलम्।।

भौमज्ञशुक्रा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुर्वंति नयप्रधानम्।।
कृषीबलं शाकटिकंसमृद्धं चतुष्पदाढयं बहुसौहृदंच।।२७।।

धनभाव में स्थित मंगल, बुध और शुक्र ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में मंगल, बुध और शनि ग्रह स्थित

हों, तो ऐसा व्यक्ति नीतिमान, खेती कराता है तथा रथों गाड़ियों और बहली संपत्ति से युक्त होता है। चौपाया धन से युक्त, मित्रों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित मं०बु०श० योगफलम्।।

भौमज्ञशौरा यदि वित्तसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति बहुप्रकोपम्।।
प्रियामिपं शास्त्ररुचिं सहिष्णुं व्ययाधिकं दुःखयुतंसदैव।।२८।।

धनभाव में स्थित मंगल, बुध और शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में मंगल, बुध और शनि ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति क्रोधी, मांस खाने वाला, शास्त्र प्रिय, सहनशक्ति युक्त खर्चीला और निरंतर दुःखी रहता है।

अथ धनभावस्थित मं०वृ०शु० योगफलम्।।

भौमाऽमरेज्याऽसुरपूजिताङ्गा धनस्थिता: शिल्पकलाप्रवीण:।।
दक्षान्वितं भूरितपोनियुक्तं सुरम्यदेहे द्विजदेवसक्तम्।।२९।।

धनभाव में स्थित मंगल, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में मंगल, वृहस्पति और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति शिल्पी दीक्षा से युक्त, तपस्वी सुन्दर शरीर से युक्त देवताओं और ब्राह्मणों का भक्त होता है।

अथ धनभावस्थित मं०वृ०श० योगफलम्।।

भौमाऽमरेज्याऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति सुवस्त्रभाजम्।।
भौगाधिकं स्त्रीदयितं प्रगल्भं श्रुतानुरक्तं सधनं सुरूपम्।।३०।।

धनभाव में स्थित मंगल, वृहस्पति और शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में मंगल, वृहस्पति और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति उत्तम वस्त्रों का प्रिय अत्यन्त भोगी, स्त्री प्रेमी, वेदों का ज्ञाता, प्रगल्भ धनवान और अत्यन्त सुन्दर होता है।

अथ धनभावस्थित मं०शु०श० योगफलम्।।

भौमाऽसुरेज्याऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति विहीनवित्तम्।।
व्यायधिकं कोपयुतं कृतघ्नं सदातुरं साधुजनेन द्वेषम।।३१।।

धनभाव में स्थित मंगल, शुक्र और शनि ग्रह के योग का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मंगल, शुक्र और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, खर्चीला, क्रोधी, दूसरे के उपकार को

न मानने वाला, निरंतर व्यग्र रहने वाला अर्थात् सदा बेचैन रहने वाला सत्पुरुषों का शत्रु होता है।

अथ धनभावस्थित बु०वृ०शु० योगफलम्।।

सौम्याऽमरेज्याऽसुरपूजिताङ्गा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
महीपतिं वाजिगजालियुक्तं प्रभृतवित्तं स्वजनानुसक्तम्।। ३२।।

धनभाव में स्थित बुध, वृहस्पति और शुक्र ग्रह के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में बुध, वृहस्पति और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राज्य या राजा के समान घोड़े, हाथियों की संपत्ति से युक्त राजा के समान अधिक धनवान् और अपने बन्धु-बान्धवों का प्रेमी होता है।

अथ धनभावस्थित बु०वृ०श० योगफलम्।।

सौम्याऽमरेज्यार्कसुता धनस्थाःकुर्वन्ति पुणंय प्रवरं मनुष्यम्।।
जनप्रसिद्धं बहुसार्थवादं दयाधिकं कीर्तिसमन्वितं च।। ३३।।

धनभाव में स्थित बुध, वृहस्पति और शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में बुध, वृहस्पति और शनि ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पुण्यवान, अनेकार्थ का भाषी, पुरुषों में प्रसिद्धी युक्त दयावान और कीर्तिवान होता है।

अथ धनभावस्थित बु०शु०श० योगफलम्।।

सौम्याऽसुरेज्याऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति शुभोरुकुक्षिम्।।
नानार्थशास्त्रागमसत्यरक्तं दयाधिकं देवद्विजप्रसक्तम्।। ३४।।

धनभाव में स्थित बुध, शुक्र और शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में बुध, शुक्र और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अनेकों शास्त्रों के अर्थ को जानता है। वेदों के ज्ञान से युक्त दयालु देवता और ब्राह्मणों का पुजारी सुंदर जंघा और सुंदर कुक्षी वाला होता है।

अथ धनभावस्थित वृ०शु०श० योगफलम्।।

जीवाऽसुरेज्याऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुतार्थयुक्तम्।।
मेधाविनं नीतिपरं सुखाढयं प्रियाधिकं कांतिसमन्वितं च।। ३५।।

धनभाव में स्थित वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में वृहस्पति शुक्र और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पुत्रों से युक्त, धनवान, विवेकी, नीति के तत्व को जानता है। ऐसा व्यक्ति सुखी कांति से युक्त अत्यन्त प्रेमी स्वभाव को होता है। □□□

१ धनभाव में स्थित चार ग्रहों का योग फल

अथ धनभाविस्थित सू०चं०मं०बु० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमेन्दुसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति कुदेशरक्तम्।।
कुधर्मभाजं कुकलत्रयुक्तं कुपुत्रदोषाकुलितं सदैव।।१।।

धनभाव में स्थित चार ग्रहों के योग के फल का वर्णन।

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और बुध ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नीच देश में रहता है। नीच धर्म का साथ देता है और ऐसे धर्म के मानने वालों के साथ रहता है। नीच और दुष्ट स्त्री से प्रेम करता है तथा दुष्ट पुत्रों के दुर्गुणों से हमेशा बेचैन और दुःखी रहता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०वृ० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाऽमरपूजिताङ्गा धनस्थिताःशीलदयाविहीनम्।।
विनष्टधर्मं मतिसत्यहीनं श्लेष्माधिकं कामकलाप्रवीणम्।।२।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति ग्रहों के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति और मंगल ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति झूठा कफ स्वभाव से युक्त काम क्रीडा में चालाक दुःशील, निर्दयी और धर्म से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०शु० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाऽसुरपूजिताङ्गा धनस्थिता दीनविषादशीलम्।।
मलीमसं त्रासकरं कृतघ्नं श्रमाकुलं ख्यातिविवर्जितं च।।३।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शुक्र ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दीन, विवादी, शीलयुक्त और मलिन स्वभाव वाला भयभीत करने वाला, दूसरे द्वारा किए गये उपकार न ही मानता है। और

ऐसा व्यक्ति अधिक परिश्रम करने से बेचैन मन वाला और प्रभाव और प्रसिद्धि से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०श० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वंति विशीर्णदंतम्।।
लंबोदरं स्वल्परुचिं सुकृष्णंविकल्पवाक्यंजनताविरुद्धम्।।४।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा और मंगल, शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में सूर्य, चन्द्रमा, शनि और मंगल ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति लम्बे पेट से युक्त, दूर-दूर, दांतो से युक्त, कम इच्दा वाला काले रंग का सदिग्ध वाणी बोलता है तथा पुरुषत्व से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०वृ० योगफलम्।।

रीवन्दुसौम्याःसगुरा धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति हुताशवृत्तिम्।।
केशाधिकं वातकफार्दिताङ्गं तृष्णाधिकं भूरिखलान्वितं च।।५।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध और वृहस्पति ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस पुरुष के जन्म के समय में सूर्य, चन्द्रमा, बुध और वृहस्पति ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त दुःखों से क्लेशों से युक्त वात और कफ रोगी होता है। अत्यधिक तृष्णा स्वभाव वाला और दुष्टों का साथ करता है। ऐसा व्यक्ति आग से सम्बन्धित कार्य करता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०शु० योगफलम्।।

रवीन्दुसौम्याऽसुरपूजितांगा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
लिङ्गव्यथार्तं कृतकस्वभावं स्वल्पात्मजं स्त्रीजनकेलिलोलम्।।६।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध और शुक्र ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, चन्द्रमा, बुध और शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति लिंग सम्बन्धी दुःख से युक्त होता है। सच्चा, कम पुत्रों से युक्त तथा स्त्रियों की क्रीड़ा में चलायमान मन वाला होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०श० योगफलम्।।

रवीन्दुसौम्यार्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति शिरोर्तिभाजम्।।
मलिम्लुचं वातकफातियुक्तं सदाविरक्तं निजबन्धुवर्गे।।७।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, चन्द्रमा, बुध और शनि

ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सिर का रोगी, चोर, वात और कफ रोगी तथा निरंतर अपने भाई और कुटुम्बों से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०वृ०शु० योगफलम्।।

रवीन्दुजीवाभृगुजा धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति जड़स्वभावम्।।
विरक्तपौरं व्यथितं कृतघ्नं सुनिर्ष्ठुरं भीतिसमन्वितं च।।८।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, चन्द्रमा और वृहस्पति, शुक्र ग्रह स्थित हों, तो ऐसा प्राणी मूर्ख जंगल में रहता है। दुःखों से युक्त, कृतघ्नी, कठोर हृदय वाला और भयभीत रहता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०वृ०श० योगफलम्।।

रवीन्दुजीवार्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति सुदीर्घकेशम्।।
पराडाखं साधुगुरुद्विजानां परान्नपुष्टं नृपपीडिताङ्गम्।।९।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति, शुक्र ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बड़े बालों वाला साधुओं और ब्राह्मणों के द्वारा त्यागा हुआ दूसरे के अन्न से जीने वाला राजा द्वारा शारीरिक दण्ड का भागीदार रहता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०श० योगफलम्।।

रवीन्दुशुक्रार्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति विहीनपुत्रम्।।
न्यूनाङ्गसेवाधिकगात्रकं च दुष्टासनं भोगविवर्जितं च।।१०।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध और शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में उपरोक्त ये चारों ग्रह धनभाव स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पुत्रहीन, अंग में न्यूनता से युक्त अर्थात् अंगों में कमी वाला व्यक्ति की सेवा करता है और स्वयं शरीर के अंगों में अधिकता को धारण करने वाला अर्थात् शरीर के अंग अधिक होते हैं। खराब भोजन करता है, निरन्तर भागों से हीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०बु०मं०वृ० योगफलम्।।

सूर्य्याऽरसौम्याः सगुराः धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति विशीलमुग्रम्।।
वैध्यात्मकं स्त्रीचपलं कुनेत्रं व्ययाधिकं पापसमन्वितं च।।११।।

धनभाव में स्थित सूर्य, बुध, मंगल वृहस्पति ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में धनभाव में ये ग्रह स्थित हों, तो

ऐसा व्यक्ति शीलहीन तीव्र स्वभाव से युक्त बंध्या स्त्री से युक्त स्त्रियों में चलायमान मन वाला निन्दा योग्य आंखों से युक्त, अधिक खर्चीला और पापी होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०बु०शु० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्याऽसुरपूजितांगा नरं प्रकुंर्वति सदा धनस्थाः।।
पापेन युक्तं सुकलत्रमुक्तं सुबंधुहीनं विषयात्मकं च।।१२।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पापी, उत्तम पत्नी से हीन, श्रेष्ठ भाइयों से हीन और विषय-वासनाओं में लिप्त रहने वाला होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०बु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्यार्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वन्ति क्षतिप्रदग्धम्।।
भयान्वितं दम्भमयं समापं शिष्योपदेशेन प्रवीणनित्यम्।।१३।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में उपरोक्त ग्रह धनभाव में स्थित होते हैं तो ऐसा प्राणी हानिपूर्वक, दाग्धित शरीर से युक्त, भय से युक्त, दम्भी पाप करने वाला तथा शिष्यों को चतुराई से उपदेश देता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०वृ०शु० योगफलम्।।

सूर्य्यारजीवाऽभृगुजा धनस्था नरं प्रकुंर्वति सुनेत्रजिह्वम्।।
गतः स्वकंधर्मक्रियाविहीनं प्रभूतदोषं सततं कृतध्नम्।।१४।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, वृहस्पति, और शुक्र ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में से चारों ग्रह धनभाव में स्थित होते हैं तो ऐसा व्यक्ति सुंदर आंखों वाला, श्रेष्ठ वक्ता, निर्धन, धर्म हीन, दोषयुक्त और कृतघ्नी होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०वृ०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारजीवाऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति सदाप्रकोपम्।।
श्रमाधिकं दुष्टमतिं नृशंसं व्यपेत लज्जावनिताप्रमुक्तम्।।१५।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शनि ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये चारों ग्रह धनभाव में स्थित

हों, तो ऐसा व्यक्ति क्रोधी, परिश्रमी, दुष्ट बुद्धियुक्त पापी को मारने वाला, निर्लज्ज स्त्री द्वारा परिव्यक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारशुक्राऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वंति सकष्टभाजम्।।
धर्म्मैर्विहीनं श्रुतिसौख्यहीनं पापप्रसक्तं जनताविरुद्धम्।।१६।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त चारों ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दुःखी, धर्महीन, वेद और सुखों से हीन, पापी और मनुष्य के गुणों का उल्लंघन करने वाला होता है।

अथ धनभावस्थित सू०बु०वृ०शु० योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञजीवाभृगुजा धनस्था नरं प्रकुर्वंति सदातुरं च।।
रोगोभिभूतं कृशमल्पसत्यं जड़ात्मकं दोषकथानुरक्तम्।।१७।।

धनभाव में स्थित सूर्य, बुध, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में उपरोक्त ग्रह धनभाव में स्थित होते हैं, तो ऐसा प्राणी निरंतर बेचैन, रोगी, कमजोर शरीर वाला अल्प सत्य से युक्त, मूर्ख तथा पाप से भरी हुई कथाओं का श्रवण और मनन करता है।

अथ धनभावस्थित सू०बु०वृ०श० योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञजीवार्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वंति धनेन हीनम्।।
तृष्णाधिकं कामपरं रुजार्तं कुरूपनेत्रं हतबन्धुसौख्यम्।।१८।।

धनभाव में स्थित सूर्य, बुध, वृहस्पति और शनि ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में उपरोक्त ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन तृष्णाओं से युक्त, कामी, रोगी डरावनी शक्ल से युक्त खराब आंखों से युक्त तथा भाई के सुख को छीनता है।

अथ धनभावस्थित सू०बु०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञशुक्राऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुर्वंति विधानदक्षम्।।
असह्यचयं पापमतिं नृशंसं विदेशयानं प्रभुताविहीनम्।।१९।।

धनभाव में स्थित सूर्य, बुध, शुक्र, शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—उपरोक्त ग्रह जिस प्राणी के धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति

नीच कार्य में धन खर्च करता है। पापबुद्धि से युक्त, हिंसा करने वाला, दूसरे देशों में घूमता है और प्रभुत्वहीन विधान करने में चालाक होता है।

अथ धनभावस्थित सू०वृ०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्याऽमरेज्याभृगुजाऽर्कपुत्रा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
विद्याविवेकान्वितशत्रुपक्षं निहंति नित्यं विजयैः समेतम्।।२०।।

धनभाव में स्थित सूर्य, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में उपरोक्त ग्रह स्थित हो, तो ऐसा प्राणी विद्वान, विवेकी तथा शत्रुओं को निरंतर पराजित करता है और विजयी होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु०वृ० योगफलम्।।

चंद्रारसौम्याऽमरपूजिताङ्गा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
मुनिप्रियं शास्त्रकथानुरक्तं भक्तं द्विजानां नयनाभिरामम्।।२१।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, बुध और वृहस्पति ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में उपरोक्त, ये सभी ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति ऋषि, मुनियों द्वारा आदरणीय और शास्त्र कथाओं में प्रयत्नशील रहता है। तथा ऐसा व्यक्ति अत्यन्त सुन्दर आंखों वाला तथा ब्राह्मणों की सेवा करता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु०शु० योगफलम्।।

चंद्रारसौम्याऽसुरपूजिताङ्गा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
तीर्थानुरक्तं व्रतशास्त्रसक्तं सुपूजितं भूपसमं सदैव।।२२।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध, मंगल और शुक्र ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के धनभाव में ये उपरोक्त ग्रह स्थित हों, तो ऐसा प्राणी तीर्थों में घूमने वाला, व्रत करने वाला और शास्त्र ज्ञान अर्जित करने में प्रयत्नशील रहता है तथा ऐसा व्यक्ति राजा की तरह निरंतर पूजनीय होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु०श० योगफलम्।।

चंद्रारसौम्यार्कसुता धनसथा नरं प्रकुंर्वति धनप्रधानम्।।
सस्याश्वगोवस्त्रसुवर्णभाजं ख्यातं कविंधर्मरतिंसुरूपम्।।२३।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, बुध और शनि ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय उपरोक्त ग्रह धनभाव में स्थित हो,

तो ऐसा व्यक्ति धनवानों में श्रेष्ठ, अन्न, घोड़ा, गायें, वस्त्र तथा स्वर्ण के संपत्ति से युक्त संसार में कीर्ति वाला कवि धार्मिक और सुंदर शरीर रुप से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०वृ०श० योगफलम्।।

चंद्रारजीवाऽसुरपूजिताङ्गा नरं प्रकुर्वन्ति सदा धनस्थाः।।
विद्याविहीनं गणनाप्रधानं मेधाविनं ब्राह्मणवल्लभं च।।२४।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये चारों ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विद्या से रहित, मानवों में आगे गिना जाने वाला, बुद्धिमान और ब्राह्मणों की सेवा करता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०वृ०श० योगफलम्।।

चंद्रारजीवाऽर्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति जयेन युक्तम्।।
सुशीलवन्तं च विशालवित्तं नरेन्द्रपूज्यं व्रतलालसंच।।२५।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, वृहस्पति और शनि ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त चारों ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा प्राणी विजयी, सुंदर, शीलयुक्त, अधिक धनी, राजाओं से सम्मानित तथा व्रत उपवास रखता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०शु०श० योगफलम्।।

चंद्रारशुक्रार्कसुता धनस्थिता नरं प्रकुंर्वति जयेनयुक्तम्।।
नानाश्ववस्त्रद्रविणैः समेतं विमुक्तरोगं गुणसंयुतं च।।२६।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, शुक्र और शनि ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में ये ग्रह स्थित हो, तो ऐसा प्राणी विजयी और वस्त्र, घोड़े, अनेक आभूषणों से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति निरोगी और गुणी होता है।

अथ धनभावस्थित चं०बु०वृ०शु० योगफलम्।।

चंद्रज्ञजीवाऽसुरपूजितांगा धनस्थिता देवमखानुरक्तम्।।
सत्साधुसेवानिरतं प्रगल्भं महाधनं शास्त्ररतं सदैव।।२७।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति
और शुक्र ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये उपरोक्त चारों ग्रह स्थित हों,

तो ऐसा व्यक्ति देवताओं के लिए यज्ञ करता है। उत्तम साधुओं की सेवा करता है। प्रगल्भ, मणियों, मुक्ताओं जैसे बहुमूल्य पदार्थों से युक्त तथा शास्त्र प्रेमी होता है।

अथ धनभावस्थित चं०बु०वृ०श० योगफलम्।।

चंद्रज्ञजीवार्कसुता धनस्थिता नरं प्रकुर्वंति रतिद्विजानाम्।।
मनोज्ञदेहं स्थितपूर्ववाक्यं सदाप्रहृष्टं नृपतेरभीष्टम्।।२८।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त चारों ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति ब्राह्मणों की सेवा करता है, पहले कहे गए वाक्यों को याद दिलाता है, प्रसन्नचित्त तथा राजाओं के द्वारा सम्मानित होता है तथा कामदेव के समान रुप वाला होता है।

अथ धनभावस्थित चं०बु०शु०श० योगफलम्।।

चन्द्रज्ञशुक्राऽर्कसुता धनस्थिता नरं प्रकुर्वन्ति गुणाभिरामम्।।
नृपप्रधानं प्रणतारिपक्षं प्रभूतकोशान्वितधर्मधृष्टम्।।२९।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध, शुक्र और शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त स्थित हों, तो ऐसा प्राणी उत्तम गुणों के युक्त शत्रुओं द्वारा स्तुति का पात्र धर्म में अडिग धनवान् होता है तथा राजाओं में श्रेष्ठ होता है।

अथ धनभावस्थित चं०वृ०शु०श० योगफलम्।।

चन्द्रामरेज्याऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिता:संजनयन्ति मर्त्यम्।।
नरेन्द्रपूज्यं सचिवं सदैव प्रहृष्टसौख्यं प्रथितप्रभावम्।।३०।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, वृहस्पति, शुक्र और
शनि ग्रह का फलयोग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त चारों ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राजाओं द्वारा आदरणीय, राजाओं का मंत्री होता है। ऐसा व्यक्ति सौरण्य भोगी, आगे गिना जाने वाला प्रभावशाली मनुष्यों से राजाओं द्वारा पूजनीय और प्रसन्नचित्त वाला होता है।

अथ धनभावस्थित मं०बु०वृ०शु० योगफलम्।।

भौमज्ञजीवाऽसुरपूजितांगा धनस्थिता: प्रीतिकरं द्विजानाम्।।
प्रख्यातवीर्यं नृपकार्यदक्षं क्षमान्वितं सर्वसुखै:समेतम्।।३१।।

धनभाव में स्थित मंगल, बुध, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में से उपरोक्त ग्रह स्थित हों, तो ऐसा प्राणी ब्राह्मणों का प्रेमी, प्रख्यात, बलवान्, राजकार्य में चालाक क्षमाशील और अनेक सौख्यों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित मं०बु०वृ०श० योगफलम्।।

भौमज्ञजीवार्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति विदेशसंगम्।।
धनागमं साधुसमागमेन आरामवापी प्रकरोति नित्यम्।। ३२।।

धनभाव में स्थित मंगल, बुध, वृहस्पति और शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में ये चारों ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति परेदशसंगी, सत्पुरुषों से धन प्राप्त करता है तथा बाग, तालाब, बगीचा आदि नित्य लगाता है।

अथ धनभावस्थित मं०बु०शु०श० योगफलम्।।

भौमज्ञशुक्रार्कसुता धनस्था नरं प्रकुंर्वति विनीतदारम्।।
रंम्याकृतिं साधु जनानुरक्तं सतामभीष्टं वहुसस्यवित्तम्।। ३३।।

धनभाव में स्थित मंगल, बुध, शुक्र और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में ये उपरोक्त ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नम्र स्त्री से युक्त, अत्यन्त मनोहर रुप आकार से युक्त सत्पुरुषों का प्रेमी और सत्पुरुषों का प्रिय होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक अन्न और धन से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित मं०वृ०शृ०श० योगफलम्।।

भौमामरेज्याऽसुरपूज्यसौरा धनाश्रिताः तंजनयंति मर्त्यम्।।
प्रभूतसत्यं वहुसौख्यमुक्तं कविं प्रधानं नियमैः समेतम्।। ३४।।

धनभाव में स्थित मंगल, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का योगफल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में मंगल, वृहस्पति और शुक्र तथा शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक सौख्य स्वभाव से युक्त नियमों का पालन करता है। ऐसा व्यक्ति अधिक अन्न से युक्त कविश्रेष्ठ होता है।

अथ धनभावस्थित बु०वृ०शु०श० योगफलम्।।

बुधामरेज्याऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
कलासुदक्षं क्षयितारिपक्षं सुकीर्तियुक्तं धनधान्य भाजम्।।३५।।

धनभाव में स्थित बुध, वृहस्पति, शुक्र शनि के याग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में बुध, वृहस्पति और शुक्र, शनि ग्रह स्थित हो, तो ऐसा प्राणी सभी प्रकार के कलाओं में प्रवीण होता है। अपने शत्रुओं को नष्ट करता है। तथा यशस्वी, अन्न भोगी होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक धनवान होता है।

❑❑❑

१० धनभाव में स्थित पांच ग्रहों का योग फल

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०बु०वृ० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमज्ञसुरेन्द्रपूज्या धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
केल्शान्वितं शूरमतिं सलुब्धं विवेकहीनं लघुगात्रकं च।।१।।

धनभाव में स्थित पांचों ग्रहों के फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और वृहस्पति ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक दुख और क्लेश से युक्त, वीर और पराक्रमी बुद्धि से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक लालची विवेकहीन तथा छोटे शरीर से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०बु०शु० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमज्ञसिता धनस्था नरं प्रकुर्वंति सुहृद्विरोधम्।।
तेजोविहीनं ह्यनिलस्वभावं सुनिष्ठुरं पापमतिं सदैव।।२।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, चन्द्रमा, बुध और शुक्र ग्रह का फलयोग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मित्रों का विरोधी वात प्रकृति से युक्त होता है तथा ऐसा व्यक्ति निस्तेज कठोर होता है तथा उसकी बुद्धि निरंतर पाप कार्यों में लगी रहती है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०बु०श० योगफलम्।।

सूर्य्येन्दुभौमज्ञदिनेशपुत्रा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
निशांधकं कामरतं हतस्वं प्रभूतवैरं मतिवर्जितंच।।३।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और शनि ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा प्राणी रतौंधी रोग से युक्त, कामी, निर्धन तथा लोगों का बैरी और विवेकहीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०वृ०शु० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाऽमरपूज्यशुक्रा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
क्रियाविहीनं विधनं कुचैलं रोगाभिभूतं परदेशरक्तम्।।४।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चंद्रमा, मंगल, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन निम्नचित्त युक्त अनेक रोगों से दुखी होता है, ऐसा व्यक्ति कार्य नहीं करता है तथा दूसरे देशों में घूमने का शौकीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०वृ०श० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाऽमरपूज्यसौरा धनस्थिता नीतिविरुद्धकृत्यम्।।
परोपकारेण विवर्जितांगं सुदीनवृत्तिं हतपौरुषं च।।५।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल,
वृहस्पति और शनि ग्रहों का योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे का उपकार नहीं करता है, दीन और शक्तिहीन होता है। ऐसा व्यक्ति नीति से हीन आचरण वाला होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०शु०श० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिता नीचजनानुरक्तम्।।
व्रणार्दिताङ्गं क्षतजव्यथार्तं पापेन संयुक्तमतिप्रकोपम्।।६।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, शुक्र और शनि ग्रह का फलयोग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा प्राणी दुष्ट पुरुषों का प्रेमी, दुखी शरीर और व्रण शरीर से युक्त, शरीर पर अनेक होने वाले घावों से पीड़ित, क्लेश युक्त, पापी तथा अधिक क्रोधी होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०वृ०शु० योगफलम्।।

रवीन्दुसौम्याऽमरपूज्यशुक्रा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
दर्पोत्कटं क्रोधयुतं शुभाङ्गंसदातुरं स्त्रीजनवृन्दसेवितम्।।७।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध,
वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव

में स्थित हो, तो ऐसा प्राणी अधिक घमंडी, क्रोधी और अत्यन्त सुन्दर शरीर से युक्त होता है। निरंतर बेचैन रहता है तथा स्त्रियों के समाज में पूज्यनीय होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०वृ०श० योगफलम्।।

रवीन्दुसौम्याऽमरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
तृष्णाधिकं क्रोधयुतं गतांशं विधर्मिणं भीतिसमन्वितं च।।८।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शनि ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में धनभाव में सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शनि ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक क्रोधी, शक्ति रहित अधार्मिक तथा भयभीत रहता है। ऐसा व्यक्ति अधिक तृष्णा से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०शु०श० योगफलम्।।

रवीन्दुसौम्याऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
दयार्द्रचित्तंगणिकानुरक्तं गजाश्वयुक्तं धनधान्ययुक्तम्।।९।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र और शनि ग्रह का फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति वेश्यागामी होता है। ऐसा व्यक्ति दयालु और घोड़े, हाथियों की सम्पत्ति से युक्त होता है तथा धनवान होता है। अधिक अन्न धन से भी युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०वृ०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्येन्दुजीवाऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
निःस्वं भयार्तं बहुपापयुक्तं सुजानुरूपं वहुपुणयभाजम्।।१०।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में उपरोक्त ये पांचों ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, पापी होता है। ऐसा व्यक्ति डरता रहता है और सुंदर जंघा से युक्त सुंदर रूप वाला होता है। ऐसा व्यक्ति पुण्य कार्यों को करके पुण्य का भागीदार होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०बु०वृ०शु० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्याऽमरपूज्यशुक्रा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।

निद्यं कृतघ्नं परकर्मभाजं दुःशीलदारं गतपौरुषं च।।११।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निंदा का पात्र होता है। दूसरे के कार्य का भागीदार होता है। दूसरे के उपकार को न मानने वाला दुष्ट स्वभाव की स्त्री से युक्त शक्तिहीन होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०बु०वृ०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्याऽमरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
दुष्टात्मकं वंचनकं कृतघ्नं विरुद्धचेष्टं प्रमदाविरुद्धम्।।१२।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, वृहस्पति और शनि का फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दुष्ट, ठग, दूसरे के उपकार को नहीं मानता, इच्छाहीन तथा स्त्री के चित्त का विरोधी होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०बु०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्याऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
परस्वहंता व्यवहारदक्षोजितं रिपूणां सुतवित्तहीनम्।।१३।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे के धन को छीनने वाला या चुराने वाला व्यवहार में चालाक शत्रु पर विजयी होता है तथा पुत्रहीन धनहीन होता है।

अथ धनभावस्थित सु०मं०वृ०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारजीवाऽसुरपूज्यसौरा नरं प्रकुंर्वति सदा धनस्थाः।।
सदा विनीतं सुतावित्तहीनं कुमार्गरक्तं व्यसनाभिभूतम्।।१४।।

इसके बाद धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निरंतर नम्र, निर्धन और पुत्रों से हीन होता है। कुमार्गी अर्थात् गलत रास्ते पर चलने वाला व्यसनों में लिप्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०बु०वृ०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञजीवाऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
धनेन हीनं व्यसनेन युक्तं सुनिर्दयं शास्त्रपराङ्मुखं च।।१५।।

धनभाव में स्थित सूर्य, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये उपरोक्त पांचों ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, व्यसनों से युक्त, शास्त्र का विरोधी और निर्दयी होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु०वृ०शु० योगफलम्।।

चंद्रारसौम्याऽमरपूज्यशुका ध नस्थितःसंजनयंति मर्त्यम्।।
स्वबंधुकृत्येषु सदानुरक्तं प्रभूतकोशं बहुवाहनाढ्यम्।।१६।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति भाई के कार्यों को करता है। धनवान तथा अनेक वाहनों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु०वृ०श० योगफलम्।

चंद्रारसौम्याऽमरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
सुमित्रयुक्तं प्रणतं धनाढ्यं नृपासनं श्वासगदानुरक्तम्।।१७।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति और शनि ग्रह का फल योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में पांचों ग्रह धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति उत्तम मित्रों से युक्त, विनम्र धनवान, श्वास रोग से पीड़ित होता है। और राजा के आसन को प्राप्त करता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु०शु०श० योगफलम्।।

चंद्रारसौम्याऽसुरपूज्यसौरा नरं प्रकुर्वंति सदा धनस्थाः।।
विद्याविवेकं विजयेनयुक्तं सदातुरं ज्ञानपरं मनोज्ञम।।१८।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, बुध, शुक्र और शनि ग्रह का फल योग

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, विजयी, विद्वान निरंतर बेचैन रहने वाला ज्ञानी और मन की बात जानने में सक्षम होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०वृ०शु०श० योगफलम्।।

चंद्रारजीवाऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
प्रभूतकोशं वनितासुलोलं दयापरं धर्मयुतं सदैव।।१९।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति धनवान, स्त्रियों में चलायमान मन वाला दयाशील तथा धर्म को निरंतर मानता है।

अथ धनभावस्थित चं०बु०वृ०शु०श० योगफलम्।।

चंद्रज्ञजीवाऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
गुरुद्विजातिंप्रणतं सुरूपं विचित्रधर्म नृपकर्मदक्षम्।।२०।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का फल कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति गुरुजनों के साथ और अपने से बड़े लोगों के साथ नम्रतापूर्ण व्यवहार करता है। तथा ब्राह्मणों की सेवा करता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक रूप से युक्त होता है। तथा विचित्र धर्म का प्रेमी राज्य के कार्यों को चतुराई से करता है।

अथ धनभावस्थित मं०बु०वृ०शु०श० योगफलम्।।

भौमज्ञजीवाऽसुरपूज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम।।
लघुप्रकोपं बहुमित्रवर्ग श्रुतानुरक्तम् प्रियसाहसं च।।२१।।

धनभाव में स्थित मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये पांचों ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति क्रोधी, अधिक मित्रों से युक्त और वेदों के अध्ययन प्रेमी तथा साहसी होती है।

❑❑❑

११ धनभाव में स्थित छः ग्रहों का योग फल

धनभाव में स्थित छः ग्रहों का योगफल कथन

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०बृ०वृ०शु० योगफलम्।।

रवीन्द्रभौमज्ञसुरेज्यशुका धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
क्लेशाधिकं सत्यधनैर्विमुक्तं प्रेष्यं खलं दुर्जनसम्मतं चं।।१।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति और शुक्र ग्रह का फलयोग।

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये छः ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति अधिक दुःखों का भागी दया, धन और सत्य से हीन होता है। जुआ खेलता है उसे नीच लोगों का साथ प्रिय लगता है। तथा ऐसा व्यक्ति दुष्ट होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०बु०वृ०श० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम।।
स्वपुत्रपौत्रैरहितं सुदुष्टं कुशास्त्रमित्रागमसेवकं च।।२।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध और वृहस्पति, शनि ग्रहों का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में ये छः ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दुष्ट, पुत्र और पौत्रों से हीन होता है और अधम शास्त्र को मानता है। दुष्टों से मित्रता करता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०बु०शु०श० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमज्ञसितार्कपुत्रा धनास्थिताः संजनयंति मर्त्यम।।
जनप्रधानं सुहृदैः समेतं नृपालमान्यं वहुसेवकं च।।३।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि ग्रहों का योग फल कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये छः ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति मित्रों से युक्त राजा द्वारा सम्मानित, नौकरों से युक्त और मनुष्यों का प्रधान होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०मं०वृ०शु०श० योगफलम्।।

रवीन्दुभौमा गुरुशुक्रसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
दम्भान्वितं पुणयकथाविरक्तं खलस्वभावं गुरुशोकभाजम्।।४।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का योग फल कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये छः ग्रह उसके धनभाव में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति पुण्य कथाओं को न सुनने वाला दुष्ट शोक करने वाला और दंभ से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित सू०चं०बु०वृ०शु०श० योगफलम्।।

रवीन्दुभौम्यागुरुशुक्रसौरा धनस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम।।
सुपुत्रपौत्रैर्धनकीर्तिहीनं विद्यं कुकर्म विजयैर्विरकम्।।५।।

धनभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रहों का योग फल कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये छः ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति निर्धन, यश से रहित निंदित कार्य करता है और उत्तम पौत्रों से हीन होता है। तथा नम्रता से हीन अर्थात् विनम्र होता है।

अथ धनभावस्थित सू०मं०बु०वृ०शु०श० योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्यागुरुशुक्रसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
कृत्यैर्विहीनं मतिवित्तहीनं सदातुरं क्लेशसमन्वितं च।।६।।

धनभाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का फलयोग कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये छः ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति उत्तम कार्यों को नहीं करता है अपितु नीच कार्य करने वाला निर्धन अविवेकी होता है। तथा ऐसा व्यक्ति निरंतर बेचैन रहने वाला तथा अनेक कष्टों से युक्त होता है।

अथ धनभावस्थित चं०मं०बु०वृ०शु०श० योगफलम्।।

चंद्रारसौम्यागुरुशुक्रसौरा धनस्थिताः संजनयंति मर्त्यम्।।
समुद्रपर्यंतधराधिनाथं धर्मध्वजं भूरियशोनिधानम्।।७।।

धनभाव में स्थित चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह का फलयोग कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में ये छः ग्रह उसके धनभाव में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति पूरी पृथ्वी का स्वामी होता है। ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार के यशों से युक्त अर्थात् यशस्वी होता है। ऐसा व्यक्ति धर्म की स्थापना करता है। तथा समुद्र के छोर तक पृथ्वी पति होता है।

अथ धनभावस्थित सप्तग्रहयोगफलम्।।

सूर्य्येन्दुभौमज्ञसुरेज्यशुकाः शनैश्चराः संजनयंति मर्त्यम्।।
धनस्थिता भूरिधनाश्चनागैः संसेवितं धर्मपरं सदैव।।८।।

धन भाव में स्थित सात ग्रहों का योगफल कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में धनभाव में सातों ग्रह स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति अनेक प्रकार से धनवान होता है। तथा चौपाया धन से युक्त अर्थात् घोड़े हाथियों की सम्पत्ति से युक्त होता है। तथा ऐसा व्यक्ति निरंतर धर्म पर चलने वाला होता है।

❑❑❑

१२ सुखभावः (सुख भाव)

अथ सुखभावविचारमाह।।

अथ सुखभवनात्किं किं चिन्तनीयम्।।

सुखानि गोबंधुसुगंधविद्यामनोगुणं मातृसुखाऽसुखानि।।
नरेंद्रयानोमहिमंदिराणि चतुर्थभावे प्रवदंति तज्ज्ञाः।।१।।

अब सुखभाव का विचार कहते हैं—

व्याख्या—सुख भाव यानि चतुर्थ भाव से क्या-क्या विचारणीय है। इस विषय में ज्योतिषशास्त्र के विद्वानों ने विचार करके कहा है, गाय आदि जीवों का तथा बन्धु-बांधवों का, विद्या एवं सुगन्ध का तथा मन का और गुणों का सुख-दुःख का विचार करना चाहिये। माता का, राजा का एवं वाहन का जमीन का तथा स्थान का इतनी तमाम चीजों का सुख एवं दुःख चतुर्थ भाव से विचार करना चाहिये।

तथा च उक्तंच ढुण्ढिराजेन।।

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोद्यमालोकनकं चतुर्थे।।
दृष्टे शुभानां शुभयोगतोवा भवेत्प्रवृद्धिं नियमेन तेषाम्।।२।।

व्याख्या—इसके पश्चात् श्री दुण्ढिराज जी कहते हैं—कि चतुर्थ भाव यानि सुख भाव से अपने मित्रों का स्थान तथा गांव व चतुष्पद एवं खेती-बाड़ी के उद्यम के विषय में विचार करना चाहिये। यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों जैसा दिखाई पड़े या शुभ ग्रहों से युक्त हो, तो उक्त भाव की वृद्धि करते हैं। नियमपूर्वक, तथा यदि चतुर्थ भाव से नीच ग्रह सम्पृक्त हो तो उक्त भाव की हानि होती है। मिश्र ग्रहों के दिखाई पड़ने या युक्त होने से मित्रफल ही कहना चाहिए।

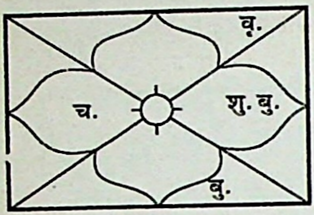
अथ मित्रसौरुपयोगः।।

स्वस्वामिशुभयुग्दृष्टं चतुर्थे मित्रसौख्यक।।

मित्र-सुख योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में चौथे भाव में शुभ ग्रह स्थित हो,

मित्रसौख्ययोगः।

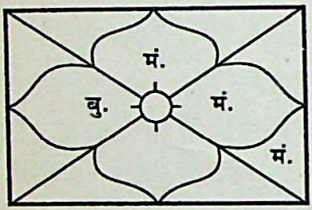


अथवा शुभ ग्रहों जैसा दिखाई पड़े तथा अपने स्वामी से युक्त हो अथवा दिखाई पड़े, तो वह प्राणी मित्रों के सुख को प्राप्त करने वाला होता है। यानि ऐसे व्यक्ति को सच्चे एवं सहायक मित्र का सहयोग एवं सुख प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति को आवश्यकता पड़ने पर मित्र स्वतः ही सहायता प्रदान करते हैं।

अथ मित्रनाशयोगः।।

बुधे भौमेन संदृष्टः कुरुतेऽत्र सुहृत्क्षयम्।।३।।

मित्रनाशयोगः।



मित्र-नाश योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में बुध ग्रह स्थित हो, तथा मंगल जैसा दिखाई पड़े, तो वह प्राणी अपने मित्रों का नाश करता है।

अर्थात् ऐसे व्यक्ति को या तो कोई अच्छा, सच्चा एवं सहायक मित्र मिल ही नहीं पाता, और यदि किसी प्रकार ऐसा मित्र मिल भी जाता है, तो उसका मित्र शीघ्र ही नष्ट हो जाता है, ऐसा विद्वानों का मत है।

अथचंद्राद्वालग्नाच्चतुर्थभावस्थितग्रहाणाफलमाह।

चंद्राद्विलग्नाद्व रविश्चतुर्थे कुर्य्यात्पितृव्यस्य गृहास्पदं च।।
शुक्रस्तु दाराश्रयसौख्यभाजं स्त्रग्वस्त्रसौभाग्यगृहं प्रदद्यात्।।४।।
बुधस्तु यत्नाहितबंधुसौख्यं चंद्रः परस्थानकृताधिवासम्।।
सुदुः खितोधान्यगृहाटनानां कुजोऽर्कजो दासगृहाशयानाम्।।५।।

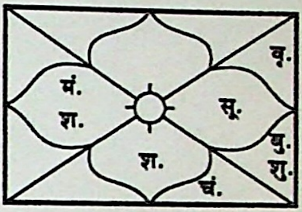
व्याख्या—जिस वयक्ति के जन्म के समय चन्द्रलग्न से या जन्मलग्न से सूर्य चौथे भाव में स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य अपने पितृपक्ष के घर का सुख भोगता है, तथा यदि शुक्र ग्रह हो, तो वह प्राणी पत्नी पक्ष के सुखों को भोगता है तथा फूलों, वस्त्र एवं सौभाग्यपूर्वक स्थान को प्राप्त करता है। यदि बुध ग्रह चौथे भाव में हो, तो यत्नपूर्वक भाइयों का सुख भोगता है। यदि चन्द्रमा हो, तो वह प्राणी दूसरे के स्थान पर रहता है। यदि चौथे भाव में मंगल हो तो वह कष्टपूर्वक अन्य लोगों के घरों में घूमने वाला होता है। यदि चौथे भाव में शनि ग्रह हो, तो ऐसे व्यक्ति को सेवक के घर में निवास करना पड़ता है।

अथ परोपतापयोगः।।

पापश्चतुर्ये परवेश्मयाते तदीक्षितोऽन्यैः शुभदैरदृष्टः।।
परोत्थसंस्थानपरोपतापं प्रायश्च बंधूद्भवजं सुदुःखम्।।६।।

दूसरों के दुःखप्राप्ति का योग

परोपतापयोगः।



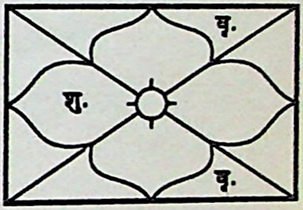
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में पराये स्थान में नीच ग्रह स्थित हों तथा नीच ग्रहों जैसे दिखाई पड़ें तथा कोई शुभ ग्रह भी सम्पर्क में न हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने दुश्मनों के द्वारा कष्ट भोगता है तथा उसके भाई-बन्धु उसे सदैव दुःखी रखते हैं।

अथ सुहृद्सौख्ययोगः।।

जीवेक्षिते शुभंशुक्रे—

मित्रों द्वारा सुख का योग

सुहृद्सौख्ययोगः।



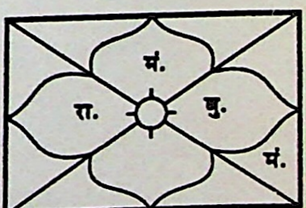
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में शुक्र ग्रह स्थित हो तथा वृहस्पति जैसा दिखाई पड़े, ऐसे व्यक्ति को मित्र जनों का सुख मिलता है। यानि ऐसे व्यक्ति को सच्चा एवं मददगार मित्र स्वयं ही प्राप्त हो जाता है।

अथ सुहृद्नाशयोगः।।

ज्ञारदृष्टे सुहृत्क्षयः।।

मित्रों के नाश का योग

सुहृद्नाशयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में चौथे भाव में नीच ग्रह स्थित हों तथा चौथे भाव में बुध ग्रह मंगल जैसा दिखाई पड़े, तो ऐसे प्राणी के मित्रों का नाश होता है। यानि ऐसे व्यक्ति को मित्र का सुख प्राप्त नहीं होता।

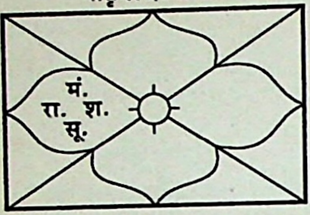
अथ मातुःक्लेशयोगः।।

सुखे क्रूरयुते मातुः क्लेशकृत

मातृ-क्लेश का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में चौथे भाव में नीच ग्रह स्थित

मातृक्लेशयोगः।

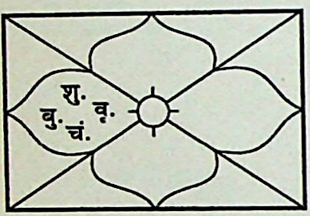


हों, तो ऐसे व्यक्ति की माता सदैव परेशान रहती है। यानि ऐसे मनुष्य की माता को दुःख एवं रोग सदैव घेरे रखते हैं। इस प्रकार, उसकी माता स्वास्थ्यलाभ एवं सुखो को न पाकर सदैव क्लेश भोगती है।

अथ मातुः सौख्ययोगः।।

सशुभे सुखम्।। ७।।

मातुःसौख्ययोगः।



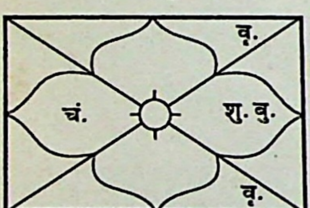
मातृ-सुख योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में चौथे भाव में शुभ यानि उच्च ग्रह स्थित हों, तो ऐसा मनुष्य मातृ-सुख को प्राप्त करता है। यानि ऐसे व्यक्ति को माता का संरक्षण, स्नेह एवं ममता सम्पूर्ण रूप से प्राप्त होता है।

अथ विद्याविनयचतुरयोगः।।

विद्याराशौ निजपतियुता सौम्ययुक्तेक्षिता वा,जातोविद्याविनयचतुर—

विद्याविनयचतुर योगः।



विद्या विनय चतुर-योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में अपने स्वामी जैसे युक्त हों तथा शुभग्रहों जैसे दिखाई पड़ें, तो ऐसा व्यक्ति विद्या एवं विनय से बड़ा निपुण होता है।

अर्थात् ऐसा मनुष्य अत्यन्त विद्वान्, विद्या-प्रेमी तथा विनम्र स्वभाव वाला तथा विनयी होता है, ऐसा विद्वानों का मत है।

अथ विद्याविहीनयोगः।।

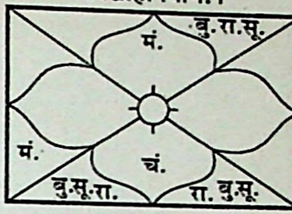
श्चंद्रपुत्रोबलिष्ठे।।
दुस्थे पापखचरसहिते क्रूरदृष्टे तदीशे,
विद्याहीनोभवति मनुजः पापराशिस्थितोवा।।८।।

विद्या-विहीन-योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में बुध ग्रह शक्तिशाली होकर छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में स्थित हो, नीच ग्रहों से युक्त हो तथा चौथे भाव

का स्वामी नीच ग्रहों जैसा दिखाई पड़े, तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही विद्या से रहित स्थित होता है अथवा चौथे का स्वामी नीच राशि में स्थित तो भी विद्याविहीन ही समझना चाहिए। यानि ऐसा मनुष्य लाख कोशिश करने के बाद भी विद्या प्राप्त नहीं कर सकता।

विद्याहीनयोगः।

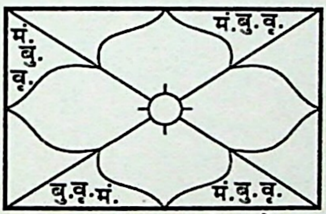


अथ विद्याबुद्धिविवेकहीनयोगद्वयम्।।

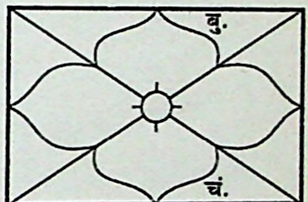
मातृस्थानपचंद्रपुत्रगुरवः दुश्चिक्यत्रिकस्थानगाः।।
विद्याबुद्धिविवेकहीनफलदा नीचारिगा वा यदि।।

विद्या, बुद्धि, विवेक हीन दो योग

विद्याबुद्धिविवेकहीनयोगः।



विद्याबुद्धिविवेकहीनयोगः।

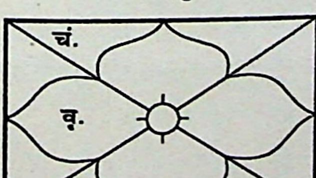


व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी तथा बुध एवं वृहस्पति ग्रह तीसरे या छठे, आठवें, बारहवें बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति विद्या, बुद्धि, विवेक (समझदारी) से रहित होता है अथवा कहे गये योग वाले ग्रह नीच राशि या शत्रु क्षेत्र में स्थित हो, तो भी उक्त फल ही समझना चाहिये।

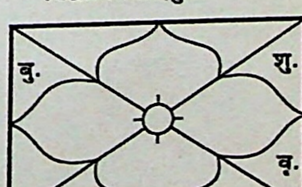
श्री विद्याविनयादियुक्तयोगः।।

स्वोच्चे स्वर्क्षगताः त्रिकोणगृहगाः केन्द्रस्थिता वा यदि,
श्रीविद्याविनयादियुक्तनिपुणो राजाधिराजः प्रियः।।१।।

विद्याविनयादियुक्त योगः।



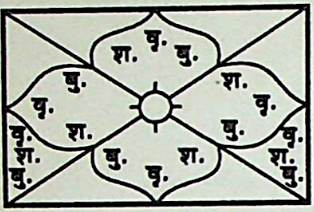
विद्याविनयादियुक्त योगः।



लक्ष्मी, विद्या, विनय आदि से युक्त होने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी तथा बुध,

विद्याविनयादियुक्त योगः।

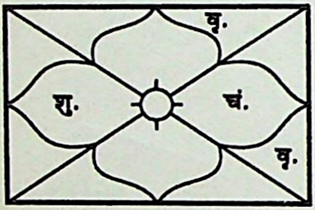


वृहस्पति ग्रह अपने उच्च राशि में स्थित हों, तो एको योग अथवा उक्त योग कारक ग्रह अपनी राशि में स्थित हों, तो द्वितीयोयोगः अथवा पंचम नवम लग्न चतुर्थ-सप्तम-दशम भावों में स्थित हों, तो ऐसा मनुष्य लक्ष्मी, विद्या, विनय, विवेक आदि से युक्त, अत्यन्त निपुण राजा-महाराजाओं का प्रिय होता है।

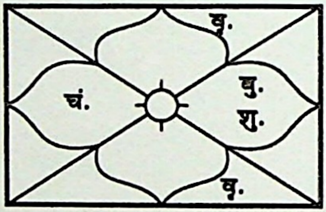
अथ मातुर्दीर्घायुर्योगः।।

शुक्रे बलिष्ठे यदि वा शशाङ्के सौम्येक्षिते शोभनभागयुक्ते।।
चतुष्टये कोणगृहे बलाढ्ये मातु श्चिरायुः समुदाहरंति।।१०।।

मातुश्चिरायुयोगः।



मातुश्चिरायुयोगः।



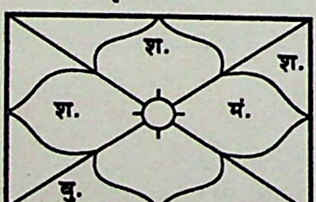
माता की लम्बी आयु का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय शुक्र या चन्द्रमा ग्रह शक्तिशाली हों तथा शुभग्रहों जैसे दिखाई दें तथा शुभग्रहों के नवांश में स्थित हों, विशेषतः चौथे स्थान में स्थित हों या लग्न चौथे, दसवें भाव में स्थित हो, तो ऐसे प्राणी की माता लम्बी आयु को प्राप्त करती है।

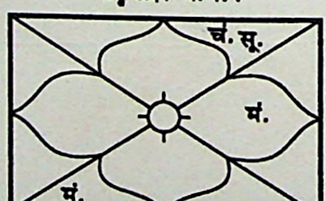
अथ मातृनाशयोगः।।

मातृस्थानाधिपे षष्ठे व्यये वा बलवर्जिते।।
लग्ने पापे पापदृष्टे मातृनाशं वदेद्बुधः।।११।।

मातृनाश योगः।



मातृनाश योगः।



मातृ-विनाश योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में चौथे भाव का स्वामी छठे

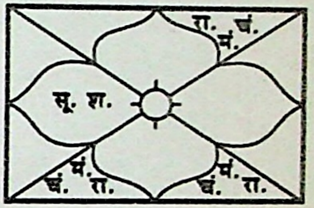
अथवा बारहवें स्थान में बलहीन होकर स्थित हो, और जन्म लग्न में नीच स्थित हो, तथा नीच ग्रह जैसे दीख पड़ें, तो ऐसे प्राणी की माता का विनाश हो जाता है यानि ऐसे व्यक्ति की माता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। ऐसे व्यक्ति की माता कम आयु में ही परलोक वासी हो जाती है, ऐसा विद्वानों का मत है।

अथ मातृहानियोगः।।

क्षीणे चन्द्रे पापयुक्तेव्यये षष्ठेऽष्टमेऽपि वा।।
चतुर्थे क्रूरसंयुक्ते मातृहानिर्वदेद्बुधः।।१२।।

माता की हानि का योग

मातृहानि योगः।



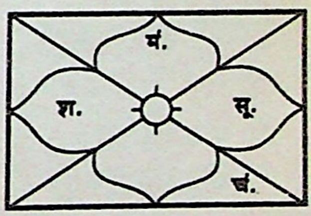
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में क्षीण चन्द्रमा नीच ग्रह से युक्त हो, छठे या आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तथा चौथे भाव में पाप ग्रहस्थित हों, तो ऐसे मनुष्य की माता की हानि होती है, ऐसा विद्वानों का कथन है।

अथ मातृहायोगः।।

मातृस्थानगते मंदे पापग्रहनिरीक्षिते।।
रंध्रस्थानेऽरिनीचस्थे मातृनाशं वदेद्बुधः।।१३।।

मां की मृत्यु का योग

मातृहा योगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में चौथे भाव में शनि स्थित हो तथा नीच ग्रहों जैसा दिखाई पड़े और चौथे भाव का स्वामी छठे या आठवें भाव में नीच राशि में स्थित हो, तो ऐसे प्राणी की माता की मृत्यु होती है। यानि ऐसा व्यक्ति अपनी मां का सुख बहुत कम समय तक भोग पाता है।

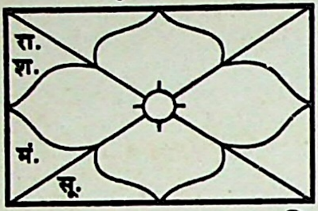
अथ मातृरोगयोगः।।

पातालेशेऽरिनीचस्थे भ्रातृपुत्रस्थिताऽशुभाः।।
चंद्रे क्रूरसमायुक्ते माता रोगार्तिसर्वदा।।१४।।

मां की बीमारी का योग

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में चौथे भाव का स्वामी शत्रु राशि या नीच राशि में स्थित हो तथा तीसरे व पांचवे भावों में नीच ग्रह स्थित

मातृरोग योगः।

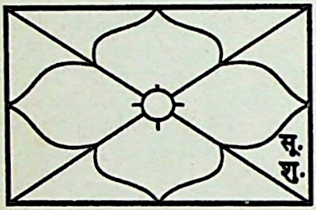


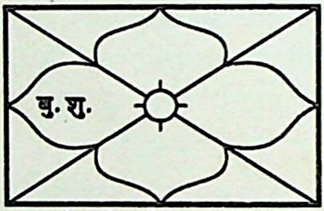
हो, साथ ही चन्द्रमा पापग्रहों के साथ स्थित हो, तो ऐसे प्राणी की माता हमेशा रोग से पीड़ित रहती है अर्थात् ऐसे व्यक्ति को जन्म देने वाली माता सदैव किसी-न-किसी रोग से पीड़ित रहती ही है।

अथव्यभिचारशीलपितृयोगद्वयम्।।

षष्ठेश्वरेण सहितोयदि तुयनाथोभाग्यस्थितो जनकमत्र विंट करोति।।
धर्माधिपेने सहितोयदि तुर्यनाथोबंधुस्थितो जनकमंत्र विटं करोति।।१५।।

व्यभिचारशीलपितृ योगः। व्यभिचारशीलपितृ योगः।





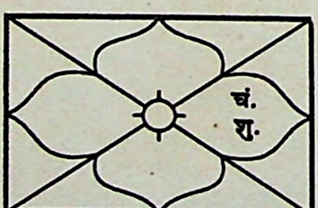
व्यभिचारशील पिता के दो योग

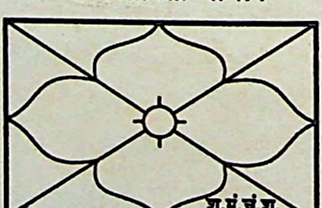
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में छठे भाव के स्वामी से युक्त जो कि चौथे भाव का स्वामी नवें भाव में स्थित हो, तो उस प्राणी का पिता व्यभिचारी अर्थात् दुराचारी होता है। एको योगः, अथवा नवें भाव के स्वामी से युक्त चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव में ही स्थित हो, ऐसे प्राणी का पिता भी दुराचारी यानि व्यभिचारी ही होता है।

अथ जारजातपितायोगद्वयम्।।

षष्ठमातृपतौ व्योम्नि पितुश्च व्यभिचारजः।।
देहारिसुखपित्रेशे रेकस्थैः परजातकः।।१६।।

जारजातपिता योगः। जारजातपिता योगः।





व्यभिचार से उत्पन्न पिता

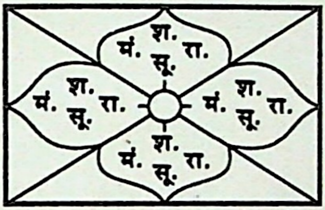
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में छठे एवं चौथे भाव के स्वामी

दसवें भाव में स्थित हों, ऐसे व्यक्ति का पिता व्यभिचार से उत्पन्न कहना चाहिये तथा यदि लग्न छठे, चौथे, दसवें भावों के स्वामी एक ही राशि में स्थित हों, तो भी उस व्यक्ति का पिता जारजात (व्यभिचार से उत्पन्न) माना जाता है।

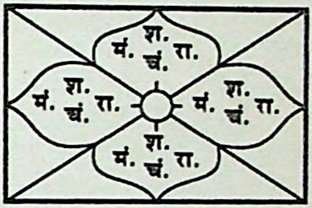
अथ पितृदारगामीयोगद्वयम्।।

दिवाकरे वा यदि वा शशाङ्के पापेक्षिते क्रूरयुते तु केन्द्रे।।
पापे सुखे वा यदि क्रूरयुक्ते जातोनरः स्यात्पितृदारगामी।।१७।।

मातृगामी योगः।

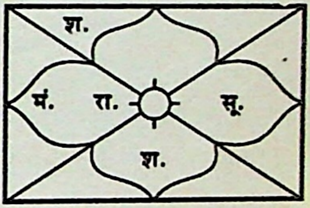


मातृगामी योगः।



पितृदार गामी दो योग

मातृगामी योगः।



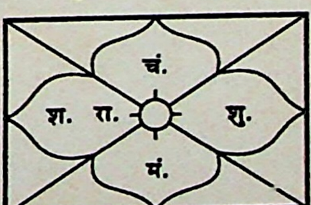
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में सूर्य अथवा चन्द्र नीच ग्रह जैसे दिखाई पड़ें तथा पापग्रहों से युक्त केन्द्र में स्थित हों एकोयोग अथवा चौथे भाव में नीच ग्रह स्थित हों तथा पापयुक्त होवें तो ऐसा व्यक्ति मातृगामी (माता से अवैध सम्बन्ध रखने वाला) होता है। पिता की पत्नी, ससुर की पत्नी, गुरु की पत्नी, मित्र की पत्नी, स्वामी की पत्नी और राजा की पत्नी—ये छहों धर्मशास्त्रों में माता के समान पूज्यनीय कही गयी हैं।

अथ गुरुदारगामी योगः।।

चंद्रेऽथवा मृगोकेन्द्रे क्रूरदृष्टेपि वाद्वयोः।।
पापेतुर्य्ये मातृगामी अथवा गुरुतल्परा:।।१८।।

गुरु दार गामी योग

गुरुदारगामी योगः।



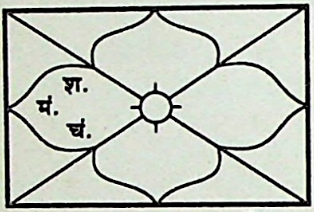
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में चन्द्रमा अथवा शुक्र ग्रह केन्द्र स्थानों में नीच ग्रहों जैसे दिखाई पड़ें तथा चौथे भाव में भी नीच ग्रह स्थित हों, तो ऐसा प्राणी मातृगामी होता है अथवा गुरुदारगामी यानि गुरु की पत्नी से समागम (सहवास) करने वाला होता है।

अथ व्यभिचारशीलमातृयोगद्वयम्।।

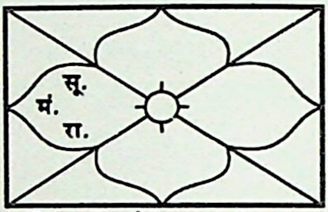
तुर्यस्थे भौमषष्ठेशे चंद्रेमाताऽन्यमैथुनी।।
सराहुर्दिननाथोवा तस्यमाताऽपिजारिणी।।१९।।

व्यभिचार शील माता के दो योग

व्यभिचारशीलमातृ योगः।



व्यभिचारशीलमातृ योगः।

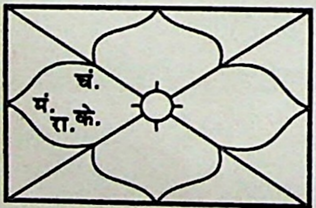


व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल तथा छठे भाव का स्वामी चन्द्रमा से युक्त स्थित हो, तो ऐसे प्राणी की माता पर-पुरुष के साथ व्यभिचार (सहवास) करने वाली होती है। एकोयोग अथवा राहु सहित सूर्य तथा छठे भाव का स्वामी चौथे भाव में बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति की माता व्यभिचारिणी (पर-पुरुष से अवैध सम्बन्ध रखने वाली) होती है।

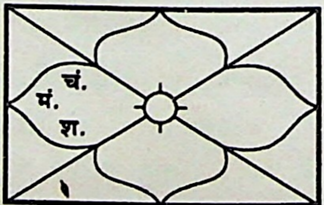
अथकस्यप्रसंगेन व्यभिचारः तस्यज्ञातिज्ञानमाहा

हिमांशौ केतुराहुभ्यां युक्तेनीचेन संगमः।।
मंदयुक्तस्तु शूद्रेण वैश्यसंगो बुधेन वै।।२०।।
भानुयुक्तेक्षत्रियेण मंत्रिभ्यां द्विजसंगमः।।
एवंशशिकुजारीशाः युक्तस्तु फलदायकाः।।२१।।

नीचप्रसंगेनव्यभिचारःयोगः।



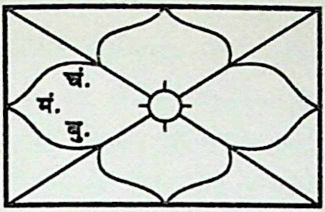
शूद्रेणसहव्यभिचारःयोगः।



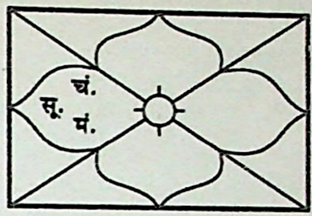
व्यभिचार किसके साथ किया गया है, यह जानने वाला योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चन्द्रमा, मंगल तथा छठे भाव का स्वामी केतु या राहु से युक्त चौथे भाव में स्थित हो, ऐसे मनुष्य की माता निश्चय ही नीच पुरुष के साथ समागम (व्यभिचार) करती है तथा शनिश्चर से युक्त हो, तो

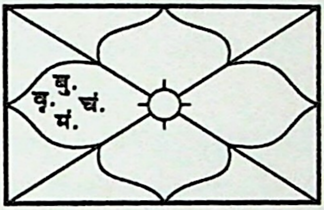
वैश्येनसहव्यभिचारःयोगः।



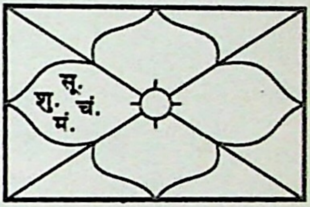
क्षत्रियेणसहव्यभिचारःयोगः।



विप्रेणसहव्यभिचारःयोगः।



विप्रेणसहव्यभिचारःयोगः।



उसकी माता शूद्र के साथ अवैध सम्बन्ध रखती है तथा यदि बुध से युक्त योग हो, तो निश्चय ही किसी वैश्य पुरुष के साथ व्यभिचार करेगी।। २०।।

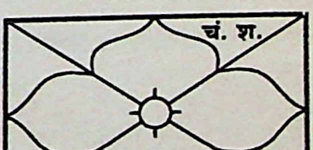
और यदि सूर्य से युक्त हो तो उसकी माता किसी क्षत्रिय के साथ अवैध सम्बन्ध रखेगी, तथा यदि वृहस्पति अथवा शुक्र के साथ मंगल व छठे का स्वामी चन्द्रमा से युक्त हो तो उसकी माता किसी ब्राह्मण के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करती है, ऐसा विद्वानों का मत है।

अथान्यस्तन्यपानयोगः।।

चंद्रोऽनिष्टस्थानगः सानुजेशे
जातस्तस्याऽन्यस्तन्यपानं करोति।

किसी दूसरी स्त्री के दूध पर जीवित रहने का योग

अन्यस्तन्यपानयोगः।



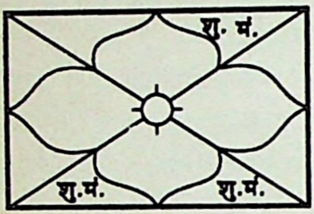
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चन्द्रमा तथा तीसरे भाव का स्वामी छठे अथवा आठवें अथवा बारहवें भावों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति जन्म होने के उपरान्त, किसी अन्य स्त्री का दूध पीकर जिन्दा रहता है, अर्थात् ऐसे व्यक्ति को अपनी माता के स्तनपान (दूध पीने) का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। माता की अकाल मृत्यु अथवा स्तनों में दूध न उतरने के कारण उसे किसी अन्य स्त्री के दूध को पीकर जीवित रहना पड़ता है।

अथ पितृमृत्युयोग:।।

दु:स्थानस्थो मातृपित्रर्क्षनाथौ पित्रोर्मृत्यु:लग्ननाथे वलाढ्ये।।२२।।

पितृमृत्युयोग:।

पिता की मृत्यु का योग



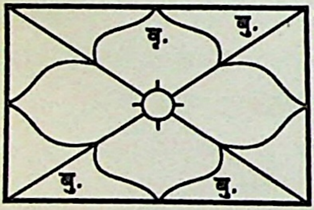
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म-काल में चौथे तथा दसवें भाव के स्वामी छठे या आठवें या बारहवें भाव में स्थित हों तथा लग्ननाथ अति बलवान हो, तो ऐसे प्राणी का पिता निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त होता है। अर्थात् ऐसे प्राणी को पिता का सुख अधिक समय तक नहीं मिल पाता, उसका पिता शीघ्र ही अकाल मृत्यु का ग्रास बनता है।

अथ षोड्शाव्दांतरे पित्रोर्मृत्युयोग:।।

लग्नात्सप्तमगेदु:स्थे देहेशेसवलोयदि।।
पित्रोरनिष्टकारीस्यात्षोड़शाब्दांतरे भवेत्।।२३।।

सोलह वर्ष के भीतर माता-पिता का अनिष्टकारी योग

षोड्शाव्दांतरेपित्रोर्मृत्युयोग:।



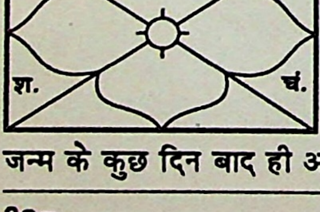
व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म की बेला में सातवें भाव का स्वामी छठे या आठवें अथवा बारहवें भाव में स्थित हो तथा लग्न का स्वामी बहुत शक्तिशाली हो, तो ऐसे प्राणी के माता-पिता को उसके जन्म के सोलह वर्ष के भीतर अनिष्ट फल की प्राप्ति होती है। यानि उन्हें दु:ख, रोग एवं चिन्ताएं घेरे रहती हैं।

अथ मात्रापित्रासहमरणयोग:।।

मातृस्थानेशदेहेशौ तत्रिकोणगतौ यदि।
तदीशे लग्नगोमाता पित्रासहमृताभवेत्।।२४।।

मात्रापित्रासहमरण योग:।

अनाथ होने का योग



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे तथा जन्म लग्न के स्वामी चौथे, दसवें, नवें, पांचवें भावों में स्थित हों तथा उन स्थानों के स्वामी लग्न में स्थित हों, तो ऐसे प्राणी के माता-पिता अकाल-मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यानि ऐसा व्यक्ति जन्म के कुछ दिन बाद ही अनाथ हो जाता है।

अथ मातृमृत्युकालमाह।

मातृलग्नेशपितृपाः केंन्द्रकोणस्थितायदि।।
तद्दशांर्दशाकाले जनन्यास्त्वमुमृत्युदाः।। २५।।

माता की मृत्यु का समय बताना

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे तक लग्न एवं दसवें भावों के स्वामी केन्द्र १/४/७/१० कोण ५/९ स्थान में स्थित हों, तो उनकी दशा अन्तर्दशा काल में माता की मृत्यु कहनी चाहिये। यानि ऐसे व्यक्ति की माता उपरोक्त काल में निश्चय ही किसी भी कारण से मृत्यु को प्राप्त हो जायेगी।

रवींदुपितृमातृस्थौ रवियदितौचनुमृत्युदौ।।
तदीशेक्षितयुक्तौवा रविसंबंधिन स्तथा।। २६।।

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सूर्य तथा चन्द्रमा दसवें या चौथे भाव में स्थित हों या सूर्य चन्द्रमा चौथे दसवें के स्वामी से युक्त हों अथवा चौथे दसवें स्वामी जैसे दिखाई पड़ें या चौथे, दसवें के स्वामी सूर्य के साथ सम्बद्ध हों, तो उसके माता-पिता की मृत्यु का योग बनता है।

येमातृभाव पतिकारकतत्समेतास्तन्मातृराशिगतवोक्षितरे नरेंद्राः।।
तेषामनिष्टकर खेटदशापहारे जातस्यमातृमरणैयबदंतितज्ज्ञाः।। २७।।

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय जो ग्रह चौथे भाव का स्वामी हो तथा जो ग्रह माता भाव का कारक हो, उनसे युक्त जो ग्रह चौथे भाव में स्थित हो तथा जो ग्रह माता भाव को देखता हो, इन तीनों में जो ग्रह अत्यन्त बलवान हो, उसकी दशांतर दशा में माता का मरण कहते हैं, अर्थात् ऐसे व्यक्ति की माता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होगी।

अथ मातृमरणस्पष्टकालमाह।।

मार्तण्डस्फुटतो विशोध्य शशिना तच्छेपराश्यंशके।।
जीवेभानुसुतेच मातृमरणं तत्कोणगेवा नृणाम्।।
संशोध्यं हिमकण्टकं हिमकराद्रंध्राधिपस्यस्फुटे।।
तद्राशौ रविनंदने मृतिमुपै त्यंवातदंशेरवौ।। २८।।

अब माता के मरने का स्पष्ट समय बताते हैं।

व्याख्या—अब मनुष्य की माता का मरने का समय स्पष्ट करते हुए कहते हैं—राश्यादि सूर्य के स्पष्ट में राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा को घटा दें, शेष जो राशि अंशकला विकला रहे, उसमें दिखता हुआ जब बृहस्पति शनिश्चर आवे, उस समय बालक की माता का मरण कहना चाहिए। जो शेष राशि है, उससे नवें, पांचवें

शनिश्चर, बृहस्पति दोनों गोचर मार्ग से आवें, तो उस प्राणी की माता का मरण कहें। एकोयोगः तथा जन्मकाल में स्पष्ट जो आठवें भाव का स्वामी उसमें सूर्य स्पष्ट को घटा दें, शेष बची राशि में जब शनिश्चर आये तथा उसी राशि के नवांशा में जब सर्य हो, तो उसी समय उस बालक की माता की मृत्यु का योग बनता है।

अथ पुण्यकर्मरत योगत्रयम्।।

चांद्रिदृष्टियुतेसौख्ये शुभमध्यगतेऽथवा।।
गुरुराश्यंशकेवापि पुव्यधर्मरतः सदा।।२९।।

पुण्य कर्मों में लगे रहने के तीन योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म काल में चौथे भाव में बुध संयुक्त हो एकोयोगः अथवा चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों के मध्य में हो द्वितीयो योगः या चौथे भाव में वृहस्पति से नवांशा जैसे उदित तृतीयो योगः, इन तीनों योगों में पैदा हुए मनुष्य हमेशा धार्मिक कार्यों में लगे रहते हैं।

अथ सुखीयोगः।।

गोपुसद्यंशकेजीवे सुखस्थानगतेऽपिवा।।
धनायवृद्धिभावेषु खेटेषुचसुखीभवेत्।।३०।।

सुखी रहने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में बृहस्पति गोपुरादि अंशों में चौथे भाव में स्थित हो या दूसरे, ग्यारहवें, पांचवें भावों में सभी ग्रह स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सुखी होता है। उसे किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। चिन्ताओं, रोग, शोक आदि से वह सदैव मुक्त रहता है।

अथ सौख्यहेतुमाह।।

चतुर्थगः शोभनराशिगोवली विलग्नसंबंधगुणाधिकोयदि।।
तज्जातिवणेणसुखंनिरंतरं तदीयधातुश्रिय मेतिमानवाः।।३१।।

सुखी रहने का कारण

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में जो ग्रह शक्तिशाली होकर शुभग्रह की राशि में स्थित हो तथा जन्म लग्न से सम्बन्ध रखने वाला जो ग्रह जिस भी जाति से सम्बन्धित है तथा अधिक गुणों से युक्त हो, तो ऐसा प्राणी किसी जाति वर्ग के मनुष्यों से लगातार सुख को प्राप्त करता है तथा उसी ग्रह के द्रव्यादि पदार्थों से ऐसा व्यक्ति सुख का लाभ प्राप्त करता है अर्थात् समस्त सुखों का उपभोग करता है।

अथ सौख्यादिविनाशहेतुः।।

सुहृद्गतो नीचसपत्नयातः दुःस्थानभावाऽधिपतिर्विलग्नात्।
देहेश शत्रुर्यदितत्प्रकोपाच्छरीरसौख्यादि विनाशमाहुः।।३२।।

समस्त सुखों के विनाश का कारण

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में जो ग्रह जन्म लग्न से छठे, आठवें, बारहवें भाव का स्वामी होकर नीच राशि या दुश्मन की राशि में चौथे भाव में स्थित हो तथा जन्मलग्न के स्वामी का शत्रु हो, उस ग्रह की जाति वर्ग में होने पर या उस ग्रह के द्रव्यों द्वारा उस व्यक्ति के शरीर के समस्त सुखों का विनाश ही बताना चाहिए। यादि उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को जीवन में किसी भी सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती, उसके सभी सुख शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

अथ सुखाऽसुखयोगः।।

पातालभावस्थित दृष्टिकारका,
वलान्विताः पद्यति सौख्यकारणः।

जीवन में सुख-दुःख का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में जो ग्रह स्थित हो तो चौथे भाव के सम्पर्क में जो ग्रह हो तथा जो ग्रह चौथे भाव का कारक हो तथा अत्यधिक शक्तिशाली, तो ऐसे ग्रह व्यक्ति के जीवन में अत्यन्त सुख प्रदान करने वाले होते हैं, यानि ऐसे ग्रहों का योग होने पर जातक सभी प्रकार के सुखों को भोगता है, उसे जीवन में कोई दुःख नहीं होता।

दुःखप्रदा नीचसपत्नमूढगाः, सुखंशुयेना सुखपापखेचरे।।३३।।

यदि उक्त तीनों ग्रह नीच राशि में स्थत हों या शत्रु की राशि में, मूढ़ (मूर्ख) राशिगत हों, तो ऐसे व्यक्ति के लिए दुःखदायी बन जाते हैं। अर्थात् जातक की जन्मकुण्डली में ऐसे ग्रहों का योग बनने पर दुःख ही दुःख होते हैं।

शुभ ग्रह सदैव जीवन में सुख देने वाले तथा नीचग्रह सदैव दुःख देने वाले माने जाते हैं, ऐसा विद्वानों का विचार है।

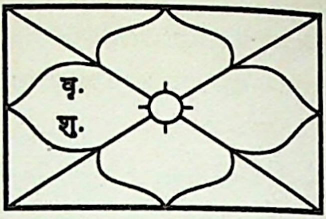
अथ चिरकालभोगीयोगः।।

तुर्यस्थिते धर्मपतौ सशुक्रे वलान्विते स्याच्चिरकालभोगी।।

लम्बे समय तक सुख भोगने का कारण

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में नवां भाव पति

चिरकालभोगी योगः।



शुक्र से युक्त स्थित हो तथा अधिक शक्तिशाली भी हो, तो ऐसा जातक एक लम्बे समय तक सुखों का उपभोग करता है।

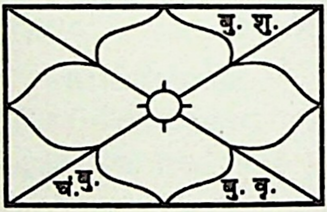
यानि उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक के जीवन में अधिकांश समय भाँति-भाँति के सुखों का उपभोग करते हुए व्यतीत होता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में किसी प्रकार के दुःख, रोग शोक अथवा अभाव का सामना नहीं करना पड़ता। उसका जीवन लम्बे समय तक सुखों का उपभोग करते हुए जीवन व्यतीत होता है।

अथाऽल्पकालभोगीयोगः।।

शुभान्विते रंध्ररिपुव्ययस्थे तदाल्पकालं सुखभोगयुक्तः।।३४।।

अल्पकालीन सुख भोगने का योग

अल्पकालभोगी योगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में नवें भाव का स्वामी शुभ ग्रहों से युक्त छठे, आठवें, बारहवें स्थानों में स्थित हो, ऐसा व्यक्ति थोड़े समय तक ही जीवन में सुख भोगता है, यानि उसका अधिकांश समय समस्याओं एवं जीवन के अभावों को दूर करने में ही गुजरता है। उसके जीवन के सुखें का भोग अल्पकालीन ही माना गया है।

अथ सुखादिचिंताज्ञानमाह।।

सौख्यचिंता गृहेड्यां मातृचिंता सुखेंदुतः।।
सुयेचगृहशुकाभ्या बलवाहन भूषणम्।।३५।।

अब सुखादि के चिंतन के विषय में बताते हैं।

व्याख्या—जन्मलग्न तथा बृहस्पति द्वारा सुखों का विचार करें तथा चौथे भाव एवं चन्द्रमा से माता का विचार करें और जन्मलग्न व शुक्र से वस्त्र, सुगंध, वाहन एवं जेवरात आदि का विचार करना चाहिए।

अथ सुगंधमाल्यादिसौख्ययोगः।।

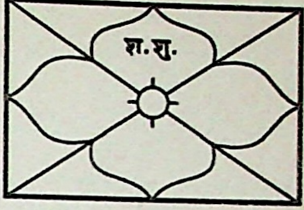
सुख्यैश्वरः शोभनराशियुके शुकेणदृष्टे यदि संयुते वा।।
नीचारिमूढ़ग्रहदृष्टिहीने स्त्ररगंधमाल्यादिसुखं समेति।।३६।।

सुगन्ध, माला आदि के सुखों का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी शुभ ग्रहों की राशि में स्थित हो तथा शुक्र जैसा दिखाई पड़े अथवा शुक्र से युक्त हो

तथा नीच शत्रु मूढ़ ग्रह की दृष्टि से हीन हो, तो ऐसा जातक फूलों की सुगन्ध एवं माला आदि का सुख भोगता है। यानि उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को जीवन भर सुगन्धित वातावरण उपलब्ध होता है तथा उसे फूल-मालाओं आदि को धारण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

सुगंधमाल्यादिसौख्योग:।।



अथ वस्त्रादिज्ञानम्।।

वीर्यान्विते शीतकरे सुवस्त्रं साहिध्वजे जीर्णसुखंसमेति।।
कौशेयकं जीवयुतेच रक्तं चित्रं सशुक्रे सशनौ तु कृष्णम्।।३७।।

वस्त्र आदि की जानकारी

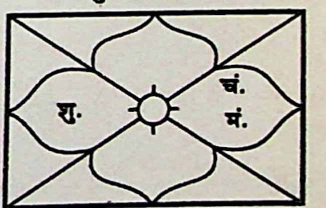
व्याख्या—यदि पूर्वोक्त योग शक्तिशाली चन्द्रमा से युक्त हो, तो ऐसा जातक उत्तम वस्त्रों को धारण करता है; तथा यदि वह राहु केतू से युक्त हो, तो पुराने वस्त्रों को धारण करेगा; तथा यदि वह बृहस्पति से युक्त हो तो रेशमी वस्त्रों का धारण करने वाला होता है। मंगल से युक्त हो, तो लाल वस्त्र धारण करे, शुक्र से युक्त हो तो रंग-बिरंगे वस्त्र पहने तथा शनिश्चर से युक्त होने पर काले वस्त्रों को धारण करने वाला होता है।

अथ पशुधनलाभयोग:।।

सौख्याधिनाथे भृगुचंद्रवर्गे युक्तेक्षिते वा भृगुपुत्रचंद्रे।।
नीचारिपापग्रहदृष्टिमुक्ते पश्वादिवित्तं लभते मनुष्य:।।३८।

पशु धन के लाभ का योग

पशुधनलाभ योग:।



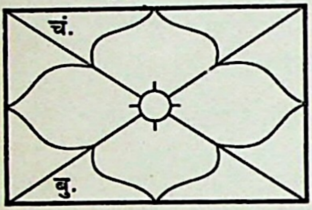
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी शुक्र चन्द्रमा के वर्ग में स्थित हो, तथा शुक्र चन्द्रमा से युक्त हो अथवा दिखाई पड़े, तो नीच शत्रु पापग्रहों की दृष्टि से रहित हो, तो ऐसा पशुधन का लाभ प्राप्त करता है। अर्थात् ऐसे ग्रह योग वाले जातक के जीवन में पशुधन विशेष रूप से लाभकारी होता है। ऐसे व्यक्ति के यहां आजीवन पशुधन की कोई कमी नहीं रहती। उसकी पशुशाला में सदैव कोई-न-कोई पशु अवश्य रहता है।

पशु-पालन ऐसे व्यक्ति के लिए विशेष रूप से हितकारी, स्वास्थ्यवर्द्धक एवं सौभाग्यप्रद होता है। उसके यहां पशुधन की कभी हानि नहीं होती। पशुधन उसके यहां सदैव वृद्धि को प्राप्त होता है।

अथ बंधुपूज्ययोगः।।

सुखस्थानाधिपे सौम्ये सौम्यखेटविलोकते।।
कारके बलसंपूर्णे बंधुपूज्योभवेन्नरः।।३९।।

बंधुपूज्य योगः।



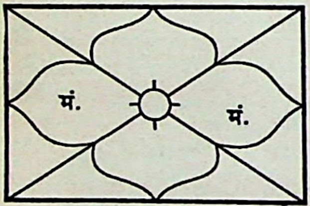
बन्धु-बान्धवों में पूज्य होने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी ग्रह हो तथा शुभ ग्रहों की राशि में स्थित हो और शुभ ग्रहों के सम्पर्क में हो तथा चौथे भाव का कारक ग्रह अत्यधिक शक्तिशाली हो, तो ऐसा व्यक्ति सदैव बंधु पूज्य (भाइयों द्वारा सदैव सम्मान प्राप्त करने वाला) होता है।

अथ बन्धूपकारकृद्योगः।।

बन्धूपकारकर्ताच तुर्य्येशे केन्द्रकोणगे।।
लाभभावगते वापि पापदृग्योगवर्जिते।।४०।।

बंधूपकारकृद्योगः।



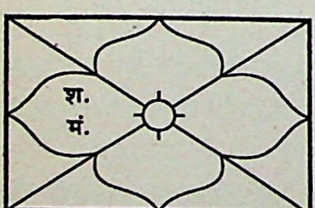
भाइयों के प्रति उपकारी होने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी केन्द्र १/४/७/१० कोण ५/९ या ग्यारहवें भाव में स्थत हो तथा पापग्रहों के योग एवं दृष्टि से रहित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने बन्धु-बांधवों पर सदैव उपकार करता है, यानि वह सदैव ऐसे कार्य करता है जो उसके भाइयों के लिए हितकारी हों।

अथ कपटीयोगः।।

रंध्रपे पापसंयुक्ते कपटी सौख्यसंस्थितः।।

कपटीयोगः।



छल-कपट का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में आठवें भाव का स्वामी पापग्रहों से युक्त चौथे भाव में स्थित हो, तो ऐसा प्राणी कपटी होता है।

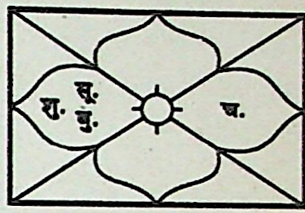
अर्थात् ऐसे व्यक्ति के मन में सदैव छल-कपट वाली भावना रहती है। उसकी बातों में धोखा, छल, फरेब एवं झूठ की अधिकता रहती है।

अथ निष्कापटच्योगः।।

निष्कापटंच शुभैर्दृष्टे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगः।।४१।।

निष्कपट होने का योग

निष्कापटच्योगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय आठवें भाव का स्वामी चौथे भाव में अपने उच्च अथवा मित्र के या अपनी ही राशि में स्थित हो तथा शुभ ग्रहों जैसा दिखाई पड़े, तो ऐसा व्यक्ति निष्कपट होता है। अर्थात् उसके दिल में कोई छल-प्रपंच या धोखे वाली बात नहीं होती, साथ ही उसकी वाणी सत्य एवं सार्थक भी होती है।

अथ शुद्धहृदययोगः।।

विशुद्धहृदयः शांतो हृदयेशे वलान्विते।।
गोपुराद्यंशके बापि मृद्वंशादिसमन्विते।।४२।।

शुद्ध हृदय योग

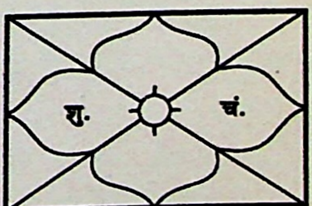
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी शक्तिशाली हो, तो वह मनुष्य शुद्ध हृदय वाला होता है और चौथे भाव का स्वामी गोपुरादि अंशों में स्थित हो या मृद्वंशादिक भाग में स्थित हो, तो वह प्राणी शुद्ध हृदय वाला होता है। अर्थात् ऐसे प्राणी के मन में भावों का कोई विकार नहीं होता। ऐसा व्यक्ति सदैव सबके हित की बात सोचता है।

अथ वाहनलाभयोगः।।

वाहनेशे बलयुते तुर्यभावसमन्विते।।
शुभग्रहेण संदृष्टोवाहनादिफलं भवेत्।।४३।।

सवारी (वाहन) लाभ का योग

वाहनलाभयोगः।

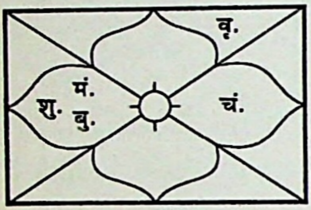


व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव में ही स्थित हो तथा शुभ ग्रह उसके सम्पर्क मे हों, तो ऐसा प्राणी वाहनादिकों के फल को प्राप्त करता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को निश्चय ही वाहन (सवारी) का सुख प्राप्त होता है।

यह सवारी (वाहन) घोड़ा, रथ, खच्चर, गधा आदि भी हो सकता है तथा आधुनिक काल का वाहन कार, स्कूटर, मोटर गाड़ी आदि भी हो सकती है। ये

वाहन उसके व्यक्तिगत भी हो सकते हैं तथा नौकरी पर मिलने वाली सुविधाओं के अन्तर्गत भी हो सकते हैं। जैसे कोई चालक अथवा परिचालक (ड्राइवर, कन्डेक्टर) आदि हो सकता है।

वाहनेशे वाहनस्थे सेंदुजे शुभवीक्षिते।।
शुभखेचरसंयुक्ते वाहनादिफलं भवेत्।।४४।।



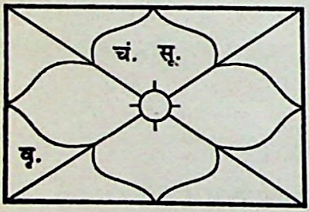
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव में बुध से युक्त हो तथा शुभ ग्रहों जैसा दिखाई पड़े और शुभ ग्रहों से युक्त भी हो, तो ऐसे प्राणी को वाहनादिकों का फल प्राप्त होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को निश्चय ही वाहन का सुख प्राप्त होता है, चाहे वह उसका व्यक्तिगत वाहन अथवा नौकरी की सुविधाओं के अन्तर्गत आता हो।

अथ तुरंगवाहनवंतयोगः।।

चंद्रोविलग्नसंबन्धी वाहनेशसमन्विते।।
तुरंगवाहनं तस्य वन्दति मुनिपुंगवाः।। ४५।।

तुरंगवाहनवंतयोगः।



घोड़े की सवारी का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में चन्द्रमा चौथे भाव के स्वामी के साथ जन्मलग्न में स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को घोड़े की सवारी प्राप्त होती है, ऐसा मुनीश्वरों का कथन है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को निश्चय ही घोड़े की सवारी का लाभ होता है। चाहे यह उसे व्यक्तिगत वाहन के रूप में मिले अथवा राजा की सेवा में प्राप्त हो। हमारे मुनीश्वरों का कहने का आशय यह है कि ऐसे जातक को निश्चय ही घोड़े की सवारी का सुख प्राप्त होता है।

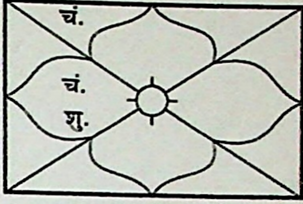
अथाश्वलाभयोगः।।

द्वितीये वा चतुर्थे वा चंद्रे। शोभनराशिगः।।
शुभखेचरसंयुक्ते समुपैत्यश्व वाहनम्।। ४६।।

अश्व लाभ का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में दूसरे अथवा चौथे भाव में

अश्वलाभयोगः।



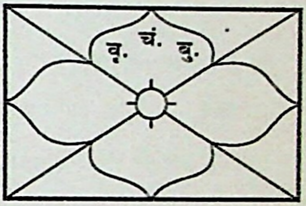
चन्द्रमा शुभ ग्रहों की राशि में स्थित हो और शुभ ग्रहों से युक्त हो, तो ऐसे व्यक्ति को अश्वलाभ होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को निश्चय ही अश्वलाभ होता है। घोड़ों से सम्बन्धित किसी भी व्यापार में उसे उच्च लाभ की प्राप्ति होगी।

तथाच अश्वलाभयोगः।।

सेंद्रौ चतुर्थाधिपते विलग्ने लग्नेश्वरेणाऽपि युतेऽश्वलाभम्।।

अश्वलाभयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की वेला में चन्द्रमा से युक्त चौथे भाव का स्वामी जन्मलग्न में स्थित हो तथा लग्न के स्वामी से युक्त हो, तो ऐसा व्यक्ति अश्व (घोड़े) का लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

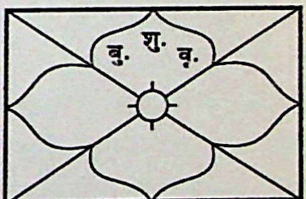
अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाला जातक निश्चय ही अश्वलाभ को प्राप्त करता है। यदि ऐसा व्यक्ति घोड़ों का व्यापार करे अथवा घोड़े से चलने वाला कोई वाहन चलाता है, तो भी उसके लिए विशेष रूप से लाभकारी होता है।

अथ नरवाहनवंतयोगः।।

शुक्रेण युक्ते यदि वाहनेशे देहान्विते वा नरवाहनं स्यात्।।४७।।

पालकी योग

नरवाहनवंतयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म-काल में चौथे भाव का स्वामी शुक्र से युक्त हो तथा जन्म लग्न में स्थित हो तथा लग्न के स्वामी से युक्त हो, तो ऐसा व्यक्ति पालकी की सवारी को प्राप्त करता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाला व्यक्ति निश्चय ही इतना सम्पन्न होता है कि वह कहीं भी जाने के लिए पालकी की सुविधा प्राप्त कर सकता है।

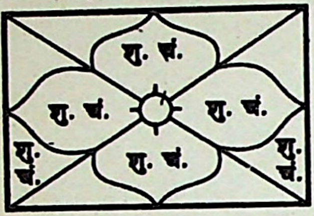
अथादोलिकालाभयोगः।।

आंदोलिकाभरणदौ सितपूर्णचंद्रौ।।
केंद्रत्रिकोणगृहणौ बलिनौ भवेताम्।।

डोली या पालकी लाभ योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में शुक्र और १/४ पूर्ण चन्द्रमा केन्द्र

आंदोलिकालाभयोगः।



७/१० त्रिकोण ५/९ स्थान में शक्तिशाली होकर स्थित हों, तो ऐसे व्यक्ति को पालकी अथवा डोली की सवारी से युक्त, आभूषणों को प्राप्त होता है तथा पर्वतीय प्रदेश में झथान एवं डांडी की सवारी का सुख प्राप्त होता है।

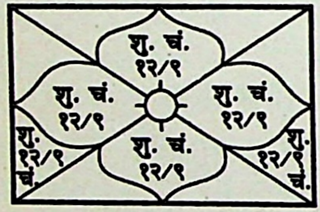
अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को निश्चय ही डोली अथवा पालकी की सवारी का सुख मिलता है तथा उसे भाँति-भाँति के आभूषण भी पहनने को प्राप्त होते हैं।

अथ रक्तवस्त्रभूषणप्राप्तयोगः।।

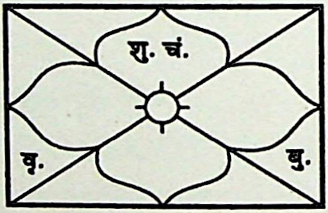
रक्तांवराभरणदौ सुरपूजितर्क्षे,
चंद्रे सुरेन्द्रसचिवेक्षितसंयुते वा।। ४८।।

लाल रंग के वस्त्र एवं आभूषणों की प्राप्ति का योग

रक्तवस्त्रभूषणलाभयोगः।



भूषणलाभयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय धनु, मीन राशिवर्ती पूर्वोक्त योग हों, तो ऐसा प्राणी लाल रंग के वस्त्र तथा स्वर्णाभूषणों को प्राप्त करता है एकोयोगः तथा पूर्वोक्त योगकारक चन्द्रमा वृहस्पति से युक्त हो, तो ऐसा व्यक्ति आभूषणों का लाभ प्राप्त करने वाला होता है। अर्थात् ऐसे प्राणी को निश्चय ही लाल रंग के वस्त्रों एवं स्वर्णाभूषणों का लाभ प्राप्त होता है।

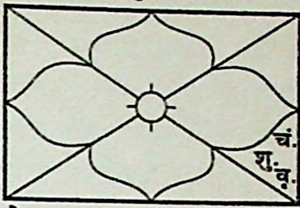
अथांदोलिकातुरंगलाभयोगः।।

आंदोलिका तुरगलाभ मुपैतिजातः,
शुक्रेन्दुपानपतयस्तनुनाथयुक्ताः ।।

डोली व घोड़े के लाभ का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में शुक्र, चन्द्रमा तथा चौथे भाव का स्वामी लग्नेश से युक्त भाव में स्थित हों, तो ऐसे व्यक्ति को डोली की सवारी तथा घोड़े का लाभ प्राप्त होता है।

आंदोलिकातुरंगलाभयोगः।



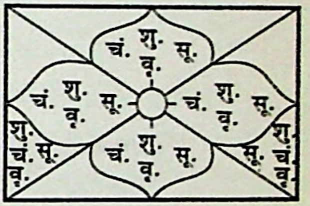
अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को डोली की सवारी तथा अश्व का लाभ यानि घोड़ों वाले रथ, इक्का, तांगा अथवा टमटम की सवारी का भी लाभ होता है।

अथ चतुरंगवाहनप्राप्तयोग:।।

एकत्र देवगुरुयानपंचद्रशुकाः,
केन्द्रत्रिकोणगृहगाश्चतुरंगयानम् ।। ४९।।

चतुरंग वाहन प्राप्ति का योग

चतुरंगवाहनप्राप्तयोगः।



व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में वृहस्पति तथा चौथे भाव का स्वामी एवं चन्द्रमा शुक्र एकत्रित केन्द्र १/४/७/१० त्रिकोण ५/९ भावों में स्थित हों, तो ऐसा प्राणी हाथी, घोड़े, पालकी तथा रथ—इन चारों प्रकार की सवारियों का लाभ प्राप्त करता है।

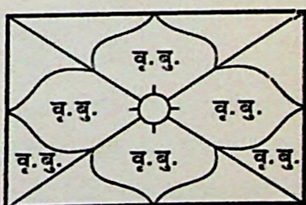
अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाला जातक निश्चय ही इतना सम्पन्न होता है कि वह हाथी, घोड़े, पालकी व रथ द्वारा कहीं भी आने-जाने की सुविधा प्राप्त कर सकता है।

तथाच चतुरंगवाहनवंतयोग:।।

वाहनेशे जीवयुक्ते चतुरंगाख्यवाहनम्।।

चतुरंग वाहन का अन्य योग

चतुरंगवाहनवंतयोगः।



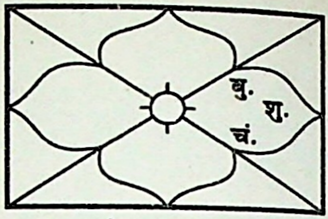
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव के स्वामी से युक्त वृहस्पति केन्द्र १/४/७/१० कोण ९/५ भावों में स्थित हो, तो ऐसा प्राणी चतुरंग वाहनों वाला होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले जातक को चतुरंग वाहन (हाथी, घोड़ा, पालकी व रथ) की प्राप्ति होती है। वह इतना सम्पन्न होता है कि वह हाथी, घोड़ा, पालकी अथवा रथ को कहीं भी आने-जाने के लिए वाहन के रूप में प्रयुक्त कर सकता है। वर्तमान काल में इसका आशय कार, जीप, बस, ट्रक आदि से समझना चाहिए।

अथ छत्रचामरयुक्तयोग:।।

यानेशे सशुभे माने छत्रचामरसंयुतः।।५०।।

छत्रचामर युक्त योग

छत्रचामरयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी शुभ ग्रह से युक्त दसवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति छत्र और चामर का धारण करने वाला राजा होता है।

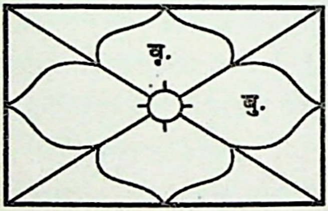
अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति या राजा बनकर छत्र-चामर आदि का सुख प्राप्त करता है, अथवा वह व्यक्ति इतना सुख-सम्पन्न एवं वैभवशाली हो जाता है कि उसके राजाओं जैसे ठाठ-बाट होते हैं तथा छत्र-चामर आदि को धारण करता है।

अथ वाहनवंतयोगः।।

तुर्येश्वरःकेंद्रगते तदीशे मूर्तिस्थिते वाहनवंतयोगः।।

वाहनवंत योग

वाहनवंतयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी केन्द्र १/४/७/१० में स्थित हो तथा उस स्थान का स्वामी मूर्तिभाव में स्थित हो, तो ऐसा मनुष्य वाहनवंत होता है।

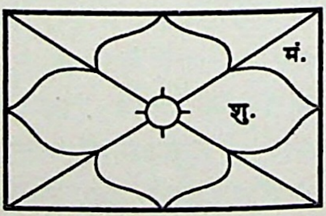
अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति निश्चय ही इतना सम्पन्न होता है कि वह अपने उपभोग के लिए वाहन रख सकता है।

अथ भूषणवंतयानयोगः।।

राज्येश्वरे चापगते तदीशे राज्यस्थिते भूषणवंतयानः।। ५१।।

भूषण युक्त सवारी का योग

भूषणवंतयानयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति की जन्म की बेला में दसवें भाव का स्वामी ग्यारहवें भाव में स्थित हो तथा ग्यारहवें भाव का स्वामी राज्यभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति आभूषणों से युक्त एवं सवारी वाला होता है।

अर्थात् वह इतना सम्पन्न होता है कि पहनने के लिए विभिन्न प्रकार के आभूषणों एवं कहीं आने-जाने हेतु अपनी सवारी (वाहन) रखता है।

अथ राज्यलाभयोगत्रयम्।।

सुखेशे लाभभावस्थे यानेशे लाभगेकुजे।।

अथवा भौमराशिश्चेद्राज्यलाभो न संशय।। ५२।।

राज्य लाभ वाले तीन योग

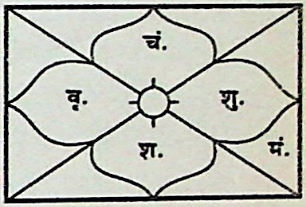
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी ११वें भाव में स्थित हो एकोयोगः अथवा चौथे भाव का स्वामी मंगल ११वें भाव में स्थित हो द्वितीयो योगः अथवा चौथे भाव का स्वामी मंगल की राशि में स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को राज्य लाभ की प्राप्ति होती है। इसमें कोई संशय की बात नहीं है।

अथ सर्वसौख्यलाभयोगः।।

देहाद्वाहनराशिगस्तदधिपस्तद्वीक्षकश्च त्रयः।।
स्वोच्चे स्वर्क्षे सुहृद्गृहेषु बलिनः केंद्रत्रिकोणापगाः।।
दीर्घायुः शयनांशनांवरवहुक्षेत्राणि सन्मंदिरं,
बंधुस्नेहमनोज्ञवाहनयशः सौख्यानि कुर्वंति ते।। ५३।।

सब प्रकार के सुख लाभ का योग

सर्वसौख्यलाभावयोगः।



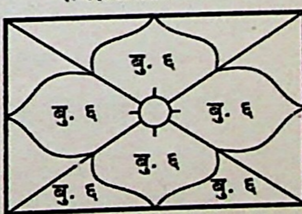
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में जो ग्रह स्थित हो तथा चौथे भाव का स्वामी और जो ग्रह चौथे भाव के सम्पर्क में हों, ये तीनों ग्रह अपने उच्च तथा अपने क्षेत्र के मित्रों के घर में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति लम्बी आयु पाने वाला, उत्तम सेजों पर सोने वाला तथा स्वादिष्ट, उत्तम एवं महंगा भोजन करने वाला, आकर्षक व सुन्दर वस्त्रों को पहनने वाला तथा बहुत से ग्रामों वाला और सुन्दर वाहनों, सवारियों वाला, बड़ा यशस्वी एवं अनेक प्रकार के सुखों के भोगने वाला, राजसी ठाठबाट वाला होता है।

अथ सर्वसंपत्तिलाभयोगः।।

उच्चराशिस्थितः सौम्यः केंद्रकोणसमन्वितः।।
विद्यावाहनसंपत्ति करोति विपुलं धनम्।। ५४।।

सर्वसम्पत्ति लाभ-योग

सर्वसंपत्तिलाभयोगः।



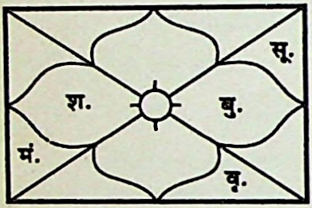
व्याख्या—जिस व्यक्ति की जन्म की बेला में उच्च राशि में बुध केन्द्र १/४/७/१० कोण ५/९ भावों में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विद्या, वाहन (सवारी) तथा अनेक प्रकार की सम्पदा एवं अधिकाधिक धन का लाभ प्राप्त करता है। अर्थात्

उपरोक्त ग्रहयोग वाले व्यक्ति की उच्च शिक्षा, व्यक्तिगत वाहन तथा अनेक प्रकार के ऐश्वर्य एवं सम्पत्ति का लाभ निश्चय ही प्राप्त होता है।

अथ श्रीराजचिह्नांकितयोगः।।

देहेशासुखनाथतद्भवनगौ भाग्येशभाग्ये स्थितौ,
चत्वारः शुभवर्गगाः सुवलिनस्ते लग्नसंबंधिनः।।
अन्योन्याश्रित बीक्षिता यदि महीपालाश्चिरायुः सुखी,
तेजस्वी चतुरंगयानविपुलश्रीराजचिह्नांकितः।। ५५।।

श्रीराजचिह्नांकितयोगः।



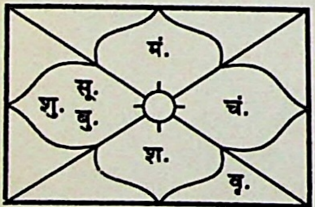
राज-चिह्नों से अंकित योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में लग्नेश जिस स्थान में स्थित हो, वहाँ से चौथे भाव का स्वामी तथा चौथे भाव में स्थित जो ग्रह नवें भाव का स्वामी तथा नवें भाव में स्थित जो ग्रह, ये चारों शुभ ग्रहों के वर्ग में स्थित हों तथा शक्तिशाली हो और जन्म लग्न से स बद्ध हों तथा परस्पर राशियों में स्थित हों या परस्पर सम्पन्न हों, तो ऐसा व्यक्ति राजा, दीर्घायु, सुखी व तेजस्वी व सेना का स्वामी बहुत-सी सवारियों से युक्त तथा राजचिह्नों से सुशोभित होता है।

अथ विचित्ररत्नादिसौख्ययोगः।।

खेटास्त्रयः स्थानबलोविलग्ने विचित्ररत्नाऽभरणानिसौख्यम्।।

विचित्ररत्नादिसौख्ययोगः।



विचित्र रत्नादि के सुखों का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में तीन ग्रह अधिक शक्तिशाली होकर जन्म लग्न में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति अद्भुत रत्नों एवं भाँति-भाँति के विचित्र आभूषणों के सुख को प्राप्त करता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाला व्यक्ति निश्चय ही इतना सम्पन्न होता है कि विचित्र एवं अमूल्य रत्नों तथा आभूषणों को धारण करने का सुख प्राप्त करता है।

अथ सौख्यलाभयोगः।।

खेटद्वये वीर्ययुते विलग्ने तदीयपाके समुपैति सौख्यम्।।५६।।

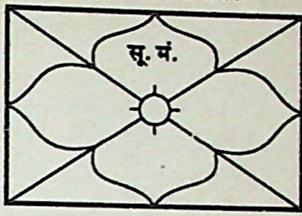
सुख लाभ-योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में दो ग्रह अधिक शक्तिशाली

होकर जन्म लग्न में स्थित हों, तो वह अपनी दशांतरदशा में सुख प्रदान करने वाले होते हैं।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाले व्यक्ति को जीवन में अन्न-धन, सम्पदा व सन्तान आदि समस्त प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। उसे जीवन में कोई अभाव नहीं सताता। धन, ऐश्वर्य के भंडार भरे रहते हैं। उस पर लक्ष्मी की सदैव कृपा होती है तथा समस्त रोग, शोक व दुःखों से दूर रहता है।

सौख्यलाभयोगः।।



अथ राज्यलाभयोगः।।

चतुर्थधर्माऽयधनाधिनाथा विलग्नसंबन्धबलाधिकश्चेत्।।
तदीयपाके समुपैति राज्यं क्रमेणलाभं धनलाभमर्थम्।। ५७।।

राज्यलाभ योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे, नवें तथा ११वें और दूसरे भाव के स्वामी जन्मलग्न से सम्बद्ध हों व अधिक शक्तिशाली हों, वो इस ग्रह दशांतर दशा में वह व्यक्ति निश्चय ही क्रमशः राज्य का लाभ, धन का लाभ तथा सभी प्रकार की धन सिद्धियों का लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

ते चत्वारोधिकबलयुता देहसंबंधिनश्चे-
देतत्सर्वं भवति विपुलं दुर्बला दुःखदाःस्युः।।
मिश्रं मिश्रैस्तनुपरियवः कारकोभावनाथो-
भावाक्रांतो विगतबलिनश्चेदतिक्लेशदास्ते।। ५८।।

व्याख्या—पूर्वोक्त चारों भावों के स्वामी अधिक शक्तिशाली होकर लग्न से सम्बद्ध हों, तो उक्त फल देते हैं तथा यदि उक्त चौथे, नवें, दूसरे, ११वें भावों के स्वामी क्षीण हों, तो दुख-दरिद्र को देते हैं तथा दो भावों के स्वामी अधिक शक्तिशाली हों तथा दो निर्बल हों, तो मिला-जुला फल देते हैं तथा लग्नेश व शत्रुभाव का कारक ग्रह और भावनाथ निर्बल होकर भाव में स्थित हों, तो उस व्यक्ति को दशांतर दशा में क्लेश कर देते हैं।

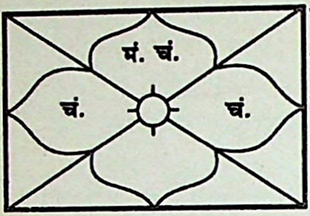
अथ वाहनप्रददशामाह।।

लग्नकर्मसुखस्थाने बलीवाहनराशिपः।।
लग्ने लग्नेशसंबन्धी तद्दशा वाहनप्रदा।। ५९।।

वाहन दाता दशा

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में जन्मलग्न व दसवें और चौथे भावों

वाहनप्रदयोगः।



में शक्तिशाली होकर चौथे भाव का स्वामी स्थित हो तथा लग्न के विशेष लग्नेश से सम्बन्धित हों, तो उक्त ग्रहों की दशा उस प्राणी को वाहन (सवारी) दिलाने वाली होती है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाला व्यक्ति निश्चय ही इतना सम्पन्न एवं गुणी होता है कि वह अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए किसी वाहन को रख सकता है।

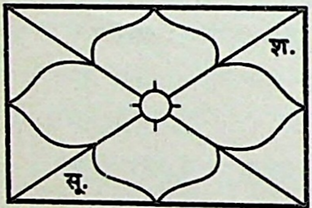
अथ चलवाहनयोगः।।

पातालेशेऽरिनाचस्थे त्रिक्स्थे भाग्याधिपेक्षित।।
दुष्टवाहनसंप्राप्तिश्चलवाहनदाऽथवा ।। ६०।।

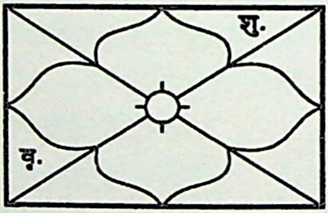
दुष्ट वाहन योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी शत्रु राशि में या अपनी नीच में स्थित हो तथा छठें, ८वें, १२वें भाव में स्थित हों तथा नवें भाव के

दुष्टवाहनवंतयोगः।



चलवाहनवंतयोगः।



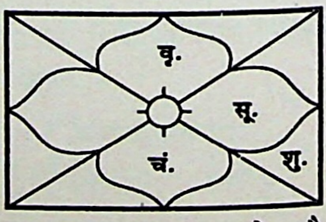
स्वामी जैसे दिखाई पड़ें तो उस व्यक्ति को दुष्ट वाहन की प्राप्ति कहना चाहिये अथवा ऐसे प्राणी को चलायमान वाहन मिलता है। यह उस व्यक्ति के लिए उपयोगी नहीं होता।

अथ वाहनांतेऽतिदुःखदायोगः।।

कर्मधर्माविलग्नस्थाः स्वोच्चस्थेऽपि् शुभग्रहाः।।
देहाधिपेन संदृष्टा वाहनांतेतिदुःखदाः।। ६१।।

वाहन के अन्त में अति दुखदायी योग

वाहनांतेदुःखयोगः।

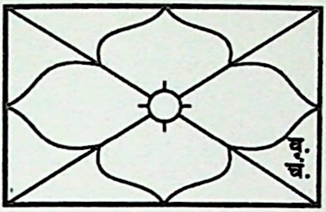


व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में दसवें तथा नवें तथा जन्म लग्न में शुभग्रह स्थित हों, अपने उच्च में तथा लग्नेश सम्पृक्त हो, तो वह व्यक्ति वाहन के अन्त में काफी दुःख को प्राप्त करता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति इस वाहन के कारण अन्त में बहुत दुःख प्राप्त करता है। इस वाहन पर उसका व्यय अधिक होता है तथा लाभ कम होता है जो कि दुःखदायी होता है।

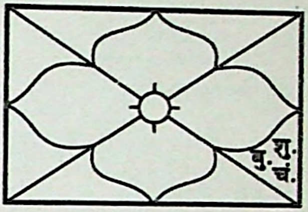
अथ राजप्रतापान्वितयोगः।।

जीवे वा सुखपे शुभग्रहयुते देहात्तपोभावगे,
सौम्यर्क्षे नरवाहनं चिरसुखी राजप्रतापान्वितम्।।

राजप्रतापान्वितयोगः।



राजप्रतापान्वितयोगः।



राजप्रताप से युक्त योग

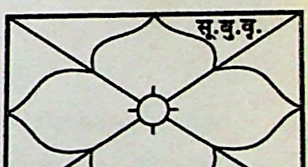
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में वृहस्पति या चौथे भाव का स्वामी शुभग्रह से युक्त नवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति काफी समय तक सुख लाभ को पाने वाला, पालकी की सवारी वाला तथा राज प्रताप से युक्त होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाला व्यक्ति निश्चय ही इतना सम्पन्न होता है कि वह प्रत्येक प्रकार के सुखों का उपभोग कर सकता है; पालकी की सवारी एवं राजाओं जैसे ठाठवाट वाला होता है।

अथ यानाद्यसौख्ययोगः।।

त्रिक्स्थे क्रूरयुतेऽस्तनीचरिपुगे यानादिसौख्यं न हि।

यान आदि का सुख न देने वाला योग

यानाद्यसौख्ययोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय वृहस्पति या चौथे भाव का स्वामी पाप (नीच) ग्रहों से युक्त, आठवें या बारहवें में स्थित हो तथा अस्त नीच शत्रु राशि में स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को यान यानि वाहन आदि का सुख प्राप्त नहीं होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मे प्राणी की आर्थिक स्थिति कुछ ऐसी रहती है कि वह चाहकर भी यान आदि का सुख प्राप्त नहीं कर पाता है। उसका अपना कोई व्यक्तिगत वाहन नहीं होता।

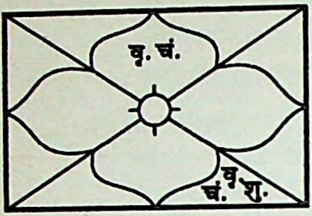
अथांदोलिकावाहनयोगः।।

स्वर्क्षे स्वोच्च बलाधिके चिरतरं चांदोलिकारोहणम्।।६२।।

आंदोलिका डोली वाहन, योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में अपनी राशि या अपनी उच्च

आंदोलिकावाहनयोगः।

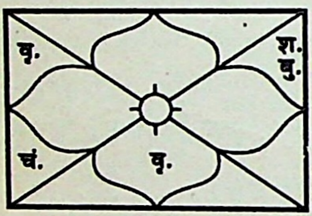


राशि में वृहस्पति या चौथे का स्वामी स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति को पालकी, डांडी या तामझाम की सवारी का सुख प्राप्त होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा व्यक्ति ऐसी आर्थिक स्थित वाला होता है कि उसे निश्चय ही पालकी, डांडी या तामझाम की सवारी का सौभाग्य प्राप्त होता है। वह इन सबका अथवा इनमें से किसी एक का सुख प्राप्त कर सकता है।

अथ राज्यप्रदभाग्योगः।।

सुखधर्मगृहाधीशौ चायस्थे शुभवीक्षकौ।।
बलान्वितौ यदि स्यातां भाग्यराज्यप्रदो भवेत्।। ६३।।

राज्यप्रदभाग्ययोगः।



राज्य-सुख दिलाने वाला भाग्य योग

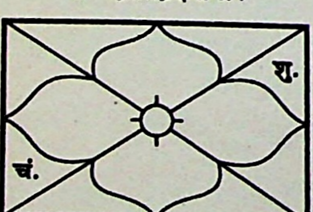
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे तथा नवें भाव के स्वामी ११वें भाव में स्थित हों तथा शक्तिशाली हों, शुभ ग्रहों के समान प्रतीत हों, तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य राज्य कर देने वाला माना गया है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रहदशा मैं जन्मा जातक निश्चय ही इतना भाग्यशाली होता है कि उसे हर हाल में राज-सुख की प्राप्ति होती है। उसे जीवन में कोई अभाव नहीं रहता।

अथ राज्यप्रदयोगः।।

बंधुधर्मगृहाधीशौ लाभस्थौ शुभवीक्षकौ।।
वाहिनी सर्वसौख्याढ्यो राजप्रीतिकरोभवेत्।। ६४।।

राज्यप्रीतिप्रदयोगः।



राज्य दिलाने वाला योग

व्याख्या—जिस मानव के जन्म के समय चौथे या नवें भाव के स्वामी ग्यारहवें भाव में स्थित हों तथा शुभ ग्रहों जैसे प्रतीत हों, तो ऐसा व्यक्ति सेना का स्वामी (सेनापति) सभी सुखों से युक्त, राजप्रीति को प्राप्त करता है।

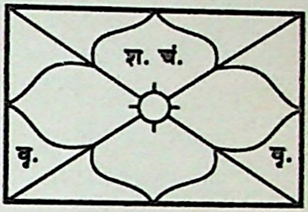
अर्थात् उपरोक्त ग्रहयोग में जन्मा प्राणी निश्चय ही सेनापति, प्रत्येक प्रकार से सुख से युक्त होता हुआ राजा का कृपापात्र होता है।

अथ राजलक्ष्मीलाभयोगः।।

सुखधर्मगृहाधीशौ देहसंबंधिनौ यदि।।
जीवदृष्टियुतौ तस्य राजवश्यादिभूषणम्।। ६५।।

राज्य-लक्ष्मी लाभ योग

राजवश्यादिलाभयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे, नवें भावों के स्वामी जन्मलग्न से सम्बन्धित हों तथा वृहस्पति जैसे दिखाई पड़ें, तो ऐसा व्यक्ति राज्य वश्यादि आभूषणों का सुख प्राप्त करता है।

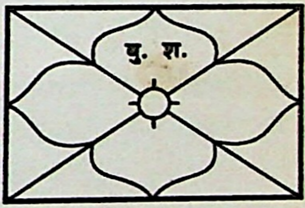
अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा व्यक्ति निश्चय ही राज्य के द्वारा दिये गये आभूषणों को धारण करने का सुख प्राप्त करता है। उस पर राज्य की सदैव कृपादृष्टि बनी रहती है तथा राजा से अनेक प्रकार के आभूषण आदि प्राप्त करता है।

अथ सेनाधिपतिर्योगः।।

भाग्यवाहनराशीसौ सौम्यखेटसमन्वितौ।।
बलान्वितौ यदि स्यातां श्रीमान्सेनाधिपोभवेत्।। ६६।।

सेनाधिपति योग

सेनाधिपतिर्योगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में नवें तथा चौथे भाव की राशियों के स्वामी शक्तिशाली हों तथा शुभग्रहों से युक्त हों, तो ऐसा व्यक्ति लक्ष्मीवान तथा सेना का स्वामी होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह दशा में जन्मा जातक निश्चय ही इतना सौभाग्यशाली होता है कि वह धन-ऐश्वर्य से सदैव युक्त होता है तथा कोई बड़ा सेनापति होता है। अर्थात् वह धनवान् होने के साथ-साथ महान पराक्रमी भी होता है।

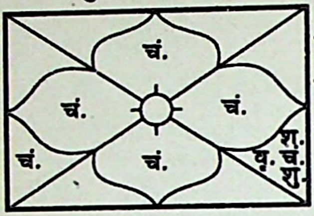
अथ बहुदेशाभरणयोगः।।

तपस्थिते वाहनगेहनाथे सजीवशुक्रे शुभखेटराशौ।।
धर्माधिपेकेन्द्रत्रिकोणसंस्थे वहूनि देशाभरणंसुयानम्।। ६७।।

बहुदेशाभरण योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय नवें भाव में चौथे भाव का स्वामी बृहस्पति तथा शुक्र से युक्त शुभग्रहों की राशि में स्थित हो, तो नवें भाव का स्वामी

बहुदेशाभरणयोगः।

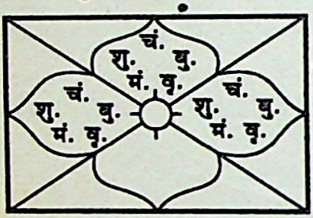


केन्द्र १/४/७/१० कोण ५/९ भावों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति बहुत से देशों का भ्रमण तथा उत्तम सवारी के सुख को प्राप्त करता है।

अथ वहुदेशाधिपतिर्योगः।।

कामशत्रुसुखंबंधुः धर्मदेहव्ययेश्वराः।।
लग्नकर्मसुखस्थाने वहुदेशाधिपोभवेत्।। ६८।।

बहुदेशाधिपतियोगः।



बहुत से देशों का स्वामी होने वाला योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सातवें, छठे तथा चौथे, तीसरे व नौवें लग्न तथा व्यय भाव के स्वामी लग्न दसवें, चौथे भावों में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत से देशों का स्वामी होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा जातक निश्चय ही इतना सम्पन्न एवं पराक्रमी होता है कि उसके आस-पास के छोटे-मोटे राजा उसके अधीन रहते हैं।

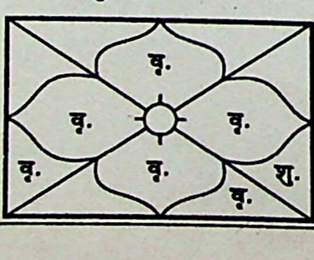
अथ वहुवाहनवंतयोगः।।

तुर्याधिपो दैत्यगुरुर्गुरुर्वा बली विलग्नान्नवमोपयातः।।
चतुष्टये कोणगते तपेशो जातः प्रयुक्तो वहुवाहनानि।। ६९।।

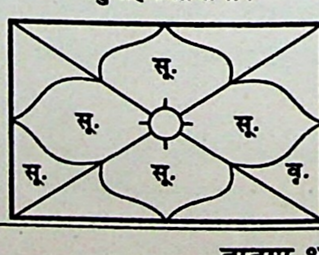
बहुत से वाहनों का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी शुक्र हो या वृहस्पति हो तथा शक्तिशाली होकर नवें भाव में स्थित हो तथा नवें भाव का स्वामी केन्द्र १/४/७/१० कोण ५/९ में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अनेक वाहनों का सुख प्राप्त करता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा जातक निश्चय ही

वहुवाहनवंतयोगः।



वहुवाहनवंतयोगः।



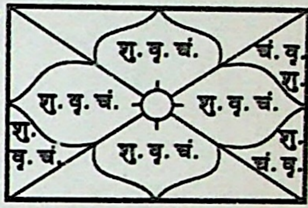
इतना सम्पन्न होता है कि वह अपने व्यक्तिगत प्रयोग के लिए अनेक वाहन रख सकता है।

अथ वहुदेशभागीयोग:।।

सशुक्रजीवस्तुर्य्येशाः केन्द्रकोणाऽपसंस्थितः।।
वहुसेनासमायुक्तोवहुवाहनदेशभाक् ।। ७०।।

बहु देश भागी योग

वहुदेशभागीयोग:।



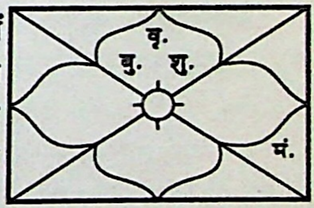
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय शुक्र से युक्त वृहस्पति तथा चौथे भाव का स्वामी केन्द्र १/४/७/१० कोण ५/९ आप ११ स्थानों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति बहुत सी सेवाओं से युक्त अनेक वाहनों वाला तथा बहुत-से देशों पर राज्य करने वाला होता है। वह इतना सुखी, सम्पन्न एवं पराक्रमी होता है कि आस-पास के अनेक देश उसका प्रभुत्व स्वीकार करते हैं।

अथ सिंहासनयोग:।।

लग्ने जीवे बुध:शुक्र स्वोच्चधर्मगतोग्रहः।।
द्रव्येशे केन्द्रभावस्थे जातः सिंहासनप्रदः।। ७१।।

सिंहासन प्राप्ति का योग

सिंहासनयोग:।



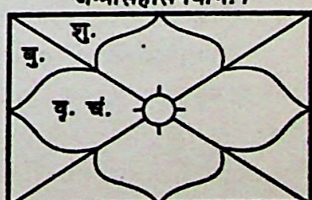
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में जन्म लग्न में बृहस्पति, बुध, शुक्र स्थित हों तथा उच्च का कोई ग्रह नवें भाव में स्थित हो तथा धन का स्वामी केन्द्र १/४/७/१० स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजसिंहासन के सुख को प्राप्त करता है।

अथ जन्मसिंहासनयोग:।।

धर्म्मे सौम्येक्षिते केन्द्रे शुभयुक्तधनाधिपे।।
उच्चखेटधनस्थोवा जन्मसिंहासनप्रदः।। ७२।।

जन्म से ही सिंहासन का योग

जन्मसिंहासनयोग:।



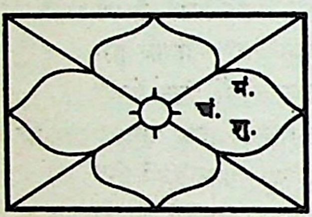
व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में नवां भाव शुभग्रहों के समान प्रतीत हो, तथा दूसरे भाव का स्वामी शुभ ग्रह से युक्त केन्द्र १/४/७/१० में स्थित हो तथा दूसरे भाव में उच्च राशिगत कोई

ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने जन्मकाल से ही राजसिंहासन को प्राप्त होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रहदशा में जन्म लेने वाला प्राणी निश्चय ही राज्य का उत्तराधिकारी होता है या राजा का ज्येष्ठपुत्र होता है जो कि जन्म से ही राजसिंहासन का अधिकारी होता है।

अथ सिंहासनपतिर्योगः।।

राज्यलग्नसुखाधीशा राजभावगता यदि।।
व्योमपो देहसंबन्धी सिंहसानपतिर्भवेत्।। ७३।।

सिंहासनपतिर्योगः।



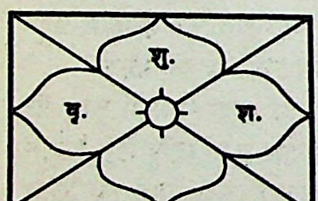
सिंहासनपति योग

व्याख्या—जिस मानव के जन्म के समय दसवें तथा जन्मलग्न व चौथे भाव के स्वामी दसवें भाव में स्थित हों तथा दसवें का स्वामी लग्न से सम्बन्धित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजसिंहासन का स्वामी अर्थात् राजा होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह दशा में जन्मा प्राणी निश्चय ही कोई बड़ा राजा बनकर सिंहासन का सुख भोगता है।

अथ मण्डलाधिपतिर्योगः।।

भृगुजीवशुभाधीशाः कोणकेंद्राऽयसंस्थिताः।।
वहुवाहनसंपन्न सभवेन्वमंडलेश्वरः।। ७४।।

मण्डलाधिपतिर्योगः।



मण्डलाधिपति योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में शुक्र, वृहस्पति तथा नवें भाव का स्वामी, ये तीनों कोण ५/९ केन्द्र १/४/७/१० भावों में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत से वाहनों से युक्त एक देश का राजा होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा जातक निश्चय ही अनेक प्रकार के वाहनों से युक्त होता है तथा किसी एक देश पर राज्य करता है।

अथ सिंहासनप्राप्तियोगः।।

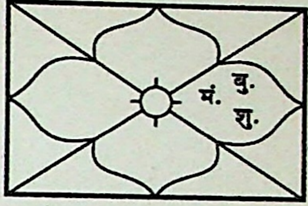
सुखेशकर्मोपगतौ बलिष्ठौ भाग्येशदृष्टौ यदि वा युतौ स्यात्।।
अन्योन्यक्षेत्रेपि समागतौवा सिंहासनाधीश वदंतिसंत।। ७५।।

सिंहासनप्राप्ति का योग

व्याख्या—हमारे सत्पुरुषों का कथन है कि जिस व्यक्ति के जन्म की बेला

में चौथे भाव का स्वामी तथा दसवें भाव के अन्तर्गत आने वाले ग्रह ये दोनों ही शक्तिशाली हों और नवें के स्वामी जैसे प्रतीत हों या युक्त हों या एक-दूसरे की राशियों में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राजसिंहासन का स्वामी होता है।

सिंहासनप्राप्तियोगः।



अथ सिंहासनप्राप्तिकालमाह।।

तद्दशांतरदशाकाले तद्राश्युपदशागमे।।
तदीयभुक्तिसंप्राप्ते सिंहासनपतिर्भवेत्।। ७६।।

सिंहासनप्राप्ति काल का वर्णन

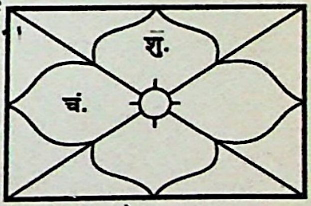
व्याख्या—पहले बताये गये योगकारक ग्रहों की दशांतर दशा में या जिस राशि में योगकारक ग्रह स्थित हों, उस राशि के स्वामी की दशा, अन्तरदशा में सिंहासन की उपलब्धि होती है।

अथातीवसौख्यकारकयोगः।।

तपोदयेशौ सुखभावयातौ तुर्य्याधिपः कल्पगतः शुभर्क्षे।।
अत्यंतसौख्यं लभते मनुष्योरिपुस्थितोवा यदि शत्रुभाग्यम्।। ७७।।

अत्यन्त सुखकारी योग

अतीवसौख्ययोगः।



व्याख्या—'जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में, नवें भाव तथा लग्नेश चौथे भाव में स्थित हों, तथा चौथे भाव का स्वामी जन्मलग्न में स्थित हो, शुभग्रह की राशि में बैठे हों, तो ऐसा प्राणी अनेकानेक सुखों को भोगता है तथा यदि वही चौथे का स्वामी छठे भाव में स्थित हो, तो उस व्यक्ति के दुश्मनों का भाग्य बढ़ता है।

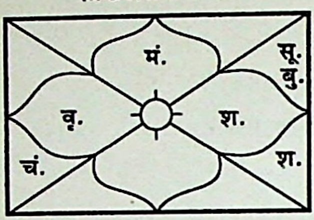
अथ सौख्यलाभयोगः।।

अमित्रभावाधिपतौ शुभस्थे शुभैरदृष्टे बलसंयुते वा।।
चतुर्थभावाधिपपाककाले ददाति सौख्यं मुनयोवदंति।। ७८।।

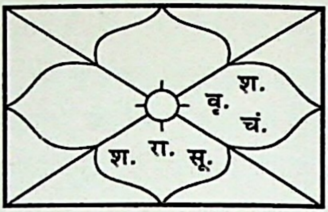
सुखलाभ का योग

व्याख्या—हमारे मुनियों का कथन है कि जिस प्राणी के जन्म की बेला में छठे भाव का स्वामी नवें भाव में स्थित हो तथा पापग्रहों की दृष्टि से पूर्णतः मुक्त हो या शक्तिशाली हो, तो ऐसे व्यक्ति को चौथे भाव के स्वामी की दशा में सुख प्राप्त होता है।

सौख्यलाभयोगः।



शत्रुवृद्धियोगः।



अथ शत्रुवृद्धियोगः।।

तुर्य्याधिपः सौम्यखगेन युक्तास्तदीयपाके वहुशत्रुवृद्धिम्।।
क्रूरान्विते तस्य दशावसाने पुनः स्वभाग्यं प्रकरोतिसर्वम्।। ७९।।

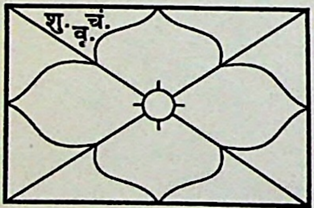
शत्रुओं के बढ़ने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी शुभ ग्रहों से युक्त हो, तो वह अपनी दशा में अनेकानेक दुश्मनों को बढ़ाता है तथा यदि वह छठे का स्वामी पाप (नीच) ग्रहों से युक्त हो, तो अपनी दशा के अन्त में उस व्यक्ति के भाग्य को चमकाता है।

अथ वहुक्षेत्रधनान्वितयोगः।।

मातृस्थाने शुभक्षेत्रे तदीशे शुभसंयुते।।
तत्कारके तथा प्राप्ते वहुक्षेत्रधनान्वितः।। ८०।।

वहुक्षेत्रधनान्वितयोगः।



बहुत सी पृथ्वी एवं धन होने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में शुभग्रहों की राशि हो तथा चौथे के स्वामी शुभ ग्रह से युक्त हों तथा चौथे भाव का कारक ग्रह से युक्त हो, तो ऐसा व्यक्ति बहुत सी जमीन तथा धन से युक्त होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह दशा में जन्मा व्यक्ति इतना सुखी, सम्पन्न एवं धन वाला होता है कि वह बहुत-सी जमीन आदि खरीदकर उसका सुख भोग सकता है।

अथ क्षेत्रनाशयोगः।।

तुर्य्येश्वरो नीचअमित्रभागे कालाग्निशूलांतकषष्ठिभागे।।
क्रूरान्विते क्रूरविलोकिते वा स्थानादिनाशं कथयंति संतः।। ८१।।

स्थानादि का नाश योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी नीच

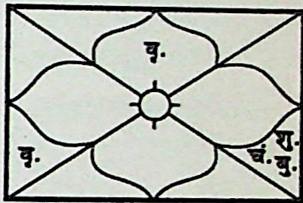
राशि के अन्तर्गत दुश्मन के नवांश में कालाग्नि, शूल तथा यमराज के षष्ठि भाग में स्थित हो तथा पापग्रह से युक्त हो और पापग्रहों के सम्पर्क में हो, तो ऐसे व्यक्ति के स्थान आदि का विनाश होता है।

अथ निक्षेपधनलाभयोगत्रयम्।।

द्रव्येशः ससुखाधिपे नवमगः सौम्यान्विते सौम्यभे,
निक्षेपं समुपैति लाभधनपौ पातालराशिस्थितौ।।

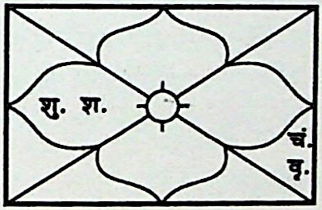
निक्षेप धनलाभ के तीन योग

निक्षेपधनलाभयोगः।

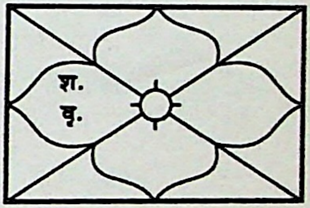


व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में धनभाव का स्वामी चौथे भाव के स्वामी से युक्त हो तथा शुभ ग्रहों की राशि में स्थित हो, तो उस प्राणी को निक्षेप धन का लाभ होता है, एकोयोगः।

निक्षेपधनलाभयोगः।



निक्षेपधनलाभयोगः।



तन्नाथः शुभराशिगः शुभयुतोनिक्षेपसिद्धिर्भवे-
ल्लाभेशः सुखराशिगः शुभयुतोनिक्षेपवित्तप्रदः।। ८२।।

व्याख्या—और ११वें तथा दूसरे भाव में स्वामी चौथे भाव में स्थित हों तथा चौथे के स्वामी शुभ ग्रहों की राशि में स्थित हों व शुभग्रहों से युक्त हों, तो भी उस प्राणी को निक्षेप धन का लाभ मिलता है, द्वितीयो योगः अथवा ग्यारहवें का स्वामी चौथे भाव में स्थित हो तथा शुभग्रहों में युक्त हो, तो भी उस प्राणी को निक्षेप धन का लाभ होता है।

अथ गेहनाशयोगः।।

देहाधिपस्य गृहगो यदि वैरिखेटस्त-
त्पाकभुक्तिसमये गृहक्षोणिनाशम्।।
वाहेशभुक्तिसमये निजबंधुहानि-
र्भूसूनुमंदयुतभुक्तिरनर्थहेतुः ।। ८३।।

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में लग्नेश की राशि में लग्नेश का

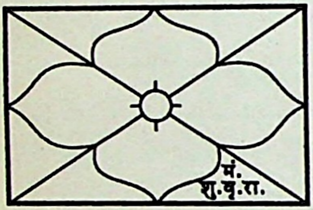
कोई शत्रु ग्रह स्थित हो, उस ग्रह की दशांतर दशा में स्थान एवं पृथ्वी का नाश अथवा हानि बताना चाहिए और यदि चौथे भाव का स्वामी मंगल, शनिश्चर से युक्त हो, तो भ्राताओं की हानि और अनर्थ का हेतु अपनी अंतरदशा में करता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह दशा में अनेक जातक को अपने भाइयों की हानि अथवा वियोग सहना पड़ता है तथा अपनी अन्तरदशा में अनिष्ट या अमंगलकारी कार्य कराता है। ऐसे जातक के सभी ओर से अमंगल ही अमंगल होने लगता है।

अथ गृहनाशसंख्यामाह।।

धनरिष्फगृहाधीशा रंध्रगाः क्रूरसंयुताः।।
यावद्भिरशुभैर्युक्तास्तावद्देहा दरिद्रतः।। ८४।।

संख्यावान्गृहनाशयोगः।



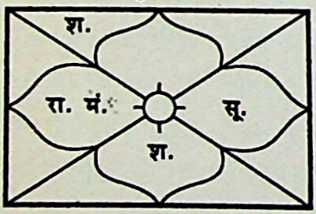
ग्रहनाश की संख्या का वर्णन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में दूसरे तथा व्ययभाव का स्वामी पाप (नीच) ग्रहों से युक्त होकर आठवें भाव में स्थित हो तथा जितने पापग्रहों से युक्त हों, उतने ही स्थानों से ऐसा व्यक्ति विनाश करता है। अर्थात् उतने ही घर या स्थान उसके नष्ट हो जाते हैं।

अथ स्थानदुःखयोगः।।

पापे राहौ क्रूरदृष्टे सौख्यगेहसुखार्तिभाक्।।

स्थानदुःखयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय नीच ग्रह राहु से युक्त तथा नीच ग्रहों जैसे दिखाई पड़ें, तो ऐसा व्यक्ति स्थान के सुख से दुःख को प्राप्त करता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह दशा में जन्मा प्राणी अपने रहने के स्थान पर सुख प्राप्त करने के बजाय अनेकानेक दुःखों को ही भोगता है। वह स्थान उसके लिये दुःखदायी बन जाता है।

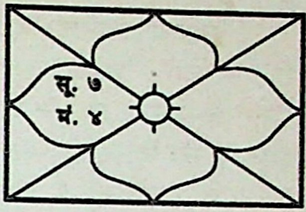
अथ गृहनाशयोगः।।

नीचारातिसुखे सूर्यभौमोवा गृहनाशदः।।८५।।

गृहनाश योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में किसी नीच राशि के अन्तर्गत चौथे भाव में सूर्य या मंगल स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति ग्रहनाश करने वाला होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्म लेने वाला जातक अपने घर का ही नाश कर बैठता है। उसे अपने घर के अन्दर भी कार्य में कोई लाभ नहीं होता। चारों ओर लाभ के स्थान पर हानि-ही-हानि होती है जिसके परिणाम स्वरूप उसका घर नष्ट हो जाता है अथवा आर्थिक तंगी के कारण उसे बेचना पड़ जाता है। इस प्रकार उसके सामने ग्रहनाश का संकट उत्पन्न हो जाता है।



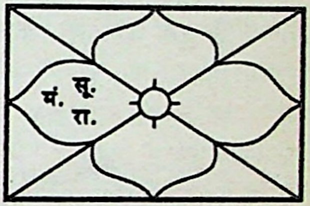
गृहनाशयोग:।

अथ कूपादिगेहे पतितयोग:।।

पापनीचास्तगेहस्थ: कूपादौ च पतिष्यति।।

कुएं अथवा जलाशय में गिरने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में पापग्रह नीच या अस्त होकर सुख भवन में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति, कुएं, जलाशय अथवा किसी नदी आदि में गिरता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मे व्यक्ति को कुएं, तालाब या नदी में गिरने का भय बना रहता है। उसे सावधान रहना चाहिए।



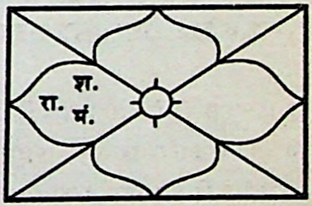
कूपादिगेहेपतितयोग:।

अथ पापीयोग:।।

सुखे पापे पापभागी:।।

पापकर्म भोगने वाला योग

व्याख्या—जिस मानव के जन्म की बेला में चौथे भाव में नीच (पापी) ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही पापकर्म को भोगता है। उसके सभी पुण्य कर्म नष्ट हो जाते हैं। पापकर्म उसके जीवन का अंग बन जाते हैं।



पापीयोग:।

अथ सुखक्षययोग:।।

सुखे मंदे सुखक्षय:।।८६।।

सुखनाश का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में शनिश्चर स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति का सुखनाश को प्राप्त होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग वाला जातक जीवन में समस्त सुखों को खो देता है, उसे सर्वथा दुःख-ही-दुःख मिलते हैं।

अथ विदेशेऽन्यगृहे निवासयोगः।।

गृहेशे रिष्फगे लग्नादन्यगेहोऽन्यदेशगः।।

अपने देश में दूसरे के घर में रहने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी लग्न से १२वें भाव में स्थित हो, तो वह व्यक्ति परदेश में दूसरे के घर में निवास करता है।

अथ गृहरहितयोगः।।

नाशे गृहावाभावोवा-।।

रहने हेतु घर न होने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति स्थानरहित होता है। अर्थात् ग्रहयोग में जन्मे व्यक्ति के पास रहने के लिए अपना व्यक्तिगत मकान नहीं होता, वह इधर-उधर परेशान रहकर ही अपना वक्त गुजारता है।

अथ शुत्रुसमीपे गृहयोगः।।

षष्ठे शत्रुयुतं गृहम्।।८७।।

शत्रु के करीब घर होने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी छठे में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति शत्रु के निकट ही निवास करता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति के निवास-स्थान के आसपास कोई-न-कोई शत्रु अवश्य मिलेगा।

अथ अयत्नतोगृहलाभयोगः।।

अयत्नतो मंदिरलाभदः स्याच्चतुर्थपस्तत्रबलाधिके वा।।

बिना प्रयास के स्थान लाभ का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी अत्यन्त शक्तिशाली हो, तो उस व्यक्ति को बिना प्रयास के स्थान का लाभ प्राप्त होता है अर्थात् ऐसे प्राणी को किसी अन्य के द्वारा ही रहने के लिए सुविधाजनक स्थान मिल जाता है।

अथ गृहेआलस्ययोगः।।

दुःस्थानगोहीनबलान्वितश्चेदालस्यगेहं गृहपीड़ितं वा।।८८।।

घर में आलस्य का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी कम

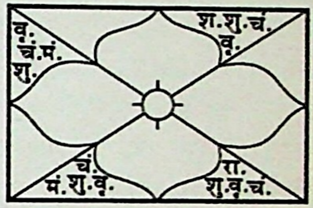
शक्तिशाली होकर छठे, आठवें या बारहवें में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति घर में रहने पर आलसी होता है अथवा उसके घर में भूत-प्रेत का भय बना रहता है।

अथ गृहविनाशसंख्यामाह।।

पद्त्रिव्ययाष्टमोपेता व्ययवित्तगृहाधिपाः।।
यावत्पापसमोपेता स्तावद्गृहविनाशदाः।। ८९।।

गृह विनाश की संख्या का वर्णन

गृहविनाशसंख्यायोगः।



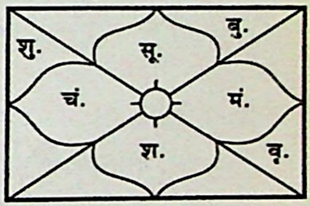
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में छठे, तीसरे, आठवें, बारहवें स्थानों में बारहवें, दूसरे, चौथे भाव के स्वामी स्थित हों तथा जितने पापग्रहों से युक्त हों, उतनी संख्या के स्थानों का ही वह प्राणी विनाश करता है अर्थात् अपने उतने ही घर का नाश करता है।

अथ गृहसंख्यायोगामाह।।

लग्नत्रिकोणकेंद्रस्था यावद्बलसमन्विताः।।
तावत्संख्याकगेहानां समीचीनं वदेद्बुधः।। ९०।।

गृह संख्या के योगों का वर्णन

गृहसंख्यायोगः।



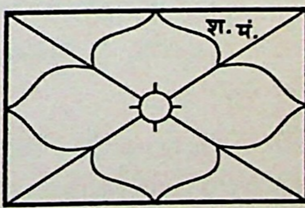
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में लग्नादि केन्द्र १/४/७/१० त्रिकोण भावों में ५/९ जितने ग्रह शक्तिशाली होकर स्थित हों, उतनी ही संख्या के स्थानों का वह प्राणी सुख भोगता है।

अथ जीर्णगेहलाभयोगः।।

पातालभावाधिपतौ व्ययस्थे पापान्विते जीर्णगृहं सुखं स्यात्।।

टूटे-फूटे घर के लाभ का योग

जीर्णगेहलाभयोगः।



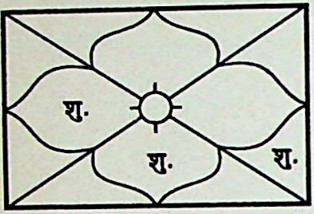
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी पापग्रह युक्त बारहवें में बैठा हो, तो वह प्राणी जीर्ण गृह (टूटे-फूटे, पुराने) घर का सुख प्राप्त करता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्म होने वाले प्राणी को टूटे-फूटे, पुराने घर में रहने पड़ता है। उसकी आर्थिक तंगी के कारण पुराने व टूटे-फूटे घर में रहने पर मजबूर होना पड़ता है।

अथ विचित्रगेहलाभयोगः।।

केन्द्रत्रिकोणोपगते बलाढये विचित्रगेहं लभते मनुष्यः।।९१।।

विचित्रगेहलाभयोगः।



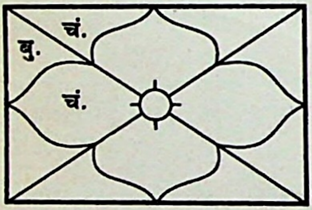
विचित्र घर में रहने का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में चौथे भाव का स्वामी अधिक शक्तिशाली होकर केन्द्र १/४/७/१० त्रिकोण ५/९ भावों में स्थित हो, तो उस प्राणी को विचित्र स्थान का लाभ होता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मे व्यक्ति को अनायास ही किसी विचित्र स्थान का लाभ प्राप्त होता है।

अथ दृढ़मंदिरलाभयोगः।।

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे बलसंयुते।।
स्वोच्चस्वर्क्षनवांशे वा दृढ़मंदिरवान्भवेत्।। ९२।।

दृढ़मंदिरलाभयोग.



दृढ़ स्थान को लाभ कराने वाला योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में तीसरे भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तथा चौथे भाव का स्वामी पूर्णतः शक्तिशाली हो, अपने उच्च अथवा नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दृढ़ स्थान का लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा व्यक्ति निश्चय ही किसी सुरक्षित एवं दृढ़ (मजबूत) निवास स्थान पर रहने का सौभाग्य प्राप्त करता है। यह स्थान उसे बिना किसी प्रयास के अनायास भी मिल सकता है।

अथ गृहविनाशयोगः।।

आज्ञाश्रयात्क्षेत्रविनाशमाहू राज्ञेश्वरो गेहगते सपापे।।
क्रूरांशके मृत्युकरादिभागे रंध्रेश्वरेणापि युते तथैव।। ९३।।

घर के विनाश का योग

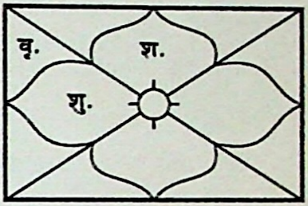
व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में दसवें भाव में नीच ग्रह से युक्त दसवें का स्वामी स्थित हो या चौथे भाव में स्थित हो या क्रूर (दुष्ट) षष्ठांश में मरणकरादि भाग में स्थित हो या आठवें के स्वामी से युक्त हो, तो उस प्राणी का स्थान नाश को प्राप्त होता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति का निवास स्थान शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

अथ प्राकारयुतगेहप्राप्तयोगः।।

तृतीयेसौम्यसंयुक्ते तुर्येशेबलसंयुते।।
कल्पेशेबलंसपूर्णे हर्म्यंप्राकारसंयुतम्।। ९४।।

परकोटा युक्त गृह प्राप्ति का योग

निष्कापटचयोगः।



व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में तीसरे भाव में कोई शुभ ग्रह स्थित हो तथा चौथे का स्वामी अत्यन्त शक्तिशाली हो तथा लग्न का स्वामी भी अधिक शक्ति सम्पन्न हो, तो ऐसा व्यक्ति परकोटा युक्त स्थान को प्राप्त करता है। अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा प्राणी निश्चय ही किसी दुर्ग में रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

अथ दैविकगृहलाभयोगः।।

पारावतांशकेगेहे नाथेगुर्विन्दुवीक्षिते।।
गोपुराद्यंशकेवापि दैविकंगृहमाप्नुयात्।। ९५।।

देवताओं के गृह के समान स्थान के लाभ का योग

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी पारावतांश में स्थित हो तथा वृहस्पति चन्द्रमा के समान दिखाई पड़े या गोपुरादि अंशों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति देवताओं के गृह (घर) के समान स्थान का लाभ प्राप्त करता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा जातक निश्चय ही इतना सम्पन्न, सुखी एवं सौभाग्यशाली होता है कि उसे रहने के लिए देवताओं के घर के समान स्थान प्राप्त होता है।

❑❑❑

१३ चौथे भाव में स्थित ग्रहों के विशेष फल

उक्तंच कश्यपजातके।।

स्वोच्चे १ स्वोच्चनवांशेच २ शुभवर्गे ३ ऽथनीचभे ४।।
नीचांशे ५ क्रूरषड्वर्गे ६ मित्रभे ७ सुहृद्दंशके ८।। १।।
वर्गोत्तम ९ ऽरिभे १० ऽर्य्यंशे ११ स्वर्क्षे १२ द्वादशधाक्रमात्।।
फलंच सुखभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम्।। २।।

चौथे भाव में स्थित ग्रहों के विशेष फल का वर्णन

व्याख्या—अब सुखभाव को बारह प्रकार से फल के विचार के लिए समझाते हैं—यदि कोई ग्रह अपने उच्च में हो १, उच्च के नवांश में हो २ शुभ ग्रह के षड्वर्ग में हो ३ नीचराशि में हो, ४ नीच के नवांश में हो ५ पापग्रहों के षड्वर्ग में हो ६ मित्र की राशि में हो ७ मित्र के नवांश में हो ११ अपनी राशि में स्थित हो १२ यह सुखभाव में स्थित ग्रह को बारह प्रकार से यवनाचार्य जी वर्णित करते हैं।

अथ सुखभावस्थितद्वादशधासूर्य्यफलम्।।

कष्टजं १ स्वल्पविद्रत्नं २ परदारभवं ३ नवं ४।।
दुःखाढ्य ५ ऋणदुःखाढ्यं ६ सपापं ७चौर्यसंभवम् ८।। ३।।
नित्यक्षयं ९ युद्धभवं १० परसेवाभवं ११ तथा।।
वधवंधभवं १२ सूर्ये यदिस्यात्सुखभावगे।। ४।।

व्याख्या—अब सुखभाव स्थित १२ प्रकार से सूर्य का फल समझते हैं—यदि चौथे भाव में सूर्य ऊँची राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही बड़े कष्ट से ही सुख पाता है। तथा यदि सूर्य उच्च के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति थोड़े धन व रत्नों का सुख भोगता है। २ तथा यदि सूर्य शुभ ग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे की पत्नी द्वारा उत्पन्न सुख को भोगता है ३ तथा यदि सूर्य किसी नीच राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नवीन सुख को भोगता

है ४ तथा यदि सूर्य नीच के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दुखों को भोगता है ५ तथा यदि सूर्य नीच (पाप) ग्रहों के छठे वर्ग में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति कर्जे में दबा होकर दुःख भोगता है ६ तथा यदि सूर्य मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पापी होता है ६ तथा यदि सूर्य के नवांशा में स्थित हो, तो वह व्यक्ति चोरी के द्वारा दुःख भोगता है ८।

और यदि सूर्य वर्गोत्तम नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नित्य जप (हानि) को प्राप्त करता है ९ तथा यदि सूर्य शत्रु में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति युद्ध करके सुख भोगता है १० तथा यदि सूर्य शत्रु के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे की सेवा से उत्पन्न सुख को भोगता है ११ तथा यदि सूर्य सुख भाव में अपनी सिंह राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति किसी की हत्या करके बंधन से उत्पन्न यानि कैद का सुख भोगता है १२। यह सुखभाव स्थित १२ प्रकार के सूर्य के फल बताये गये हैं।

अथसुखभावस्थितद्वादशधा चंद्रफलम्।।

गजाश्वजं १ हेमभवं २ नित्यमनेकविधिं तथा ३।।
द्यूतजं ४ भूरिकृषिजं ५ पापजं ६ वहुपुत्रजम् ७।। ५।।
पित्रजं ८ विनयोद्भूत ९ मनीतिजनितं १० तथा।।
कपटोत्थं ११ खलोद्भूतं १२ सुखंचंद्रे सुखस्थिते।। ६।।

व्याख्या—अब सुखभाव में स्थित १२ प्रकार से चन्द्रमा का फल समझाते हैं—यदि चौथे भाव में चन्द्रमा उच्च का स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति हाथी, घोड़ों के सुख को भोगता है १ तथा चन्द्रमा उच्च के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति स्वर्ण (सोने) का सुख भोगता है २ तथा यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों के छः वर्गों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नित्य प्रति अनेकानेक सुखों को भोगता है ३ तथा यदि चन्द्रमा नीच के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति जुआ खेलकर सुख भोगता है ४ तथा यदि चन्द्रमा नीच के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति खेती-बाड़ी का सुख भोगता है ५ तथा यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों के छः वर्गों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पाप कर्मों के सुख को भोगता है ६ तथा यदि चन्द्रमा भिन्न की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति बहुत से पुत्रों से युक्त होकर सुख भोगता है तथा यदि चन्द्रमा मित्र के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने पिता से उत्पन्न सुख से उत्पन्न सुख को भोगता है ८ तथा यदि चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने पिता से उत्पन्न सुख को भोगता है ९ तथा यदि चन्द्रमा शत्रु की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अनीति से उत्पन्न सुख को भोगता है १०

तथा यदि चन्द्रमा शत्रु के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति कपटजनित सुख को भोगता है तथा यदि चन्द्रमा अपनी कर्क राशि में चौथे भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति खलता करके (नीच हरकतों) के द्वारा सुख को भोगता है। यह चौथे भाव में स्थित चन्द्रमा के १२ प्रकार के फल बताये गए हैं।

अथ सुखभावस्थितद्वादशधा भौमफलम्।।

परसूहनजंसौख्यं १ परवंचनसंभवम् २।।
वंचनोत्थं ३ नैवपरं ४ मोषजं ५ बधबंधजं ६।। ७।।

परशोकोत्थ७ मन्यायात् ८ परस्वविलयोद्भवम् ९।।
पौंश्चल्या १० परयेत्युत्थं ११ सुखंमोहा १२ कुजेसुखे।। ८।।

व्याख्या—अब सुखभाव स्थित १२ प्रकार से मंगल का फल समझाते हैं—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सुख भाव में मंगल अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे की रसोई का सुख भोगता है १ तथा यदि मंगल अपने उच्च के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति ठगाई द्वारा सुख भोगता है २ तथा यदि मंगल शुभ ग्रहों के छः वर्गों में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति वाणी के द्वारा सुख को भोगता है ३ तथा यदि मंगल नीच राशि में स्थित हो, तो शत्रुओं से प्राप्त सुख को भोगता है ४ तथा यदि मंगल नीच के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति चोरी के द्वारा सुख भोगता है ५ तथा यदि मंगल पाप ग्रह के षड्वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति किस की हत्या करके बंधन यानि कैद के सुख को भोगता है ६/७ तथा यदि मंगल मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पराये शोक को उत्पन्न करके यानि दूसरों को दुःख देकर सुख भोगता है ७ तथा यदि मंगल मित्र के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अन्याय के द्वारा सुख भोगता है ८ तथा यदि मंगल वर्गोत्तम नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरों के विलाप से सुखी होता है ९ तथा यदि मंगल शत्रु के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति व्यभिचार कर्म से सुख भोगता है १० तथा यदि मंगल शत्रु के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ कर्मों से सुखी होता है ११ तथा यदि मंगल सुख भाव में अपनी मेष अथवा वृश्चिक राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति मोह से सुखी होता है १२ यह सुखभाव में स्थित मंगल के १२ प्रकार के फल बताये गये हैं।

अथ सुखभावस्थितद्वादशधा बुधफलम्।।

महाजनोत्थं १ राजोत्था २ मक्षयं ३ क्लेशजं ४ ततः।।
परसेवासमुद्भूत ५ मथ चांत्यजसंगजम् ६।। ९।।

सुपुत्रजं ७ कलत्रोत्थं ८ कन्योत्थं ९ क्रयविक्रयात् १०।।
पशुपाल्यात् ११ स्वबंधुस्थः १२ सुखं सौम्यसुखेस्थिते।। १०।।

सुख भाव स्थित बुध के १२ फल

व्याख्या—अब सुख भाव स्थित बुध के १२ प्रकार के फलों का वर्णन करते हैं—जिसमें मानव के जन्म की बेला में सुखभाव में बुध अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ पुरुषों के सुख को भोगता है १ तथा यदि बुध उच्च के नवांशा में स्थित हो, तो वह प्राणी राजाओं के सुख को प्राप्त करता है २ तथा यदि बुध शुभ ग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति नष्ट न होने वाले सुख को प्राप्त करता है ३ तथा यदि बुध नीच राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति क्लेश से उत्पन्न सुख को भोगता है ४ तथा यदि बुध नीच राशि के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरे की सेवा करके सुख भोगता है ५ तथा यदि बुध पापग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो, तो वह व्यक्ति अंत्यज जाति के व्यक्तियों की संगत में सुख को भोगता है ६ ॥९॥ और यदि बुध मित्र की राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ पुत्रों के सुखों को भोगता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति के पुत्र सर्वगुण सम्पन्न एवं आज्ञाकारी होते है ७ तथा यदि बुध मित्रों के नवांशा में स्थित हो, तो वह व्यक्ति पत्नी के सुख को भोगता है ८ तथा यदि बुध वर्गोत्तम नवांशा में स्थित हो, तो वह प्राणी कन्या जनित यानि कन्या द्वारा प्राप्त सुखों को भोगता है ९ और यदि बुध शत्रु की राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति क्रय-विक्रय से सुख को भोगता है १० तथा यदि बुध शत्रु के नवांशा में स्थित हो, तो वह व्यक्ति पशु-पालन के सुख को प्राप्त करता है ११ तथा यदि बुध कुछ सुख भाव में अपनी मिथुन कन्याराशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति अपने बंधु-बांधवों के सुख को भोगता है १२ यह सुखभाव स्थित बुध के १२ प्रकार के फल बताये गये हैं।।१०।।

अथ सुखभावस्थितद्वादशधा गुरुफलम्।।

नित्यपूर्णं १ सुखार्द्धेन २ धर्म्मजं ३ नीचसंगजम् ४।।
मिश्रभावात्समुद्भूतं ५ मोषणोत्थं ६ तथांगजम् ७।। ११।।
भृत्यजं ८ भगिनीजातं ९ नीचसेवासमुद्भवम् १०।।
नीचसेवाभवं ११ भूपसगजं १२ सुखगे गुरौ।। १२।।

सुख भाव स्थित वृहस्पति के बारह फल

व्याख्या—अब सुखभाव स्थित वृहस्पति के १२ प्रकार के फल समझाते हैं—जिस व्यक्ति के जन्मकाल में सुख भाव में वृहस्पति अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नित्य ही पूर्णता करके सुख भोगता है १ तथा यदि वृहस्पति

उच्च के नवांशा में स्थित हो, तो वह व्यक्ति सुखार्द्धता के सुख को भोगता है २ और यदि वृहस्पति शुभग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो, तो वह व्यक्ति धर्म से उत्पन्न सुख को भोगता है ३ तथा यदि वृहस्पति नीच राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति पुरुषों के संग से सुख को भोगता है ४ तथा यदि वृहस्पति नीच के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति मित्र भाव से सुख भोगता है ५ तथा यदि वृहस्पति पाप ग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो, तो वह व्यक्ति चोरी के द्वारा सुख भोगता है ६ तथा यदि वृहस्पति मित्र की राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति अपनी खुद की मेहनत से सुखी होता है। ७/११ और यदि वृहस्पति मित्र के नवांशा में स्थित हो, तो वह व्यक्ति सेवकों द्वारा उत्पन्न सुख को भोगता है ८ तथा यदि वृहस्पति वर्गोत्तम नवांशा में स्थित हो, तो वह व्यक्ति बहिन से उत्पन्न सुख को भोगता है ९ तथा यदि वृहस्पति शत्रु की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नीच पुरुषों की सेवा से उत्पन्न धन का लाभ कमाकर सुख भोगता है।

तथा यदि वृहस्पति शत्रु के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नीच की ही सेवा से सुख का लाभ प्राप्त करता है ११ तथा यदि सुख भाव स्थित वृहस्पति अपनी धन या मीन राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा की संगत में सुख भोगता है १२ यह सुख भाव स्थित वृहस्पति के बारह प्रकार के फल समझाये गए हैं।

अथ सुखभावस्थिद्वादशधाभृगुफलम्।।

मित्रजांत १ खरोष्ट्रोत्थं २ गजवाजिसमुद्भवम् ३।।
परदार्यात ४ विनाशोत्थं ५ गुरुपत्नीसमुद्भवम् ६।। १३।।
गोधनोत्थ ७ मजाजातं ८ महिबीजं ९ कुसेवया १०।।
परदेशभवं ११ देवद्विजसंगात १२ सुखे सिते।। १४।।

सुख भाव स्थित शुक्र के १२ के फल

व्याख्या—अब सुख भाव स्थित शुक्र के १२ प्रकार के फल समझाते हैं—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में, सुखभाव में अपनी उच्चराशि में शुक्र स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति मित्र जनित सुख को भोगता है १ तथा यदि शुक्र उच्च के नवांश में स्थित हो तो, ऐसा व्यक्ति गधे व ऊँटों से उत्पन्न सुख को भोगता है २ तथा यदि शुक्र शुभ ग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति हाथी, घोड़ों से उत्पन्न सुख को भोगता है ३ तथा यदि शुक्र नीच राशि में स्थित हो तो, वह व्यक्ति पराई स्त्री का सुख भोगता है ४ और यदि शुक्र नीच के नवांश में स्थित हो तो, वह व्यक्ति विनाश से उत्पन्न सुख को भोगता है ५ और यदि शुक्र पापग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो, तो वह व्यक्ति गुरु की स्त्री से उत्पन्न सुख को भोगता है ६ ।। १३।।

और यदि शुक्र मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति गोधन के सुख को भोगता है ७ तथा यदि शुक्र मित्र के नवांशा में स्थित हो, तो वह व्यक्ति बकरा-बकरी से उत्पन्न सुखों को भोगता है ८ तथा यदि शुक्र वर्गोत्तम नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति भैंसों से उत्पन्न सुख को भोगता है ९ तथा यदि शुक्र शत्रु की राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति दुष्ट पुरुषों की सेवा का सुख प्राप्त करता है १० तथा यदि शुक्र शत्रु के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति परदेश के सुख को भोगता है ११ तथा यदि सुख भाव में शुक्र अपनी वृष या तुला राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति देवता तथा ब्राह्मणों की संगत का सुख भोगता है १२ ये सुख भाव स्थित शुक्र के बारह प्रकार के फल बताये गए हैं।। १४।।

अथ सुखभावस्थितद्वादशधा शनिफलम्।।

पक्षिणोवंधनाद्युत्थं १ मांसाहरिण २ कर्षनात् ३।।
अमानुष्या ४ स्तोकबंधात् ५ पररंध्रातिसंगजम् ६।। १५।।
स्वस्त्रीत्यागभवं ७ स्वीयपोष्यहाने: ८ परार्द्रनात ९।।
परवंचनजंमर्त्यं १० विक्रया ११ द्रुसविक्रयात् १२।। १६।।
सुखं शंनौ सुखस्थे स्यादथ श्रेष्ठं क्रमाच्च तत्।।
विशेषफलामित्युक्तं गर्गादिमुनिसंमतम्।। १७।।

सुख भाव स्थित शनि के बारह प्रकार के फल

व्याख्या—अब सुख भाव स्थित शनिश्चर का फल १२ प्रकार से कहते हैं। जिस प्राणी के जन्म की बेला में सुखभाव में शनिश्चर अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पक्षियों के बंधन करने से सुखी होता है १ तथा यदि शनिश्चर अपने उच्च के नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति मांस-भक्षण के सुख को भोगता है २ तथा यदि शनिश्चर शुभग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति खेती द्वारा सुख भोगता है ३ तथा यदि शनिश्चर नीच राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अमानुषिक (अनैतिक) कार्यों से सुख प्राप्त करता है ४ तथा यदि शनिश्चर पापग्रहों के षड्वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पराई चोरी करने के संग से सुख भोगता है ५ तथा यदि शनिश्चर पापग्रहों के षड़वर्ग में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पराई चोरी करने के संग से सुख भोगता है ६।। १५।। तथा यदि शनिश्चर मित्र की राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपनी पत्नी के त्याग करने से सुखी होता है ७ तथा यदि शनिश्चर मित्र के नवांश में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने पालन किये की हानि से सुख भोगता है ८ तथा यदि शनिश्चर वर्गोत्तम नवांशा में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरों को दुःख देकर सुखी होता है ९ तथा यदि शनिश्चर

शत्रु राशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति ठग विद्या से सुखी होता है १० तथा यदि शनिश्चर शत्रु के नवांश में स्थित हो, तो वह व्यक्ति विक्रय करने से सुख का लाभ पाता है ११ और यदि शनिश्चर सुखभाव में अपनी मकर या कुंभराशि में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति रस के बेचने से सुखी होता है।। १६।।

यदि सुखभाव में शनिश्चर स्थित हो, तो उक्त बारह प्रकार में से सुख देता है। क्रमशः यह ग्रहों का विशेष फल गर्गादि मुनीश्वरों की सम्मति से बताया गया है।। १७।।

❑❑❑

१४ चौथे भाव में स्थित राशियों के फल

चौथे भाव में स्थित राशियों के फल का वर्णन

ऊक्तं च वृद्धयवनः।

वृद्ध यवनाचार्य जी कहते हैं।

अथ चतुर्थभावस्थितमेषराशिफलम्।।

मेषेसुखस्थे लभते मनुष्यश्चतुष्पदेभ्योऽथ विलासिनीभ्यः।।
भोगैर्विचितैः प्रचुरान्नपानैः पराक्रमोपार्जित सद्धनैश्च।। १८।।

चौथे भाव में स्थित मेष राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मेष राशि हो, तो ऐसा व्यक्ति चौपाये जानवरों द्वारा तथा स्त्रियों द्वारा, विचित्र भोग द्वारा अत्यधिक अन्न-पान से युक्त, अपने बल से श्रेष्ठ धन का उत्पन्न करने वाला होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति निश्चय ही इतना सम्पन्न होता है कि वह अनेक चौपाये पशुओं, रमणी भोग, तथा सुस्वादु भोजन का सुख भोग सकता है।

अथ चतुर्थभावस्थितवृषराशिफलम्।।

वृषे सुखस्थे लभते सुखानि नरश्चमान्यैः विविधिश्च भोगैः।।
शौर्य्येण भूपालनिषेवणेन प्रतोपचारैः नियमैः शुभैश्च।। १९।।

चौथे भाव में स्थित वृष राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में वृषराशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सुखों का लाभ करने वाला, अनेकानेक भोगों को भोगने वाला तथा सम्मानपूर्वक व वीरतापूर्वक और राजा की सेवा करके, व्रतों का पालन करके तथा नियमपूर्वक शुभता से युक्त होता है।। १९।।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह योग में जन्मा जातक पूर्णतः अनुशासनप्रिय, संयम, पराक्रमी एवं सदा सुखी रहता है।

अथ चतुर्थभावस्थितमिथुनराशिफलम्।।

तृतीयराशौ सुखगे सुखानि लभेन्मनुष्यो प्रमदाकृतानि।।
जलावगाहै वनसेवया च प्रभूतपुष्पांवरसेवनेन।। २०।।

चौथे भाव में स्थित मिथुन राशि का फल

व्यापार—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मिथुन राशि स्थित हो, ऐसा व्यक्ति सुखों से युक्त, नारियों जैसी शक्ल-सूरत वाला, जल में क्रीड़ा करने वाला तथा बाग-बगीचों में घूमने वाला तथा अनेकानेक वस्त्र एवं पुष्पों से सेवनीय होता है।

अर्थात् उपरोक्त ग्रह दशा में जन्मा प्राणी नारी-सुलभ चेष्टाओं को करने वाला तथा सब प्रकार के सुखों को भोगने वाला होता है। उसके स्वभाव में व कार्यकलाप में नारियों जैसी झलक मिलती है।

अथ सुखभावस्थितकर्कराशिफलम्।।

कुलीरराशौ च यदा सुखस्थे नरं सुरूपं शुभगं सुशीलम्।।
स्त्रीसंगतं सर्वगुणैसमेतं विद्याविनीतं जनवल्लभं च।। २१।।

सुख भाव में स्थित कर्क राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में कर्क राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति स्वरूपवान, श्रेष्ठ भाग्यवाला, यानि सौभाग्यशाली, श्रेष्ठ शील वाला यानि अत्यन्त सज्जन एवं नेक स्वभाव वाला तथा स्त्री की संगति से सर्वगुण सम्पन्न एवं विद्यावान् विनम्रता से युक्त तथा लोकप्रिय होता है।

अथ चतुर्थभावस्तिसिंहराशिफलम्।।

सिंहे सुखस्थेतु सुखं मनुष्यं प्राप्नोति दुःखं प्रचुरप्रकोपात्।।
दरिद्रतः शीलविपर्ययाच्च कुमित्रसंगाद्धनसंश्रयाच्च।। २२।।

चौथे भाव में स्थित सिंह राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सिंह राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सदैव तथा बड़े क्रोध से दुःख को प्राप्त तथा निर्धनता से विपरीत शीलवाला तथा दुष्ट मित्रों से धन का आश्रय करने वाला होता है।

अथ चतुर्थभावस्थितकन्याराशिफलम्।।

कन्यागृहं बंधुगृहे मनुष्यः प्राप्तनोति सौख्यं प्रमदाभियोगात्।।
वह्वन्नपानान्नृपसेवनाद्दा महोद्यमी धर्मनिपेवणाच्च।। २३।।

चौथे भाव में स्थित कन्या राशि के फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में कन्या राशि हो, तो ऐसा व्यक्ति स्त्रियों के संयोग से सुख भोगने वाला तथा बहुत अन्नपान करने वाला, राजा की सेवा करने वाला, बड़ा उद्यम (परिश्रम) करने वाला तथा धर्म में मन को लगाने वाला होता है।

अथ चतुर्थभावस्थिततुलाराशिफलम्।।

तुले सुखस्थे लभते मनुष्यः पैशुन्ययोगाच्च सदासुखानि।।
परोत्थछिद्रे क्षणकीर्तनेन चौर्येण युद्धेन च मोहनेन।। २४।।

चौथे भाव में स्थित तुला राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में तुला राशि स्थित हो, तो वह व्यक्ति पिशुनता से हमेशा सुख भोगता है तथा दूसरों के दोषों को देखकर वर्णन करने वाला तथा चोरों के द्वारा या संग्राम से या मोह के द्वारा सुख भोगता है।

अथ चतुर्थभावस्थितवृश्चिकराशिफलम्।।

अलौ चतुर्थे लभते नितांतं नरं सुतीक्ष्णं परभीतिचित्तम्।।
प्रभृतसेवं गतवीर्यदर्प परैःसुदक्षं मतिधैर्यहीनम्।। २५।।

चौथे भाव में स्थित वृश्चिक राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में वृश्चिक राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सदैव तीखे स्वभाव वाला, दूसरों के भय से भयभीत चित्त वाला तथा बहुत सेवा से दूर हुआ है बल एवं अभिमान जिसका तथा शत्रुओं को दंडित करने में निपुण, धैर्यहीन बुद्धि का स्वामी होता है।

अथ चतुर्थभावस्थितधनराशिफलम्।।

चापे सुखस्थे लभते मनुष्यः सुखंसदा संगरसेवनेन।।
सत्कीर्तितिनैव हयैर्विचित्रैः सेवासुखस्थैरनिबंधनेन।। २६।।

चौथे भाव में स्थित धन राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में धन राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति हमेशा युद्ध का सेवन करने वाला तथा श्रेष्ठ कीर्ति वाला, विचित्र घोड़ों का स्वामी तथा सेवा सुख के बंधन से मुक्त होता है।

अथ चतुर्थभावस्थितमकरराशिफलम्।।

मृगे सुखस्थे सुखभाङ्मनुष्यः सदा भवे त्तोयनिषेवणेन।।

उद्यानवापी तटसंगमेन मित्रप्रचारैः सुरतप्रधानेः।। २७।।

चौथे भाव में स्थित मकर राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मकर राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सुखों को भोगने वाला तथा जल का सेवी तथा बाग-बावड़ी (कुआं) का बनाने वाला व संगम के तट की इच्छा रखने वाला एवं मित्रों का प्रचार करने वाला तथा बुद्धिमानों में प्रधान होता है।। २७।।

अथ सुखभावस्थितकुंभराशिफलम्।।

घटे सुखस्थे प्रमदाविलासी प्राप्तनोति सौख्यं बिबिधंमनुष्यः।।
मिष्ठान्नपानैः फलशाकपत्रैः विदग्धवाक्यैः कुहुकानुकारैः।। २८।।

सुख भाव स्थित कुंभ राशि कर फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में कुम्भ राशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नारियों के साथ भोग-विलास करने वाला तथा अनेक प्रकार का सुख भोगने वाला तथा मिष्ठान, फल, सब्जी, पत्तों का सुख भोगने वाला, बोलने में चतुर, तथा बड़ा कपटी होता है।

अथ चतुर्थभावस्थित मीनराशिफलम्।।

मीने सुखस्थे तु सुखं मनुष्यः प्राप्तनोति नित्यंजलसंश्रयेण।।
सुखैः सदादेवसमुद्भवैश्च स्थानैः सुवस्त्रैः सुधनैः विचित्रैः।। २९।।

चौथे भाव में स्थित मीन राशि का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में मीनराशि स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति नित्यप्रति जलाशयों का सुख पाने वाला, देवतुल्य सुख पाने वाला तथा स्थान, श्रेष्ठ वस्त्रों, उत्तम धन एवं विचित्र सुखों को भोगता है।

❑❑❑

१५ चौथे भाव के स्वामी का लग्न भाव स्थित फल

अथ चतुर्थपर्तालग्नभावस्थितफलम्।।

तुर्यपर्ता लग्नगते मातृपुत्रौं स्त्रेहलौ मिथः कुरुते।।
पितृपक्षे वैरिकलिंत पितृनाम्ना सुप्रसिद्धं च।। ३०।।

चौथे भाव के स्वामी का लग्न भाव स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी जन्म लग्न में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति, माता, पुत्र, परस्पर स्नेह करते हैं तथा पिता से दुश्मनी रखने वाला और पिता के नाम से वह प्रसिद्ध होता है।

अथ चतुर्थपतौधनभावस्थितफलम्।।

पातालये धनस्थे क्रूरखगे पितृविशेधकृच्च।।
शुभे पितृपालकः प्रसिद्धः पिता हि भुक्ते च तल्लक्ष्मीम्।। ३१।।

चौथे भाव के स्वामी का धनभाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी नीच ग्रह होकर धनभाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने पिता से विरोध रखने वाला होता है। तथा यदि सुखभाव का स्वामी शुभ ग्रह हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने पिता का पालन करने वाला, विश्व-प्रसिद्ध पुत्र की लक्ष्मी को पिता भोग करने वाला होता है।

अथ चतुर्थपर्तौसहजभावस्थितफलम्।।

तुर्य्येशे सहजगते पितृमातृछेदकं विदितपितरम्।।
पित्रा सह कलहकरं पितृबांधवपालकं पुरुषम्।। ३२।।

चौथे भाव के स्वामी का सहज भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी तीसरे भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पिता-माता का छेदन करने वाला यानि उन पर प्राणघातक

हमला करने वाला उसका पिता संसार में प्रसिद्ध, वह पिता के साथ बैर रखने वाला, पिता के बांधवों का पालन करने वाला होता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति अपने पिता से तो दुश्मनी रखता है, लेकिन अपने चाचा, ताऊ आदि की मदद करता रहता है।

अथ चतुर्थेशचतुर्थभावस्थितफलम्।।

तुर्यगते तुर्य्यपतौ धरणिनाथश्च मानकरोविदितः।।
पितृलाभपरोभवति सुधर्म्मा सुखी निधिपः।। ३३।।

चौथे भाव के स्वामी का चौथे भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी सुख भाव में ही स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति राज्य-सम्मान को पाने वाला, विश्वप्रसिद्ध, पिता से लाभ को प्राप्त तथा श्रेष्ठ धर्म पर चलने वाला, सुखी एवं खजाने का स्वामी होता है।

अथ चतुर्थपतौंपचमभावस्थितफलम्।।

सुतगे तुर्य्यगृहेशे पितासुलाभोगजश्च दीर्घायुः।।
भवति महीपप्रसिद्धः ससुतः सुतपालकः सोपि।। ३४।।

चौथे भाव के स्वामी का पांचवें भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी पांचवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ लाभ करने वाला तथा उसके पुत्र दीर्घायु तथा राजा के समान प्रसिद्ध, पुत्रवान तथा पुत्रों का पालन करने वाला होता है।

अथ चतुर्थपतौरिपुभावस्थितफलम्।।

हिवुकपतौ रिपुसंस्थे पितुरर्थत्रिनाशकः पितृवैरी।।
पितृदोपकरः क्रूरे सौम्ये धनसंचकस्तनयः।। ३५।।

चौथे भाव के स्वामी का शत्रु भाव स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी, छठे भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पिता के धन का नाश करने वाला, पिता का शत्रु व पिता का दोष करने वाला होता है तथा यदि वहीं चौथे भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो, तो उस व्यक्ति के धन का संग्रह करने वाला पुत्र होता है।

अथ चतुर्थपतौसप्तमभावस्थितफलम्।।

तुर्यपतौ सप्तमगे क्रूरे श्वशुंर स्नुपा न पालयति।।
सौम्ये पालयति पुनः कुलटा तां कुजकवी कुरुते।। ३६।।

चौथे भाव के स्वामी का सातवें भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव के स्वामी पापग्रह हों तथा सातवें भाव में स्थित हो, तो उस व्यक्ति की पत्नी अपनी ससुर का पालन नहीं करती तथा यदि चतुर्थेग्श शुभग्रह हों तो अपने ससुर का पालन करेगी तथा यदि चतुर्थेश मंगल या शुक्र हो तो उसकी पत्नी कुलटा होती है।

अथ चतुर्थपतौअष्टमभावस्थितफलम्।।

छिद्रगते तुर्यपतौ क्रूरे रोगान्वित दरिद्री च।।
दुष्कर्मरतं मृत्युप्रियमथ मानवं कुरुते।। ३७।।

चौथे भाव का स्वामी का आठवें भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी नीच ग्रह हो व आठवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति रोगी शरीर वाला, निर्धन, दुष्कर्मों में तत्पर तथा जान हथेली पर रखकर काम करने वाला होता है।

अथ चतुर्थेपतौनवमभावस्थितफलम्।।

सुकृतगते तुर्यपतौ पितृसमः समस्तविद्यावान्।।
पितृधर्मसंग्रहपरः पितृनिरपेक्षोभवेन्मनुजः।। ३८।।

चौथे भाव के स्वामी का नवें भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी नवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने पिता के समान सम्पूर्ण विधाओं का ज्ञाता, पिता के धर्म को संचित करने वाले तथा उसका पिता निरपेक्ष होता है।

अथ चतुर्थपर्तादशमभावस्थितफलम्।।

पातालपेंवरगते पापे सुतमातरं त्यजेज्जनकः।।
श्रजते त्वन्यां दयितां सौम्ये पुनरन्यसेवावान्।। ३९।।

चौथे भाव के स्वामी का दसवें भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी नीच ग्रह होकर दसवें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पुत्र व माता को त्यागने वाला तथा पिता को भी त्यागने वाला तथा अन्य स्त्री का साथ करने वाला होता है तथा यदि पापग्रह हो, तो ऐसा व्यक्ति अन्य की सेवा करने वाला होता है।

अथ चतुर्थपतौएकादशभावस्थितफलम्।।

एकादशगे तुर्य्याधिपतौ पितृपालकः सुकर्मा च।।

पितृीयक्तोभवति सुतः प्रचुरायुर्व्याधिविकलश्च।। ४०।।

चौथे भाव के स्वामी का ग्यारहवें भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव का स्वामी ११वें भाव में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पिता का पालन करने वाला, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, पिता का भक्त होता है तथा दीर्घायु एवं रोगग्रस्त होता है।

अथ चतुर्थपतौद्वादशभावस्थितफलम्।।

द्वादशगेतुर्यपतौ मृतः पिताविदेशगोवाच्यः।।
पत्रस्य पापखचरे त्वन्यपितुर्जन्मनिर्देशात्।। ४१।।

चौथे भाव के स्वामी का बारहवें भाव में स्थित फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव का स्वामी १२वें भाव में स्थित हो, तो ऐसे व्यक्ति का पिता परदेश में मृत्यु को प्राप्त होता है तथा यदि चौथे भाव का स्वामी नीच ग्रह हो, तो ऐसा बालक अन्य पिता से उत्पन्न समझना चाहिये।

❑❑❑

१६ सुख भाव में स्थित सूर्य आदि ग्रहों के फल

सुख भाव में स्थित सूर्य आदि ग्रहों के फल का वर्णन

उक्तं च वृद्धयवनः।

वृद्ध यवनाचार्य जी का कथन—

अथ चतुर्थभावस्थितसूर्यफलम।।

चतुर्थगः संजनयेत्कृतघ्नं हिंस्त्रं सदाशीलविवर्जिताङ्गम्।।
परोपकारप्रवणं प्रसिद्ध विवेकविद्याभ्यधिकं सदैव।। १।।

चौथे भाव में स्थित सूर्य का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य स्थित हो, तो विवेकी तथा सदैव अधिक विद्वान होता है।।१।।

अथ चतुर्थभावस्थितचन्द्रफलम्।।

सुखस्थितः संजनयेच्छशांकः प्रभूतसौख्यं पुरुषंप्रधानम्।।
स्त्रीणामभीष्ट गुरुदेवभक्त नयप्रधानं गतवैरिरोगम्।। २।।

चौथे भाव में स्थित चन्द्रमा का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चौथे भाव में चन्द्रमा ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पुरुषों का मुखिया होता है। और स्त्रियों का प्रेमी गुरुओं की सेवा करता है तथा देवताओं का भक्त होता है। ऐसा व्यक्ति नीतिनिपुण तथा शत्रु रहित होता है। ऐसा मनुष्य निरोगी एवं सदा सुखी रहता है।

अथ चतुर्थभावस्थितभौमफलम्।।

सुखस्थितः संजनयेन्न वक्रः सुखैर्विहीनो गतदर्पमेव।।
सुबुद्धिहिनं गतबंधुवर्ग व्ययाश्रित कामपरं नृशंसम्।। ३।।

चौथे भाव में स्थित मंगल ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय में चौथे भाव में मंगल ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सुख से हीन, अभिमानहीन, श्रेष्ठ, बुद्धिहीन और कुटम्बों और भाइयों के प्रेम से हीन होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक खर्चीला होता है कामी और पापकर्म को करने वाला होता है।

अथचतुर्थभावस्थितबुधफलम्।।

बुधोविधत्ते बहुबुद्धियुक्तं पातालगः पुष्टशरीरिणं च।।
कृषिक्रियालाभसुखं विनीतं व्याधिप्रमुक्तं परमर्दकंच।। ४।।

चौथे भाव में स्थित बुध का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की वेला में चौथे भाव में बुध स्थित हो, तो ऐसा प्राण बड़ा बुद्धिमान, हृष्ट-पुष्ट, कृषिकर्म से लाभ कमाने वाला, सुखी, विनम्र, निरोगी तथा शत्रुओं का नाशक होता है।

अथ सुखभावस्थितगुरुफलम्।।

सौख्याश्रितः संजनयेत्सुसौख्यं देवेशमंत्री नृपतेरभीष्टम्।।
प्रियातिथिं बांधवलोकमान्यः प्रभूतयानाऽशनभाजनं च।। ५।।

सुख भाव में स्थित वृहस्पति ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चौथे भाव में वृहस्पति ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति, सुख उत्पन्न करने वाला, राजा का प्रिय, अतिथियों का स्वागत करने वाला अपने बंधुओं और संसार में उच्च स्थान प्राप्त करता है तथा उनके स्नेह का भागी होता है। ऐसा प्राणी अनेक वाहन रखता है तथा अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन करता है।

अथ चतुर्थभावस्थितभृगुफलम्।।

सुखाश्रितों भार्गवंनदवस्तु सुखानि सर्वाणि करोति नित्यम्।।
रोगक्षयं साधुजनेन सेव्यं सदानुरक्तं गुरुदेवता च।। ६।।

चौथे भाव में स्थित शुक्र ग्रह का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चौथे भाव में शुक्र ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सभी प्रकार के सुखों का निरन्तर भोग करता है। ऐसा व्यक्ति निरोगी, गुरु और देवताओं का सच्चा भक्त होता है।

अथ चतुर्थभावस्थितशनिफलम।।

चतुर्थसंस्थो जनयेन्मनुष्यं शनैश्चरः सौख्यविवर्जितांगम्।।
विदेशंग चैव पराभिभूतं सुदीनवृत्तिं निजबंधुहीनम्।। ७।।

चौथे भाव में स्थित शनि ग्रह का योग फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चौथे भाव में शनि ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति सुखों से रहित देह वाला, देशाटन करने वाला अथवा परदेश भ्रमण करने वाला होता है। शत्रुओं द्वारा मानहीन, दीनकार्यों के माध्यम से अपनी रोजी-रोटी कमाता है, तथा भाइयों से हीन होता है।

अथ चतुर्थभावस्थितराहुफलम्।।

सुखगते रविचंद्रविमर्दने सुखविनाशयतां मनुजोलभेत्।।
स्वजनितासुतमित्रसुखं नरोन लभते लभते च महाभ्रमम्।। ८।।

चौथे भाव में स्थित राहु ग्रह का योगफल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चौथे भाव में राहु ग्रह स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति दुःखी, स्त्री, पुत्र और मित्र के सुख से हीन होता है, तथा भ्रम के द्वारा सुख कमाता है।

अथ चतुर्थभावस्थितकेतुफलम्।।

चतुर्थेन मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पितृतोनाशमेति।।
शिखीबंधुहीनः सुखं नैव गेहे चिरंनो वसेत्सर्वदा व्यग्रचित्तम्।। ९।।

चौथे भाव में स्थित केतु ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय में चौथे भाव में केतु ग्रह स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति माता के सुख से वंचित रहता है। तथा मित्रों और पिता से सुख नष्ट होता है। ऐसा व्यक्ति घर-सुख से हीन और घर से बाहर रहता है। बांधवों से हीन निरंतर चिन्तित रहता है।

अथ चतुर्थभावस्थितउच्चराशिगतग्रहफलम्।।

अनंतसौख्यः सुरराजमंत्री राजाधिपः सोमसुतः सितश्च।।
सहस्रकः शीतमयूखमाली षष्ठाधिपाः सूर्यशनैश्चराराः।। १०।।

स्वतुंगसंस्थास्त्वनुपाततश्च सौख्यानि यच्छंति सदा ग्रहेंद्राः।।
नीचाश्रिता नीचसुखाभवंति षड्वर्गशुद्धाश्च यथा स्वतुंगे।। ११।।

चौथे भाव में स्थित राशियों के ग्रह का फल योग कथन

व्याख्या—जिस व्यक्ति के चौथे भाव में उच्च राशि में बृहस्पति स्थित हो, तो वह अनन्त सुख को भोगता है तथा यदि बुध, शुक्र स्थित हों, तो वह राजसी सुखों को भोगता है तथा यदि षष्ठेश, सूर्य, शनिश्चर, मंगल स्थित हों, तो कष्ट भोगता है।। १०।।

यदि ग्रह अपने उच्च में स्थित हों, तो पूर्ण सुखकारी फल समझना चाहिये तथा अन्य राशियों में वैराशिक गणित द्वारा जानना चाहिये और यदि नीच ग्रह में स्थित हो, तो नीच सुख करते हैं तथा षड्वर्ग शुद्ध ग्रह उच्च के समान फल देता है।

❑❑❑

१७ सुख भाव में स्थित दो ग्रहों का योग फल

अथ सुखभावस्थितसु.चं. योगफलम्।।

सुख भाव में स्थित दो ग्रहों के योग का फल

चन्द्रान्वितस्तीक्ष्णकरः सुखस्थो नरं सुवित्ते सुतसौख्यहीनः ।।
विपत्तिशीलं परतर्ककश्च प्रभाविहीनं गतसौहृदं च।।१।।

सुख भाव में स्थित सूर्य चन्द्रमा के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य-चन्द्रमा स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ धन तथा पुत्र के सुख से वंचित, विपत्तियुक्त, शीलवाला, शत्रुओं के कारण दुःखी मन वाला तथा कांति रहित, सुहृदताविहीन होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. योगफलम्।।

भौमान्वितस्तीक्ष्णकरश्चतुर्थे नरं विधत्तेक्षतजार्तदेहम्।।
प्रभूतवातात्मपदं विपुण्यं श्रमार्दितं कोपसमन्वितं च।।२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य-मंगल के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सूर्य-मंगल चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति घाव के कारण दुखित देह वाला तथा अत्यन्त वात प्रकृति वाला, पुण्यरहित, मेहनत के कारण क्लेशित तथा क्रोधी होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.बु. योगफलम् ।।

सौम्यान्वितस्तीक्ष्णकरश्चतुर्थे नरं सुवाते फलपीड़ितांगम्।।
स्वल्पात्मजं भूरिपराभिभूतं खलं विदेशे भ्रमणं सदैव।।३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य-बुध के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य बुध स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति वात, कफ से पीड़ित शरीर वाला तथा थोड़े पुत्रों वाला, बहुत

से दुश्मनों के कारण नष्ट, अभिमान वाला, दुष्टता से युक्त, सदैव परदेश में घूमने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.वृ. योगफलम् ।।

जीवान्वितस्तीक्ष्णकरः सुखस्थोनरं प्रसूते वहुपानरक्तम्।।
वाताधिकंरूक्षनरं नृशंसं बद्धासनं लौल्यमतिं प्रगल्भम्।।४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य-बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य-बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक मदिरा का सेवन करने वाला, अधिक बाधा से युक्त, रूखे स्वभाव वाला, पापी, एक जगह स्थित रहने वाला, चंचल बुद्धि वाला, प्रगल्भ होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.शु. योगफलम् ।।

शुक्रान्वितस्तीक्ष्णकरः सुखस्थोनरं प्रसूते मलिनस्वभावम्।।
विहीनवित्तं कृतकस्वभावं पित्ताधिकं कोपसमन्वितं च।।५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य-शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मलिन स्वभाव वाला, धनहीन, सत्यता रहित, अधिक पित्त प्रकृति वाला तथा क्रोधी होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.श. योगफलम्।।

सौरान्वितस्तीक्ष्णकरः सुखस्थोनरं प्रसूते रुजपीड़िताङ्गम् ।।
सुतीव्रकोपं कलहानुरक्तं विमुक्तलज्जा जड़तासमेतम्।।६।।

सुख भाव में स्थित सूर्य शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सूर्य शनि चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति रोग युक्त, अत्यन्त क्रोधी, कलह-प्रिय, बेशर्म एवं मूर्ख होता है।

अथ सुखभावस्थित चं. मं. योगफलम्।।

चंद्रान्वितो भूतनयः सुखस्थः स्वल्पात्मजं संजनयंति मर्त्यम्।।
क्षमाविहीनं परदारसक्तं जनाभिभतं पिशनस्वभावम्।।७।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र मंगल के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र मंगल स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति थोड़े पुत्रों वाला, क्षमा रहित, दूसरों की नारियों में आसक्त, मनुष्यों द्वारा अपमानित, पिशुन स्वभाव वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं.बु. योगफलम्।।

चंद्रान्वितः सोमसुतः सुखस्थोनरं प्रसूते बहुसत्ययुक्तम्।।
प्रसन्नवाक्यं सुविवेकयुक्तं जनप्रियं प्राणिभतां वरिष्ठम्।।८।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र-बुध के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र बुध स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त सत्यप्रिय, सदैव मधुर वचन बोलने वाला तथा विवेकी, लोकप्रिय तथा मनुष्यों में श्रेष्ठ माना जाता है।

अथ सुखभावस्थितचं.वृ. योगफलम्।।

चंद्रान्वितोदेवगुरुः सुखस्थोनरं नयज्ञं सुभगं प्रसूते।।
बहुप्रलापं नृपरेतभीष्टं कृपान्वितं देवगुरुप्रपूज्यम्।।९।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र-बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र-बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नीति का जानने वाला, श्रेष्ठ भाग्य वाला तथा बहुत प्रलाप करने वाला, राजा का प्यारा तथा कृपा युक्त, देवता एवं गुरुओं का पूजने वाला (सम्मान करने वाला) होता है।

अथ सुखभावस्थितचं.शु. योगफलम्।।

चंद्रान्वितोदैत्यगुरुः सुखस्थोजनाग्रगणयं स्वकुलेप्रधानम्।।
प्रभूतमित्रात्मजभूरिसौख्यं विद्याविवेकान्वितधर्मवंतम्।।१०।।

सुख भाव स्थित चन्द्र-शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र-शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मनुष्यों में अग्रगण्य, अपने कुल में प्रधान, बहुत से मित्र एवं पुत्रों वाला अत्यन्त सुखी, विद्या-विवेक से युक्त धर्मवान् होता है।

अथ सुखभावस्थितचं.श. योगफलम्।।

चंद्रान्वितः सूर्यसुतः सुखस्थोनरं प्रसूते पुरुषाभिभूतम्।।
रोगान्वितं क्रोधयुतं प्रगल्भं निंद्यं कृतघ्नं परदेशरक्तम्।।११।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र-शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मनुष्यों द्वारा अपमानित, रोगी, क्रोधी, प्रगल्भ चित्त, निदंनीय, कृतघ्न तथा परदेश में आसक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितमं.बु. योगफलम्।।

भौमान्वितःसोमसुतः सुखस्थोनरं प्रसूते अतजार्तदेहम्।।
स्त्रीचौर्यपानव्यसनाभिभूतं द्यूतप्रिय प्रींतिविहनिसत्यम्।।१२।।

सुख भाव में स्थित मंगल-बुध के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय मंगल-बुध चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति घावों से दुःखी शरीर वाला, स्त्री, चोर तथा मदिरापान के व्यसनों से दुःखी, जुआरी तथा प्रेम एवं सत्य से विहीन होता है।

अथ चतुर्थभावस्थितमं.वृ. योगफलम्।।

भौमान्वितोदेवगुरुः सुखस्थोनरं प्रसूते विकलाङ्गता च।।
कदर्यमल्पात्मजमिष्टपापं स्वबंधुमुक्तं कलहानुरक्तम्।।१३।।

सुख भाव में स्थित मंगल-बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल-बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बेचैन शरीर वाला, तथा डरपोक, थोड़े पुत्रों वाला, पाप कर्म से स्नेह करने वाला, बंधु-बांधवों से त्यागा हुआ तथा हमेशा कलह में आसक्त रहता है।

अथ सुखभावस्थितमं.शु. योगफलम्।।

भौमान्वितोदैत्यगुरुः सुखस्थः करोतिमर्त्य विजितं सुदीनम्।।
चरित्रहीनं रहितस्ववर्गे विद्याविहीनोव्यभिचारशीलम्।।१४।।

सुख भाव में स्थित मंगल-शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में मंगल-शुक्र चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं से जीता हुआ, दीन व चरित्रहीन, अपने बंधु-बांधवों से रहित तथा विद्या से रहित, व्यभिचार कर्म में मन लगाने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितमं.श. योगफलम्।।

भौमान्वितः सूर्यसुतः सुखस्थोनरं प्रसूते वहुदुःखभाजम्।।
असद्व्ययं स्नेहविवर्जितांगं सुनीचकर्म्मे निरतंप्रसिद्धम्।।१५।।

सुख भाव में स्थित मंगल-शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल-शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अनेक दुःखों को भोगने वाला, अनैतिक कार्यों में धन लगाने वाला, तथा प्रेम-रहित शरीर वाला तथा नीच कर्मों के कारण दुनिया में प्रसिद्ध होता है।

अथ सुखभावस्थितबु.वृ. योगफलम्।।

सौम्यान्वितो देवगुरु सुखस्थोनरं प्रसृते बहुसौख्यभाजम्।।

दयाधिकं कीर्तिकरं प्रशांतं नरेंद्रपूज्यं मतिमान्प्रतापी।।१६।।

सुख भाव में स्थित बुध-बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में बुध-बृहस्पति स्थित हों, तो वह प्राणी अत्यन्त सुखी, बड़ा दयालु, संसार में यशस्वी, शांतचित्त, राजाओं द्वारा पूजनीय, काफी बुद्धिमान एवं प्रतापी होता है।

अथ सुखभावस्थितबु. शु. योगफलम्।।

सौम्यान्वितोदेवगुरुः सुखस्थोनरं प्रसूते नृपतेरभीष्ठम्।।
नरेन्द्रतुल्यं सचिवोथवा स्यात्सेनापतिं वाजिगजान्वितं च।।१७।।

सुख भाव में स्थित बुध-शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में बुध-शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राजाओं का प्यार तथा राजाओं के समान या राजा का मंत्री या सेनापति तथा हाथी-घोड़ों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितबु. श. योगफलम्।।

सौम्यान्वितः सूर्यसुतः सुखस्थोनरं प्रसूते विजितारिसंघम्।।
सपीड़िताङ्गं कृपणस्वभावं रोगार्दितांगं खलतासमेतम्।।१८।।

सुख भाव में स्थित बुध-शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में बुध-शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा पीड़ा युक्त देहवाला, स्वभाव से कंजूस, रोगयुक्त शरीर वाला तथा नीच प्रकृति का होता है।

अथ सुखभावस्थितवृ. शु. योगफलम्।।

जीवान्वितोदैत्यगुरुः सुखस्थोनरं प्रसूतेऽर्थसमृद्धिभाजम्।।
सुवर्णमुक्तामणिभृत्सुताढ्यं श्रद्धान्वितं तीर्थरतं सदैव।।१९।।

सुख भाव में स्थित बृहस्पति-शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में बृहस्पति-शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति धन की समृद्धियों का भागी, स्वर्ण मोती तथा मणियों को धारण करने वाला, पुत्रों से युक्त, श्रद्धापूर्वक। तीर्थ करने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितवृ. श. योगफलम्।।

जीवान्वितः सूर्यसुतः सुखस्थोनरं प्रसूते सुखदुःखयुक्तम्।।
सुवाहनाढ्यं गतबंधुवर्गे दीनं सदाद्यूतक्रियाप्रवीणम्।।२०।।

सुख भाव में स्थित बृहस्पति-शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में बृहस्पति-शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सुख और दुःख सहित, वाहनों वाला, बंधु-बांधवों से रहित, दीनता से युक्त तथा हमेशा जुआ खेलने में चतुर पाया जाता है।

अथ सुखभावस्थितशु. श. योगफलम्।।

शुक्रान्वितः सूर्यसुतः सुखस्थोनरं प्रसूतेऽल्पसुखं सुवाक्यम्।।
विरक्तमित्रं भयदं जनानां सदातुरं दुष्टजनैः प्रसेव्यम्।।२१।।

सुख भाव में स्थित शुक्र-शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय में चौथे भाव में शुक्र-शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति थोड़ा सुख भोगने वाला, मधुर वाणी वाला, मित्रों से रहित तथा मनुष्यों को भयभीत करने वाला, सदैव बेचैन तथा दुष्टों के द्वारा सेवनीय होता है अर्थात् दुष्ट लोग ऐसे व्यक्ति का लाभ उठाते रहते हैं।

❑❑❑

१८ सुख भाव में स्थित तीन ग्रहों का योग फल

अथ सुखभावस्थितसू.चं.मं. योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाः सुखगा मनुष्यं सदा प्रकुर्वंति विनिष्टचित्तम्।।
दुर्गन्धियुक्तं मतिहीनमुग्रं पितार्दितं क्लेशयुतं खलं च।।१।।

सुख भाव में स्थित तीन ग्रहों के योग के फल का वर्णन

सुखभाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में सूर्य, चन्द्र, मंगल स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति हमेशा चलायमान मन वाला तथा दुर्गन्धियुक्त शरीर वाला, बड़ा बुद्धिमान, पिता के कारण दुःखी तथा क्लेश युक्त, नीच प्रकृति वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.चं.बु. योगफलम्।।

रवीन्दुसौम्याःसुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति शीलेन विवर्जितं च।।
बहुप्रभादीनतरं कृतघ्न सुकष्टसेवार्जितहृष्टपुष्टम्।।२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, बुध के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्रमा, बुध स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति शील रहित, बड़ा कांतिवान (तेजस्वी), दीनतर एवं कृतघ्नी (किसी का अहसान न मानने वाला), अत्यन्त कष्टदायी सेवा से हृष्ट-पुष्ट (सेहतमन्द) होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.चं.वृ. योगफलम्।।

रवीन्दुजीवाः सुखगा मनुष्यं व्यथार्तिदं क्लेशकुकर्मरक्तम्।।
कुर्वन्ति रोगव्यसनाभिभूतं सौख्यं दरिद्रं मतिवित्तहीनम्।।३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति व्यथा से दुःखी तथा क्लेश (कलेह) एवं कुकर्मों में आसक्त,

रोगों को बढ़ाने वाला, व्यसनों के कारण नष्ट, अभिमान वाला, सुख रहित, दरिद्र एवं बुद्धि व धन से विहीन होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.चं.शु. योगफलम्।।

रवीन्दुशुक्राः सुखगा मनुष्यं सदा प्रकुर्वन्ति कलत्रभाजम्।।
गण्डप्रकोपार्दितसूक्ष्मकार्यं पराभिभूतं नयवर्जितं च।।४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति हमेशा कलत्र (पत्नी) का भोगी तथा गण्डरोग के प्रकोप से क्लेश (दुःखी), शत्रुओं के कारण नष्ट अभिमान वाला तथा नीतिरहित यानि अनैतिक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.चं.श. योगफलम्।।

रवीन्दुसौराः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति वाताधिकमुग्रमेव।।
पराङ्मुखं देवगुरुद्विजानां खलाधिकं प्रीतिकरं सुदुष्टम्।।५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्रमा, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति वायु रोग की अधिकता के कारण क्लेशित व देवता, गुरु, ब्राह्मणों से बहिर्मुख, बहुत से नीच प्रकृति के लोगों से दोस्ती रखने वाला व महादुष्ट होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.मं.बु. योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्याः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति तीव्रं परवित्तलुब्धम्।।
कुटुंबमुक्तं कृतकस्वभावं वंध्याश्रयं शास्त्रपराङ्मुखं च।।६।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पराये धन का लोभी, कुटुम्ब से रहित, सत्यता युक्त स्वभाव वाला, बांझ स्त्री को आश्रय देने वाला एवं शास्त्रों से विमुख होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.मं.वृ. योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्याः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति मातापितृबंधुहीनम्।।
विवेकमोजोरहितं विकामं सुनिष्ठुरं नीचजनानुरक्तम्।।७।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, मंगल,

बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति माता-पिता व बंधु-बांधवों से रहित एवं विवेक व यशविहीन, कामहीन, निर्दयी एवं नीच लोगों में मन लगाने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. शु. योगफलम्।।

सूर्य्यारशुक्राः सुखगा मनुष्यं सदा प्रकुर्वति सुखेन युक्तम्।।
सेनाधिकं शास्त्रकथानुरक्तं रोगार्दितांगं भयसंयुतं च।।८।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, मंगल, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सुखों से युक्त, अधिक सेना वाला, शास्त्र की कथा में मन लगाने वाला, रोगों के कारण पीड़ित शरीर वाला, तथा डरपोक (भयभीत) रहता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. श. योगफलम्।।

सूर्य्यारसौराः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति दुःखैर्विविधैः समेतम्।।
विमुक्तलज्जां जड़तावियुक्तं स्वल्पायुषं नीतिसमन्वितं च।।९।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सूर्य, मंगल, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नाना प्रकार के दुःखों से युक्त एवं बेशर्म, मूर्ख, अल्पायु एवं नीति युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. बु. वृ. योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञजीवाः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति नानाविधदुःखभाजम्।।
कुशीलरक्तं कृपणस्वभावं हर्षेन दुःखं शुभशीलहीनम्।।१०।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बुध, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, बुध, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति तरह-तरह के दुःखों से दुःखी, दुर्जन, महाकंजूस, हर्ष से दुःखी, यानि किसी को सुखी न चाहने वाला, सदाचार से रहित होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. बु. शु. योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञशुक्राः सुखगा मनुष्यं पापेनयुक्तं कृपणं कुशीलम्।।
पित्तप्रकोपार्दितसर्वगात्रं त्रपाविहीनं कुनखं कृतघ्नम्।।११।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बुध, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, बुध, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा प्राणी महापापी, कंजूस, दुराचारी एवं पित्त प्रकोप से दुःखी शरीर वाला, बेशर्म एवं किसी का अहसान न मानने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. बु. श. योगफलम्।।

सूर्य्यज्ञसौराः सुखभावस्थितसू. बु. श. योगफलम्।।
कुमित्रसंगाप्तभयं सदैव विद्वेषशीलं कुटिलस्वभावम्।।१२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बुध, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सूर्य, बुध, शनि चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति चरित्रहीन शरीर वाला, कुसंगत के कारण भयभीत रहने वाला, शत्रुता रखने वाला, शील एवं कड़ुवे (कठोर) स्वभाव का होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. वृ. शु. योगफलम् ।।

सूर्य्यामरेज्याऽसुरपूज्यतुर्ये नरं प्रकुर्वन्ति कुबुद्धिशीलम्।।
विवादयुक्तं कलहप्रसक्तं देवद्विजानां विनयेन हीनम्।।१३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दुर्बुद्धि, दुष्टशील वाला, विवाद प्रिय, कलह में मन लगाने वाला तथा देवतां, ब्राह्मण एवं विनम्रता से विहीन होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. वृ. श. योगफलम्।।

सूर्य्यामरेज्यार्कसुताः सुखास्था नरं प्रकुर्वन्ति परस्वलुब्धम्।।
विमुक्तसत्यं परुषस्वभावं सदा विवेकार्यनयैः समेतम्।।१४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पराये धन का लालची एवं सत्यता से रहित, कठोर स्वभाव वाला, हमेशा विवेक एवं धन तथा नीति से युक्त होता है। अर्थात ऐसा व्यक्ति नीति के जानने वाला व पालन करने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. शु. श. योगफलम्।।

सूर्य्यामरेज्यार्कसुताः सुखास्था नरं प्रकुर्वन्ति सुहृद्विमुक्तम्।।
विरूपरूपं गुणकीर्तिहीनं हीनाधिकांगं धनवर्जितं च।।१५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, शुक्र शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मित्रों से रहित, भयंकर रूप वाला, गुण व कीर्ति (यश) रहित, व्यूनाधिक अंग वाला (टेढ़े मेढ़े) या बेडौल शरीर वाला तथा धन से रहित होता है।

अथ सुखभावस्थित चं. मं. बु. योगफलम्।।

चंद्रारसौम्याः सुवगा मनुष्यं कुर्वन्ति विद्यार्जनधर्मयुक्तम् ।।
प्रभूत्तसौख्यं विजितेंद्रियांर्थ पराङ्मुखं पापमतिं खलं च।।१६।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विद्या के उपार्जन करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, अत्यन्त सुखी, जितेन्द्रिय तथा सदैव पापबुद्धि एवं दुष्टता से दूर रहता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. वृ. योगफलम् ।।

चंद्रारजीवाः सुखगामनुष्यं कुर्वन्ति नानाविधसौख्यभाजम् ।।
नरेंद्रपूज्यं निजवंधुमान्यं जनैः समेंत च चतुष्पदाढयम्।।१७।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अनेकानेक सुखों का भोगी, राजाओं द्वारा पूजनीय (सम्मान प्राप्त) तथा अपने बंधु-बांधवों द्वारा माननीय, मनुष्यों से युक्त तथा चौपाये पशुओं से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. शु. योगफलम् ।।

चंद्रारशुक्राःसुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति पापं वहुक्लेशभाजम् ।।
संतानहीनं खलकर्मरक्तं सदाविहीनं खलु शत्रुसंघम्।।१८।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पापी, बहुत से क्लेशों को भोगने वाला, संतानविहीन, दुराचारी तथा हमेशा दुष्ट जन एवं शत्रु दल में रहित होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. श. योगफलम् ।।

चंद्रारसौराः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति तं पापविमुक्तकायम् ।।
शास्त्रानुरक्तं चतुरस्वभावं विशिष्टवाक्यार्जनतत्परं च।।१९।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पाप रहित शरीर वाला, शास्त्र में तत्पर, चतुर स्वभाव वाला, श्रेष्ठ वचन (सार्थक वाणी) बोलने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. बु. वृ. योगफलम् ।।

चंद्रज्ञजीवाः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति भूपालमरोग्यदेहम् ।।
गजाश्वपानैर्विविधैः समेतं वहुप्रभावं विजितारिपक्षम्।।२०।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बुध, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राजा के तुल्य तथा निरोगी शरीर वाला एवं हाथी, घोड़े आदि की सवारी से युक्त, बड़ा प्रभावशाली एवं शत्रुपक्ष को जीतने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. बु. शु. योगफलम् ।।

चंद्रज्ञशुक्राः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति भूरिप्रभुतासमेतम् ।।
प्रभूतजायार्जितशुभ्रकीर्तिं कृपासमेतं सुजनानुयुक्तम्।।२१।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, बुध, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रभुतासम्पन्न, बहुत सी नारियों को रखने वाला, शुभ कीर्ति वाला, कृपा युक्त एवं उत्तम लोगों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. बु. श. योगफलम् ।।

चंद्रज्ञसौराः सुखगा मनुष्य कुर्वन्ति विद्यार्जनतासमेतम् ।।
महाप्रभावं स्वकुलप्रधानं मातापितृभ्यां सततंप्रसक्तम्।।२२।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बुध, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, बुध, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विद्यावान एवं मनुष्यता से युक्त, महाप्रभावशाली, अपने वंश में प्रधान तथा माता-पिता को साथ रखने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. वृ. शु. योगफलम् ।।

चंद्रेज्यशुक्राः सुखभावगाः स्युर्नरं विनीतं प्रभुतासमेतम् ।।
सद्वेदविद्यावहुशास्त्ररक्तं नरेंद्रमान्यं धनधान्ययुक्तम्।।२३।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस मनुष्य के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नम्रता से युक्त एवं प्रभुतासम्पन्न, श्रेष्ठ वेद विद्या तथा अनेकानेक शास्त्रों का ज्ञाता, राजाओं द्वारा सम्मान प्राप्त तथा धन-धान्य से सम्पन्न रहता है।

अथ सुखभावस्थितचं. वृ. श. योगफलम् ।।

चंद्रेज्यसौराः सुखगा मनुष्यं नरःपटुः शौर्य्यगुणोपपन्नः ।।
रणेविदुग्धः परदारसक्तोमहाधनो काव्यकलाप्रवीणः।।२४।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति वीरता के कार्यों में निपुण, संग्राम (युद्ध) करने में होशियार, दूसरे की पत्नी में मन लगाने वाला, बहुमूल्य रत्नों से युक्त तथा काव्य की कलाओं में बुद्धिमान होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. शु. श. योगफलम् ।।

चंद्राऽसुरेज्यार्कसुताः सुखस्थानरं प्रकुर्वन्ति धृतिप्रधानम् ।।
सुबंधुजाभोगसदाभिरक्तं नरेंद्रमान्यं गजवाजियुक्तम्।।२५।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमानों में प्रधान एवं श्रेष्ठ भ्राताओं (भाइयों) द्वारा उत्पन्न किये गये भोगों में तत्पर, राजाओं द्वारा सम्मान प्राप्त तथा हाथी, घोड़ों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. बु. वृ. योगफलम् ।।

भोमज्ञजीवाः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति पुत्रार्जितसौख्यीभावम्।।
कृषीबलं लब्धयशः प्रतापं छिजाऽतिथीनां प्रियसाधुकृत्यम्।।२६।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बुध, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल, बुध, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति पुत्रों द्वारा कमाये गये धन का सुख भोगता है, तथा कृषि (खेती) कर्म कराने वाला एवं यश को प्राप्त करने वाला, प्रतापवान (पराक्रमी) एवं ब्राह्मण व अतिथियों का प्रिय तथा सत्पुरुषों जैसे कार्य करने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. बु. शु. योगफलम् ।।

भौमज्ञशुक्राः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति नानाविधसस्यभाजम्।।
चतुष्पदाढंच विनयप्रधानं वहुप्रभावं बहुबान्धवं च।।२७।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बुध, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में मंगल, बुध, शुक्र

स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नाना प्रकार के अनाजों (अन्न) का भोगी, चौपायें (पशुओं) से युक्त, नम्रता है प्रधान जिसकी, महाप्रभावशाली एवं बहुत से बंधु-बांधवों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. बु. श. योगफलम् ।।

भौमज्ञसौराः सुखगा मनुष्यं कुर्वन्ति तृष्णाधिकमिष्टपापम्।।
मित्रैर्विहीनं परदाररक्तं सुनिष्ठुरांगं मलिनं सदैव।।२८।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बुध, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में मंगल, बुध, शनि चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक तृष्णा व ला, पापी, मित्रों से रहित, दूसरे की नारी में मन लगाने वाला, कठोर देहवाला तथा सदै त्र मलिन चित्त (दुःखी मन) एवं बुरी भावना वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. वृ. शु. योगफलम् ।।

भौमाऽमरेज्याभृगुजाः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति सदासुशीलम्।।
तीर्थाश्रयं भूरियशः प्रतापं स्वबंधुवर्गेण युतं धनाढ्यम्।।२९।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सदैव श्रेष्ठ शील वाला व तीर्थों का आश्रय करने वाला, महाप्रतापी, बड़ा यशस्वी, अपने बंधु-बांधवों से युक्त एवं धनवान होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. वृ. श. योगफलम् ।।

भौमाऽमरेज्याऽर्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुशीलभावम्।।
स्वल्पायुषं स्वल्पसुखं प्रवीण प्रेष्यं नरेन्द्रस्यहितेरतं च।।३०।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में मंगल, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठशील वाला, अल्पायु, थोड़े सुख भोगने वाला तथा निपुण, जुआ खेलने वाला एवं राजा का हित करने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. शु. श. योगफलम् ।।

भौमाऽसुरेज्यार्कसुताः सुखस्थानरं प्रकुर्वन्ति खलस्वभावम्।।
पराङ्मुखं साधुजनस्य नित्यं प्रभूतकोपं परुषस्वभावम्।।३१।।

सुख भाव में स्थित मंगल, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल, शुक्र, शनि

स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नीच स्वभाव वाला व सज्जनों से विमुख, महाक्रोधी तथा निष्ठुर (निर्दयी) स्वभाव का होता है।

अथ सुखभावस्थितबु. वृ. शु. योगफलम् ।।

सौम्यामरेज्याभृगुजाः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति धराधिनाथम् ।।
हतारिसंघं सुतसौख्यभाजं ह्रासारिवर्ग प्रियदर्शनं च।।३२।।

सुख भाव में स्थित बुध, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में बुध, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा मनुष्य पृथ्वी का स्वामी, शत्रुपक्ष का नाशक व पुत्र के सुख को भोगने वाला, युद्ध में शत्रु पक्ष को हराने वाला एवं प्रियदर्शी होता है।

अथ सुखभावस्थितबु. वृ. श. योगफलम् ।।

सौम्याऽमरेज्याऽर्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति विवेकशीलम्।।
नरप्रधानं वहुकीर्तियुक्तं सद्दानकल्पं गुरुबंधुयुक्तम्।।३३।।

सुख भाव में स्थित बुध, वृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विवेकयुक्त शील वाला, मनुष्यों में प्रधान, महायशस्वी, दानी, गुरु एवं बंधु-बांधवों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितबु. शु. श. योगफलम् ।।

सौम्याऽसुरेज्याऽर्कसुताः सुखस्था नरंप्रकुर्वन्ति यशोनिधानम् ।।
दीक्षासमेतं गुरुकृत्यरक्तं शुभाननं मुख्यतमं जनानाम्।।३४।।

सुख भाव में स्थित बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में बुध, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति यश का निधान (खजाना) यानि महायशस्वी, दीक्षा सहित, बड़े कार्यों के करने में तत्पर, सुन्दर मुखाकृति वाला एवं मनुष्यों में प्रमुख होता है।

अथ सुखभावस्थितवृ. शु. श. योगफलम् ।।

जीवाऽसुरेज्याऽर्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति विधानदक्षम् ।।
वाणिज्यरक्तं क्षमयान्वितं च धर्मेरुचिं शौचयुतं सदैव।।३५।।

सुख भाव में स्थित बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विधान करने में निपुण, व्यापार करने में तत्पर क्षमायुक्त धर्म में प्रीति करने वाला तथा सदैव पवित्रता से युक्त होता है। □□□

११ सुख भाव में स्थित चार ग्रहों का योग फल

अथसुखभावस्थितसू. चं. मं. बु. योगफलम् ।।

सुख भाव में स्थित चार ग्रहों के योग के फल का वर्णन

रवीन्दुभौमेन्दुसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति विहीनसत्वम् ।।
पराभिभूतं निजवर्गमुक्तं व्यपेतलज्जां भयसंयुतं च।।१।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सत्व रहित, नष्ट अभिमान वाला, अपने बंधुवर्ग से रहित, बेशर्म एवं डरपोक होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. वृ. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमाऽमरपूजिताङ्गा नरं प्रकुर्वन्ति गतस्वभावम् ।।
विमुक्तशत्रुं घृणयाविहीनं चारित्रहीनं सुखवर्जिताङ्गम्।।२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति स्वभाव रहित एवं शत्रुविहीन, लज्जारहित, चरित्रविहीन तथा सुख रहित शरीर वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. शु. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमाऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
मित्रैर्विहीनं निधनं विरूपं परौर्जितं नष्टमतिं प्रगल्भम्।।३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मित्रों से रहित, धनरहित, भयंकर रूप वाला, शत्रुओं द्वारा जीता गया, नष्ट बुद्धि, प्रगल्भ होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमार्कसुता सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति घृणाविहीनम् ।।
मलिम्लुचं त्रासकरं जनानां सुदीर्घसूत्रं कलहप्रियं च।।४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति लज्जारहित, चोरी करने वाला, मनुष्यों को दुःख पहुँचाने वाला तथा कलह प्रिय होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. बु. वृ. योगफलम् ।।

रवीन्दु सौम्याऽमरपूजितांगाः सुखस्थिताःसंजनयंति मर्त्यम् ।।
तृष्णाधिकं कामनिपीड़ितांगं गुणैर्विहीनं कुकलत्रयुक्तम्।।५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक तृष्णा वाला एवं काम से पीड़ित शरीर वाला तथा गुणों से हीन, कुलटा स्त्री का स्वामी होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. बु. शु. योगफलम् ।।

रवीन्दुसौम्याऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताःसंजनयति मर्त्यम् ।।
विरूपमस्नेह विरोमशांगं विदेशसेवानुरतं सदैव।।६।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति कुरूप, स्नेह रहित व रोम रहित देहवाला, परदेश का भ्रमण करने में तत्पर रहता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. बु. श. योगफलम् ।।

सूर्येन्दुसौम्यार्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वंति हताशयं च ।।
चौरं नृशंसं परदारसक्तं सुनीचवृत्तिं कुधिया समेतम्।।७।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नष्ट आशय वाला, चोरी करने वाला, पापकर्म में तत्पर एवं नीच वृत्ति करने वाला तथा दुष्ट बुद्धि होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. वृ. शु. योगफलम् ।।

रवीन्दुजीवाऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताःसंजनयंति मर्त्यम् ।।

बहुप्रमादं कलहानुरक्तं कठोरवाक्यं विकृतं कुचैलम्।।८।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बड़े प्रमोद करने वाला, कलह करने में तत्पर, कठोर वाणी बोलनें वाला, बेडौल शरीर वाला एवं दुःखी मन वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. वृ. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुजीवाऽर्कसुताः सुखस्थानरं प्रकुर्वन्ति सुदीर्घसूत्रम् ।।
कुदेशवासं वनिताविरोधं वेश्यानुरक्तं च दयाविहीनम्।।९।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शनि हों, तो ऐसा व्यक्ति दीर्घसूत्री (आलसी) एवं दुष्ट देश में निवास करने वाला, अपनी पत्नी का विरोधी, वेश्याओं में मन लगाने वाला तथा निर्दयी होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. शु. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुशुक्रार्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुनीतिदक्षम् ।।
द्यूतप्रियं नष्टधनं विरूपं कुकर्मसेवा खलतावियुक्तम्।।१०।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ नीति में निपुण, जुआरी तथा धनहीन, कुरूप, खोटे कर्म की सेवा करने वाला तथा सदैव नीच प्रकृति का होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. बु. वृ. योगफलम् ।।

सूर्य्यारसौम्याऽमरपूजितांगाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
सुबुद्धियुक्तं प्रमदाविहीनं द्यूतप्रियं दुष्टजनेप्रसक्तम्।।११।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ बुद्धि वाला, स्त्री विहीन, जुआरी तथा दुष्ट लोगों में मन को लगाने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. बु. शु. योगफलम् ।।

सूर्य्यारसौम्याऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
क्षुच्छस्त्ररोगार्दितसर्वगात्रं वाताधिकं मन्युपरं सदैव।।१२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति भूख एवं शस्त्र रोग से पीड़ित सर्वदेह वाला, अधिक वात प्रकृति वाला, दीनता एवं यज्ञ में तत्पर रहता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. बु. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यारसौम्यार्कसुतासुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति विरूपनेत्रम् ।।
निशांधकं वा कृषिकर्मसक्तं वृथाश्रमं पापसमन्वितं च।।१३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विरूप नेत्रों वाला तथा रतौंधी के रोग से ग्रस्त, खेती कर्म कराने में मन लगाने वाला, व्यर्थ परिश्रम करने वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. वृ. शु. योगफलम् ।।

सूर्य्यारजीवाऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम् ।।
व्यपेतसत्यं निवलप्रधानं क्षमाविहीनं सतरां नयज्ञम्।।१४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सत्यता से रहित, निर्बलता में प्रधान, क्षमा रहित, निरंतर नीति का जानने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. वृ. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यारजीवार्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति गतस्वभावम् ।।
कुचैलमस्त्रिग्ध मनर्थयुक्तं द्विजाह्निकं पीड़ितमिष्टकोपम्।।१५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति स्वभाव रहित, मलिन चित्तवाला, रूखे शरीर वाला, अनर्थ में तत्पर, ब्राह्मणों जैसे नित्य कर्म करने वाला तथा मित्रों को कष्ट पहुँचाने वाला, महाक्रोधी होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. शु. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यारशुकार्कसुताःसुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति कलत्रभाजम् ।।
पराभिभूतं व्रणदग्धगात्रं व्याधिप्रयुक्तं खलतासमेतम्।।१६।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति कलत्र (पत्नी) का भोगी, शत्रुओं के कारण नष्ट अभिमान वाला तथा व्रजों (जख्मों) के कारण दग्ध शरीर वाला, दुष्ट प्रकृति वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. बु. वृ. शु. योगफलम् ।।

सूर्य्यज्ञजीवाऽसुरपूजितांगा नरं प्रकुर्वन्ति धनेनयुक्तम् ।।
चतुष्पदैर्वाहनभूरिसौख्यं पुरगृहग्रामसुखैः समेतम्।।१७।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति धन से युक्त, चौपायों (पशुओं) से तथा वाहनों से सुख पाने वाला, नगर, स्थान व ग्रामों के सुख को भोगने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. बु. वृ. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यज्ञजीवार्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति विमातृसौख्यम् ।।
स्वमातृहीनं प्रमदासुखाढ्यं भयेन युक्तं जनतासमेतम्।।१८।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बुध, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सौतेली माता का सुख भोगने वाला, अपनी माता से रहित तथा स्त्रियों के सुख से युक्त, भय से युक्त एवं पौरुष युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. बु. शु. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यज्ञशुक्राऽर्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति नरेंद्रमान्यम् ।।
महाधनं सौख्यगणैसमेतं प्रभावयुक्तं रुजपीड़िताँगम्।।१९।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, बुध, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राजाओं के द्वारा सम्मान प्राप्त, रत्नादि बहुमूल्य पदार्थों के सुख समूह से युक्त, महाप्रभावशाली, रोग से पीड़ित शरीर वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यामरेज्याऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
नरेश्वरं भूरिसुभृत्यसेव्यमुदारचेष्टां भयशत्रुहीनम्।।२०।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, बृहस्पति, शुक्र,

शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मनुष्यों का मालिक, बहुत से वफादार एवं श्रेष्ठ नौकरों से सेवा कराने वाला, उदार चेष्टा वाला, भय एवं शत्रुओं से रहित होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. बु. वृ. योगफलम् ।।

चन्द्रारसौम्याऽमरपूजितांगाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
सुबुद्धिशीलं गुणगर्वयुक्तं सदाथरित्रीधनधर्मयुक्तम्।।२१।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ बुद्धि वाला व श्रेष्ठ शील वाला, गुणों के गर्व सहित, सदैव धरती एवं धन तथा धर्म से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. बु. शु. योगफलम् ।।

चन्द्रारसौम्याऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
निःशंकितं सत्यदयासमेतं रतिः सदा कृष्णपदारविंदे।।२२।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस पुरुष के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा पुरुष शंका रहित, सत्यवादी एवं दयालु तथा सदैव भगवान श्रीकृष्ण के चरण कमलों में मन लगाने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थित चं. मं. बु. श. योगफलम् ।।

चंद्रारसौम्यार्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति हुताशभक्तम् ।।
क्षतार्दितांगं जननीरुजार्तं प्रभूतवित्तं जनवल्लभं च।।२३।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस पुरुष के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अग्नि का सेवक, जख्मों से पीड़ित शरीर वाला, उसकी माता रोग युक्त तथा वह बड़ा धनवान, पुरुषों का प्यारा होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. वृ. शु. योगफलम् ।।

चंद्रारजीवाऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताःसंजनयंति मर्त्यम् ।।
शिल्पज्ञमत्यद्भुताविक्रमाढ्यं दयाधनं साधुजनैः समेतम्।।२४।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति शिल्पविद्या का ज्ञाता, अद्भुत पराक्रम से युक्त, दया, धन एवं सत्यपुरुषों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. वृ. श. योगफलम् ।।

चंद्रारजीवार्कसुता सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति गुणाभिरामम् ।।
सत्साधुसेवारतलोकपूज्यं उदारचित्तं विनयान्वितं च।।२५।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ साधुओं की सेवा करने में मन लगाने वाला तथा संसार में पूज्य, उदार चित्त वाला तथा विनम्र स्वभाव वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. शु. श. योगफलम् ।।

चन्द्रारशुक्रार्क सुताःसुखस्था नरं प्रकुवन्ति रतिद्विजानाम् ।।
कृतज्ञमुत्साहितमिष्टधर्मं स्त्रीणांमभीष्टं प्रथित प्रभावम्।।२६।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति ब्राह्मणों से प्रीति करने वाला तथा कृतज्ञ (दूसरे का अहसान मानने वाला) उत्साह युक्त, धर्म-प्रेमी, स्त्रियों का प्यारा, अग्रणीय प्रभाववाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. बु. वृ. शु. योगफलम् ।।

चंद्रज्ञजीवाऽसुरपूजितांगाः सुखस्थिताःसंजनयंतिमर्त्यम् ।।
लज्जाधिकं कर्मपरं सुसत्यं तपोजने तत्परमानसं च।।२७।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बुध, वृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक लज्जावाला (शर्मीला), कर्म में तत्पर एवं सत्यता से युक्त, तपस्वी, पुरुषों में तत्पर चित्त वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. बु. वृ. श. योगफलम् ।।

चंद्रज्ञजीवार्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति हितं द्विजानाम्।।
परोपकारे निरतं प्रवीणं सत्कीर्तिभाजं जितवादसंघम।।२८।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस पुरुष के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति ब्राह्मणों का हित करने वाला, दूसरों की भलाई में तत्पर, बड़ा चतुर, श्रेष्ठ कीर्ति का भागी, वाद में विपक्षी को जीतने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. बु. शु. श. योगफलम् ।।

चंद्रज्ञशुक्राऽर्कसुता सुखस्था नरं प्रकुंर्वन्ति सुखप्रधानम् ।।
स्त्रीणामभीष्टं गतसर्वदोषं हतारिपक्षं नृपतेरभीष्टम्।।२९।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ सुख को भोगने वाला, नारियों का प्यारा तथा सर्वदोष रहित, शत्रु पक्ष का नाश करने वाला, राजाओं का प्रिय होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

चंद्रामरेज्याभृगुजार्कपुत्राः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
वाणिज्यसंगाप्तधनं समोजःप्रसिद्धसत्यं द्विजदेवभक्तम्।।३०।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, वृहस्पति, शुक्र-शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति व्यापार के सम्बन्ध से धन लाभ कमाने वाला, ओजस्वी के रूप में प्रसिद्ध, सत्यप्रिय ब्राह्मण एवं देवताओं का भक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. बु. वृ. शु. योगफलम् ।।

भौमज्ञजीवासुरपूजितांङ्गाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
घृणाधिकं कामविवर्जितांगं विशुद्धवाक्यं नयमानभाजम्।।३१।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक शर्मीला, कामकला रहित, सत्यवादी, नीति का जानने वाला तथा सम्मान का भागी होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. बु. वृ. श. योगफलम् ।।

भौमज्ञजीवार्कसुता सुखस्था नरं प्रकुंर्वन्ति रतिं गुरूणाम् ।।
गतव्ययं भूरिधनप्रधानं नरेंद्रमान्यं प्रभुतासमेतम्।।३२।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति गुरूजनों से प्रेम करने वाला, तथा खर्च न करने वाला, बड़ा धनवान एवं प्रधान, राजाओं के द्वारा सम्मान प्राप्त एवं ऐश्वर्य युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितमं.बु.शु.श. योगफलम् ।।

भौमज्ञशुक्रार्कसुताः सुखस्था नरं प्रकुंर्वन्ति प्रमोदयुक्तम् ।।

वेदांतविद्धर्मपरं प्रसिद्धं प्रज्ञाधिकं कामदभोजनाढ्यम्।।३३।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में मंगल, बुध, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा प्राणी वेदांत का ज्ञाता, आनन्द युक्त, धर्म में तत्पर एवं विश्व प्रसिद्ध, बड़ा बुद्धिमान, कामोत्तेजक भोज्य पदार्थों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

भौमाऽमरेज्याभृगुजाऽर्कपुत्राःसुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
अध्यात्मविद्यानिरतं विपापं यथार्थवाक्यं विदितं नरेंद्रम्।।३४।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि चौथे भाव में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अध्यात्म विद्या का ज्ञाता एवं पाप रहित, सत्यवादी, विश्वविदित राजेन्द्र होता है।

अथ सुखभावस्थितबु. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

सौम्यामरेज्याभृगुजार्कपुत्राः सुखस्थिताःसंजनयंति मर्त्यम् ।।
शास्त्रान्वित भूरिदयासमेतं परोपकारैर्विदितं सुवीर्यम्।।३५।।

सुख भाव में स्थित बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति शास्त्रों से युक्त, परम दयालु एवं परोपकारी के रूप में जाना जाने वाला तथा उच्च कोटि का वीर होता है।

❑❑❑

२० सुख भाव में स्थित पांच ग्रहों का योग फल

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. बु. वृ. योगफलम् ।।

सुख भाव में स्थित पांच ग्रहों के योग के फल का वर्णन

रवीन्दुभौमज्ञसुरेंद्रपूज्याः सुखस्थिताः दुष्कृतपापयुक्तम् ।।
गुह्योत्थरोगं निबलं कृतघ्न लंबोदरं ख्यातिविनं कठोरम्।।१।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति स्थित हों, तो ऐसा प्राणी महापापी, गुप्त रोगी, बलहीन एवं किसी का अहसान न मानने वाला, बड़े पेट वाला, प्रसिद्धता रहित तथा कठोर चित्त वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. बु. शु. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमज्ञसिताः सुखस्था नरं प्रकुर्वन्ति विनष्टधर्मम् ।।
नितांतकामीप्रचुरार्तिभाजं विश्वासहीनंचपलं प्रवीणम्।।२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति नष्ट धर्म तथा निरन्तर कामी एवं बड़े दुःखों का भागी, विश्वासरहित, चालाक एवं प्रवीण होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. बु. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमज्ञदिनेशपुत्राः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
प्रभूततृष्णा निजकार्यरक्तं दाक्षिण्यहीनं विधनं कुचैलम्।।३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत तृष्णा वाला, अपने कार्यों में तत्पर, एवं चालाकी रहित, धनहीन तथा मलिन चित्त वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. वृ. शु. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमाऽमरपूज्यशुक्राःसुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
कुचेष्टितांगं कृपणं कृतघ्न त्रपाविहीनं गतपौरुषं च।।४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बुरी चेष्टा के शरीर वाला, कंजूस व किसी का अहसान न मानने वाला, बेशर्म एवं निर्बल होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. वृ. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमाऽमरपूज्यमंदाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
सदाश्रमार्तं मलिनं विधर्मं कुवेषरूपं कृपणं कठोरम्।।५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति हमेशा परिश्रम से दुःखी, मलीनचित्त एवं धर्मविहीन, भयंकर वेश धारी, कंजूस एवं कठोर चित्त होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. मं. शु. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमाऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
महत्प्रभावं कलहानुरक्तं विदेशवासं विदितं सुभृत्यम्।।६।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति महा प्रभावशाली एवं कलह में आसक्त, परदेश में रहने वाला, विश्व-प्रसिद्ध तथा श्रेष्ठ एवं वफादार सेवकों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. बु. वृ. शु. योगफलम् ।।

रवीन्दुसौम्यामरपूज्यशुक्राः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
सुदीर्घसूत्रं वहुशत्रुसंधं प्रवीणपापं विगतप्रभावम्।।७।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति आलसी, बहुत शत्रु समूह वाला, बड़ा चतुर, पाप कर्म करने वाला एवं प्रभाव रहित होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. बु. वृ. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुसौम्यामरपूज्यमंदाः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।

प्रभूतदोषं क्षयरोगभाजं विनष्टकांतिं गतमित्रवर्गम्।।८।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत दोष युक्त क्षयरोग से युक्त एवं कांतिहीन, मित्र जनों से रहित होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. बु. शु. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुसौम्याऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
नानारिपुप्राप्तमहार्थनाशं विदेशवासं च दया विहीनम्।।९।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अनेक शत्रुओं वाला तथा लाभ किये बहुमूल्य रत्नों का नाश करने वाला व परदेश का भ्रमण करने वाला तथा निर्दयी होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. चं. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुजीवाऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम् ।।
धनेनहीनं वहुदुःखभाजं क्षतांगनीचं चपलस्वभावम्।।१०।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति धनहीन, बहुत से दुःखों को भोगने वाला, जख्मी शरीर वाला, नीच एवं चपल (चालाक) स्वभाव का होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. बु. वृ. शु. योगफलम् ।।

सूर्य्यारसौम्याऽमरपूज्यशुक्राः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
प्रभूतरोगं नृपपीड़ितांगं व्यपेतलज्जां व्यसनैःसमेतम्।।११।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत रोगी, राजा के कारण पीड़ित देह वाला तथा बेशर्म एवं दुर्व्यसनी होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. बु. वृ. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यारसौम्याऽमरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
दुःखान्वितं शोकरुजासमेतं पिशुनस्वभावं वहुदोषयुक्तम्।।१२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति एवं शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा प्राणी दुःखों से युक्त, शोक रूपी रोग से युक्त, धूर्तता करने वाला, अनेक दोषों से युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. बु. शु. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यारसौम्याऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
सत्येनहीनं नियमैर्विमुक्तं कुकर्मसक्तं सततं दरिद्रम्।।१३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सत्यविहीन, नियमों से हीन, कुकर्मों में मन लगाने वाला एवं निरन्तर दरिद्री होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. मं. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यारजीवाऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
विवेकहीनं ञलतासमेतं व्यपेतलज्जां धनधामयुक्तम्।।१४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति विवेकहीन, नीचप्रकृति वाला, बेशर्म एवं धन धाम युक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितसू. बु. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

सूर्य्यज्ञजीवाऽसुरपूज्यसौराःसुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
स्वधर्महीनं परधर्मसक्तं चरित्रहीनं वहुपानरक्तम्।।१५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अपने धर्म से रहित, पराये धर्म में आसक्त, एवं चरित्रहीन तथा अत्यधिक मदिरापान करने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. बु. वृ. शु. योगफलम् ।।

चंद्रारसौम्यामरपूज्यशुक्राः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
सुखाधिकं भूरिधनं प्रवीणं विद्याविहीनं जनवल्लभं च।।१६।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध,

बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त सुख भोगने वाला, बहुत धन वाला, बड़ा चतुर तथा विद्या रहित, पुरुषों का प्यारा होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. बु. वृ. श. योगफलम् ।।

चंद्रारसौम्याऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
दीक्षाव्रतस्त्रानपरं प्रधानं महागुणं नीतिविशारदं च।।१७।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दीक्षा व व्रत तथा स्नान करने में तत्पर, बड़ा गुणवान एवं नीति-निपुण होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. बु. शु. श. योगफलम् ।।

चंद्रारसौम्याऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताःसंजनयंति मर्त्यम् ।।
बहुप्रकाशं श्रुतिधर्मयुक्तं क्षमान्वितं देवगुरुप्रसक्तम्।।१८।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बड़े प्रकाश वाला, वेदों में धर्म में तत्पर, क्षमाशील, देवता एवं गुरुओं का भक्त होता है।

अथ सुखभावस्थितचं. मं. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

चंद्रारजीवाऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
कृपाधिकं शास्त्ररतं सुधर्म्मं वैदूर्यमुक्तामणिहेम सौख्यम्।।१९।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति अधिक कृपा करने वाला, शास्त्र में तत्पर, श्रेष्ठ धर्म का ज्ञाता, वैदूर्य्य, मोती एवं मणियों तथा स्वर्ण का सुख पाने वाला होता है।

अथ सुखभावस्थितचं.बु.वृ.शु.श. योगफलम् ।।

चंद्रज्ञजीवाऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
नरेन्द्रमान्यं विविधाप्तलाभं क्षमान्वितं शास्त्रविचक्षणं च।।२०।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति राजाओं से सम्मान प्राप्त, अनेक प्रकार के लाभ करने वाला, क्षमा सहित, शास्त्र में विचक्षण होता है।

अथ सुखभावस्थितमं. बु. वृ. शु. श. योगफलम् ।।

भौमज्ञजीवाऽसुरपूज्यसौराः सुखस्थिताःसंजनयंति मर्त्यम् ।।
विशिष्टवाक्यं गुरुतासमेतं शूरं कविं बांधवपूजितं च।।२१।।

सुख भाव में स्थित मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म की बेला में चौथे भाव में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति उत्तम वचन बोलने वाला तथा गौरवता युक्त, शूरवीर, काव्य का ज्ञाता, बंधु-बांधवों से पूजनीय होता है।

❑❑❑

२१

सुख भाव में स्थित छह ग्रहों का योग फल

सुखभाव में स्थित छह ग्रहों के योग के फल का वर्णन

अथ सुखभावस्थित सू. चं. मं. बु. वृ. शु. योगफलम्।।

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यशुक्राः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
कुचैल मस्निग्धगुरुप्रकोपं कन्याप्रसूतं व्यवहारदक्षम्।।१।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मलीन चित्त वाला, रूखे वर्णवाला तथा बड़ा क्रोध करने वाला एवं कन्या की सन्तान पैदा करने वाला तथा व्यापार में निपुण होता है।

अथ सुखभावस्थित सू. चं. मं. बु. वृ. श. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यसौराः सुखस्थिताः संजनयंति मर्त्यम् ।।
भूरिभ्रमं पापमतिं कृतघ्नं व्यपेतलज्जां प्रमदाविहीनम्।।२।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत भ्रम करने वाला, पापकर्म में मन लगाने वाला, दूसरे का अहसान न मानने वाला तथा बेशर्म एवं स्त्री रहित होता है।

अथ सुखभावस्थितसू.चं.मं.बु.शु.श. योगफलम् ।।

रवीन्दुभौमज्ञसितार्कपुत्राः सुखस्थिताः संजनयंतिमर्त्यम्।।
प्रियामिषं कुत्सितकर्मरक्तं खलात्मकं शास्त्रपराङ्मुखं च।।३।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल,

बुध, शुक्र, शनिश्चर स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति मांसप्रिय तथा खोटे कर्म करने में मन लगाने वाला, नीच प्रकृति वाला तथा शास्त्र से विमुख होता है।

अथ सुखभावस्थित सू. चं. मं. वृ. शु. श. योगफलम्।।

रवीन्दुभौमाऽमरपूज्यशुक्राः शनैश्चराः संजनयंति मर्त्यम्।।
सुखस्थिताः सत्यविहीननित्यं कुकर्मसेवार्जितदुःखसंघम्।।४।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस प्राणी के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति सत्यता रहित तथा नित्य प्रति कुकर्मों के द्वारा बहुत से दुःखों को भोगता है।

अथ सुखभावस्थित सू. चं. बु. वृ. शु. श. योगफलम्।।

सूर्य्येन्दुसौम्याऽमरपूज्यशुक्राः शनैश्चराः सौख्यगता विवीर्यम्।।
प्रियामिषं गानरतं प्रगल्भं विरूपदेहं नयनातिरोगम्।।५।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो वह व्यक्ति वीर्य रहित (निर्बल), मांसप्रिय, गान में तत्पर, प्रगल्भ एवं विरूपवान शरीर वाला तथा नेत्र रोग से पीड़ित होता है।

अथ सुखभावस्थित सू. मं. बु. वृ. शु. श. योगफलम्।।

सूर्य्यारसौम्यामरपूज्यशुक्राः शनैश्चराः संजनयंति मर्त्यम् ।।
सुधर्महीनं खलतासमेतं दयाविहीनं व्यभिचारसक्तम्।।६।।

सुख भाव में स्थित सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म के समय चौथे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा प्राणी श्रेष्ठ धर्म से विहीन तथा दुष्ट प्रकृति वाला, निर्दयी एवं व्यभिचार में तत्पर होता है।

अथ सुखभावस्थित चं. मं. बु. वृ. शु. श. योगफलम्।।

चंद्रारसौम्यामरपूज्यशुक्राः शनैश्चराः संजनयंति मर्त्यम्।।
वहुश्रियं तीर्थरतं श्रमाढयं गुणाधिकं सत्यदयासमेतम्।।७।।

सुख भाव में स्थित चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में चन्द्र, मंगल, बुध,

बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत लक्ष्मीवाला, तीर्थों में तत्पर, परिश्रमी, अधिक गुणी वाला, सत्यवादी एवं दुखवान होता है।

अथ सुखभावस्थितसप्तग्रहयोगफलम्।।

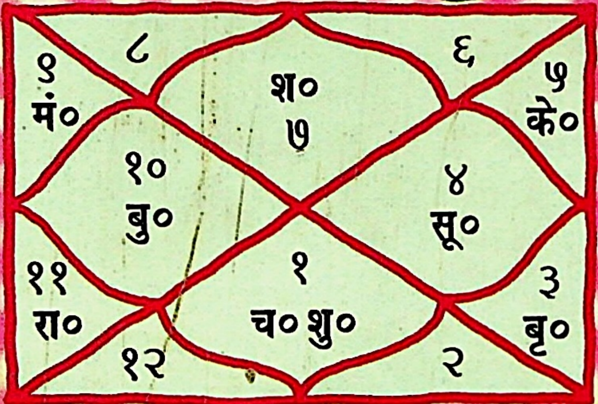
रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यशुक्राः शनैश्चराःसौख्यगता मनुष्यम्।।
सुधर्मसेव्यं वहुवाहनाढचं नरेंद्रमान्यं गुरुविप्रपूज्यम्।।८।।

सुख भाव स्थित सात ग्रहों के योग का फल

व्याख्या—जिस व्यक्ति के जन्म की बेला में चौथे भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ धर्म का सेवन करने वाला तथा बहुत से वाहनों वाला व राजाओं द्वारा सम्मान प्राप्त, गुरु तथा ब्राह्मणों की पूजा करने वाला होता है।

❑❑❑

ज्योतिष शास्त्रानुसार
द्वादशभाव
सिन्धु



A.H.W. DHEERAJ SERIES

प्रस्तुत ग्रंथ में बारहों राशियों के फल-विचार के साथ कब, कौन-सा समय किसके लिए धन-लाभ और सुखकारी होगा, इस बात की जानकारी जन्मकुण्डली के अनुसार दी गयी है। ग्रंथ की प्राचीन मौलिकता को यथावत् रखते हुए संस्कृत श्लोकों तथा जन्मकुण्डली को ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया गया है, परन्तु उसकी हिन्दी व्याख्या सरल, सहज और बोधगम्य शैली में इस प्रकार प्रस्तुत की गयी है कि ज्योतिष शास्त्र में जरा-सी भी रूचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति उसे सरलता से समझ सके।

धीरज पॉकेट बुक्स

40/-